

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
(अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है)

कुरआन सारांश [खुलासा कुरआन]

कुरआन के नाज़िल होने का उद्देश्य

कुरआन अल्लाह की किताब और एक महान चमत्कार है। यह लोगों के लिए एक मार्गदर्शन है और इंकार करने वालों के लिए एक चुनौती भी। कुरआन केवल मुसलमानों की धार्मिक पुस्तक नहीं है बल्कि यह संसार के तमाम इंसानों के लिए है। कुरआन के नुज़ूल का मक़सद अल्लाह ने खुद बयान किया है:

"ऐ नबी! यह एक किताब है, जिसको हमने तुम्हारी तरफ़ उतारा है, ताकि तुम लोगों को अंधेरो से निकालकर रौशनी में लाओ उनके रब की मेहरबानी से, उस खुदा के रास्ते पर जो ज़बरदस्त और अपनी ज़ात में आप महमूद [प्रशंसनीय] है" (सूरह 14 इब्राहीम आयत 01)

कुरआन दुनिया में सबसे ज़्यादा पढ़ी जाने वाली इकलौती किताब है लेकिन त्रासदी (Tragedy) यह है कि उपमहाद्वीप में इसकी तिलावत केवल सवाब के लिए होती है, समझने की बिल्कुल ज़रूरत नहीं महसूस की जाती कि ज़रा देखें, इसमें क्या लिखा है? और जीवन के लिए यह कितना अद्भुत मार्गदर्शक है, क्योंकि अल्लाह ने कुरआन को तमाम इंसानों की नसीहत के लिए बहुत सरल बना दिया है।

"जो कुरआन को समझना और उसपर अमल करना नहीं चाहते हक़ीक़त में उनका ईमान मुकम्मल ही नहीं है।" (सूरह 02 अल बक्ररह आयत 121)

इसलिए बार बार दिमाग़ पर लगे हुए ताले (lock) को खोलने, कुरआन को समझ कर पढ़ने और उसपर ग़ौर करने की दावत दी गई है।

"क्या वह कुरआन पर ग़ौर नहीं करते या उनके दिलों पर ताले पड़े हुए हैं" (सूरह 47 मुहम्मद आयत 24)

पारा (01) अलिफ़ लाम मीम

इस पारे में 2 हिस्से हैं:

- 1- सूरह (001) अल फ़ातिहा मुकम्मल
- 2- सूरह (002) अल बक्ररह का शुरुआती हिस्सा

सूरह (001) अल फ़ातिहा:

तरतीब के लिहाज़ से यह कुरआन की पहली और सबसे ज़्यादा पढ़ी जाने वाली सूरह है।

"फ़ातिहा" कहते हैं जिससे किसी मज़मून या किताब या किसी चीज़ की शुरूआत हो। दूसरे लफ़्ज़ों में इसे दीबाचा [भूमिका, प्रस्तावना] और आगाज़े-कलाम [प्राक्कथन] का समानार्थी कहा जा सकता है।

वास्तव में यह सूरह एक दुआ है जो अल्लाह ने हर उस बंदे को सिखाई है जो उसकी किताब को पढ़ना शुरू कर रहा हो। किताब के शुरू में इसको रखने का मतलब यह है कि अगर हक़ीक़त में इस किताब से फ़ायदा उठाना है तो पहले रब्बुल आलमीन (जगत-स्वामी) से यह दुआ करनी चाहिए।

सूरह अल फ़ातिहा के कई नाम हैं, जैसे उम्मुल कुरआन (कुरआन की मां) अस सबउल मसानी (बार बार पढ़ी जाने वाली सात आयात), अल कुरआन अल अज़ीम (अज़मत वाला कुरआन), अस शिफ़ा, अर रकीय: (दम) वगैरह

इस सूरह में बिस्मिल्लाह समेत कुल 7 आयतें हैं।

आयत 1 से 4 तक अल्लाह तबारक व तआला की तारीफ़ है और तारीफ़ करने की वजह यह बताई गई है कि वह,

- (1) तमाम दुनिया का पालनहार है।
- (2) रहमान और रहीम है।
- (3) बदले के दिन का मालिक है।

आयत 5 में एक इक़रार और वादा है जो एक इंसान अपने रब से करता है कि हम किसी और की नहीं बल्कि केवल तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद भी चाहते हैं।

आयत 6 से दुआ शुरू होती है "ऐ अल्लाह हमें सीधा रास्ता दिखा दे वह सीधा रास्ता जिस पर चल कर लोग इनआम (जन्नत) के हक़दार करार पाते हैं। और उन लोगों के रास्ते से महफूज़ रख जिन पर तेरा ग़ज़ब नाज़िल हुआ (जो नरक में जाएंगे) और जो गुमराह हो गए हैं"

गैरिल मगज़ूब से मुराद यहूदी (Jews) और ज़ाललीन से मुराद ईसाई (christians) हैं।

सूरह (002) अल बक्ररह:

आयत 01 से 141 तक में निम्नलिखि सात बातें हैं-

- (i) इंसान की अक़्साम
- (ii) कुरआन का चमत्कार (Miracle of Quran)
- (iii) आदम अलैहिस्सलाम की पैदाईश का वाक़या
- (iv) जादू से मोमिन का कोई वास्ता नहीं
- (v) बनी इस्राइल के हालात
- (vi) इब्राहिम अलैहिस्सलाम का वाक़या
- (vii) रसूलों में तफ़रीक़ मुमकिन नहीं

(i) इंसान की अक़्साम:

इंसान की तीन किस्में हैं- ईमान वाले, मुनाफ़िक़ीन (कपटी) और काफ़िर

ईमान वालों की पांच विशेषताएं: ईमान बिल ग़ैब, नमाज़ कायम करना, इनफ़ाक़ (अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना), आसमानी किताबों पर ईमान, परलोक पर विश्वास।

मुनाफ़िक़ीन की कई आदतों का ज़िक़्र आया है: झूठ, धोखा, गैर-चेतना (Non-consciousness) हार्दिक रोग, बेवकूफ़ीयाँ, अल्लाह के हुक्म के साथ मज़ाक़, फ़ितना व फ़साद, जिहालत, गुमराही और तज़बज़ुब।

काफ़िरों के बारे में बताया गया कि उनके दिलों और कानों पर मुहर लगी हुई है और आंखों पर पर्दा पड़ा हुआ है।

(ii) कुरआन का चमत्कार (Miracle of the Quran):

जिन सूरतों में कुरआन की अज़मत बयान हुई है उनके शुरू में "हुरूफ़े मुक़त्तेआत" हैं यह बताने के लिए कि इन्हीं हुरूफ़ से तुम्हारा कलाम भी बनता है और अल्लाह तबारक व तआला का भी,

मगर वहीं आयत 23 में ज़बरदस्त चैलेन्ज भी किया गया है कि

وَإِنْ كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا فَأْتُوا بِسُورَةٍ مِّثْلِهِ وَادْعُوا شُهَدَاءَكُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ

"और अगर तुम्हें इस मामले में शक है कि ये किताब जो हमने अपने बन्दे (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर उतारी है, तो ज़रा इस जैसी एक सूरह बना लाओ, और अल्लाह को छोड़कर अपने सारे हिमायतियों को भी बुला लो, अगर तुम सच्चे हो।"

और आयत 24 में वार्निंग भी दे दी है:

فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوا وَلَنْ تَفْعَلُوا

"चुनांचे अगर तुम ये नहीं कर सकते और हरगिज़ नहीं कर सकोगे।"

(iii) आदम अलैहिस्सलाम का वाकिआ:

अल्लाह तआला का आदम अलैहिस्सलाम को खलीफ़ा बनाना, फ़रिश्तों का इंसान को फ़सादी कहना, आदम अलैहिस्सलाम को अल्लाह की तरफ़ से इल्म अता किया जाना, फ़रिश्तों का इल्म ग़ैब होने का इक़्रार, आदम अलैहिस्सलाम को फ़रिश्तों और जिन्नों से सज्दा करवाना, इब्लीस का सज्दा करने से इंकार करना और मरदूद ठहरना, जन्नत में आदम व हव्वा का रहना, फिर इब्लीस के बहकावे में आना, ग़लती का एहसास, माफ़ी चाहना और माफ़ी का कुबूल होना और फिर इंसान को ज़मीन की खिलाफ़त अता होना। (31 से 39)

नोट: आदम और इब्लीस में फ़र्क़

- इब्लीस की पैदाईश आग से हुई और आदम की मिट्टी से।
- ग़लती दोनों ने की, इब्लीस ने सज्दा नहीं किया और अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी की। आदम ने उस पौदे का फल खा लिया जिसको खाने से उन्हें मना किया गया था।

लेकिन, इब्लीस ने अपनी ग़लती तस्लीम नहीं की और अकड़ गया उसकी अकड़ और घमंड ने उसे कहीं का नहीं छोड़ा दुनिया में भी बेइज़्ज़त हुआ और आखिरत में उसका ठिकाना जहन्नम है।

जबकि आदम ने भी इब्लीस के बहकावे में आ कर अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी की लेकिन ग़लती का फ़ौरन एहसास हुआ और अल्लाह से माफ़ी मांगी।

हम सब आदम की औलाद हैं इसलिये जाने अनजाने में ग़लतियां तो होगी लेकिन जैसे ही एहसास हो अपने रब्ब के हुज़ूर सच्चे दिल से तौबा करके हमें अपनी ग़लतियों पर माफ़ी मांगनी चाहिए।

(iv) जादू शैतानी काम है:

कुछ लोग जादू को सुलैमान अलैहिस्सलाम की तरफ़ मंसूब करते थे हालांकि जादू कुफ़्र और शैतान का काम है। अल्लाह की मर्ज़ी के बग़ैर कोई नुक़सान नहीं पहुंच सकता। जादू हारूत मारूत दो फ़रिश्ते सिखाते थे लेकिन जो सीखना चाहता उसे पहले मना करते हुए कहते थे कि देखो यह फ़ितना है। जो जादू करेगा आखिरत में उसके लिए कोई हिस्सा नहीं। (102)

(v) बनी इस्राईल के हालात:

बनी इस्राईल का अल्लाह की नेअमतों पर नाशुक्री करना और नबियों की नाफ़रमानी के कारण उन पर अल्लाह की फटकार। (40 से 122)

(vi) इब्राहीम अलैहिस्सलाम का वाकिआ:

इब्राहीम अलैहिस्सलाम का अपने बेटे के साथ मिल कर ख़ाना ए काबा की तामीर करना। इसे अम्र की जगह और यहां बसने वालों के लिए रिज़्क की फ़राहमी की दुआ और वह दुआ: “ऐ रब! इन लोगों में ख़ुद इन्हीं की क़ौम से एक ऐसा रसूल उठा, जो इन्हें तेरी आयतें सुनाए, इनको किताब और हिकमत की तालीम दे और इनकी ज़िन्दगियाँ सँवारे। तू बड़ा ज़बरदस्त और हिकमतवाला [तत्त्वदर्शी] है।” (124 से 129)

(vii) रसूलों में तफ़रीक़ मुमकिन नहीं:

दुनिया में जितने भी रसूल आए उनको बग़ैर कमी बेशी के अल्लाह का रसूल मानना भी ईमान का हिस्सा है। (आयत 136)

पारा (02) सयकूल

(i) तहवीले क़िब्ला:

मदीना की तरफ़ हिजरत करने के बाद 16 या 17 महीने तक बैतुल मुक़द्दस ही क़िब्ला रहा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़्वाहिश थी कि ख़ाना ए काबा क़िब्ला हो। अल्लाह तआला ने यह ख़्वाहिश पूरी कर दी। (144)

(ii) बीच की उम्मत:

यह उम्मत बीच की उम्मत है इसलिए यह लोगों पर गवाह है और रसूल इस उम्मत पर गवाह है। (143)

(iii) आयाते बिर और अबवाबे बिर:

لَيْسَ الْبِرُّ أَنْ تُولُّوا وُجُوهَكُمْ

(सूरह 2 अल बक्ररह आयत 177)

यह आयत **आयते बिर** कहलाती है। इसमें तमाम **अहकामात, अक्राएद, इबादात, मुआमिलात, मुआशिरत और अख़लाक़** का संक्षेप में वर्णन है। आगे अब्बाबे बिर में विस्तार पूर्वक वर्णन है-

- (1) सफ़ा मरवा की सई (हल्की दौड़)
- (2) हराम करार दिया गया मुर्दार, खून, सुअर का मांस, और जिस पर अल्लाह के इलावा किसी और के नाम लिया गया हो,
- (3) क़िसास (बदला),
- (4) वसीयत,
- (5) रोज़े,
- (6) एतेकाफ़,
- (7) हराम कमाई,
- (8) क़मरी (चांद की) तारीख़
- (9) जिहाद
- (10) हज्ज
- (11) इनफ़ाक़ फ़ी स बीलिल्लाह, (अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना)

- (12) हिजरत,
- (13) शराब और जूआ,
- (14) मुशरेकीन से निकाह,
- (15) हैज़ में संभोग,
- (16) ईला (बीवियों से अलग रहने की क़सम खाना),
- (17) तलाक़,
- (18) इदत,
- (19) रज़ाअत (दूध पिलाने की मुदत),
- (20) महर
- (21) हलाला,
- (22) इदत गुज़ारने वाली औरत को निकाह का पैग़ाम देना।

(iv) मोमिनों की आज़माइश और सब्र:

जन्नत की मंज़िल आसान नहीं है, ईमान लाने वाले यह न समझें कि उन्हें दुनिया में ऐसे ही छोड़ दिया जाएगा बल्कि खौफ़, भूख, जान, माल और और रोज़गार में घाटा डाल कर उन्हें आज़माया जाएगा। इनसे पहले के लोगों को ऐसी तकलीफ़ और परेशानियों में डाला गया, और उन्हें इस क़दर हिला मारा गया कि रसूल और उनके मानने वाले पुकार उठे कि अल्लाह की मदद कब आएगी? लेकिन उन संगीन हालात में जो सब्र और नमाज़ से मदद ले उसे जन्नत की खुशख़बरी भी सुनाई गई है और मोमिन तो वास्तव में वही है जो हर मुसीबत और ग़म पर **إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ (इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजेऊन = हम अल्लाह ही के हैं और अल्लाह ही की तरफ़ पलटकर जाना है)** पढ़ें। (153 से 156)

(v) कुरआन के पैग़ाम को छुपाने वालों पर अल्लाह की लानत:

"जो लोग अल्लाह की रौशन तालीमात [खुली शिक्षाओं] और हिदायतों को छुपाते हैं उन पर अल्लाह भी लानत करता है और सभी लानत करने वाले भी उनपर लानत करते हैं। इसके इलावा जो लोग मुख्तलिफ़ तरीक़ा से कुरआन की आयतों का व्यपार करते हैं वह अपने पेट में आग भरते हैं। (आयत 159 और 174)

(vi) अल्लाह अपने बंदों से बहुत क़रीब है:

मेरे बन्दे अगर तुमसे मेरे बारे में पूछें तो उन्हें बता दो कि मैं उनसे क़रीब ही हूँ। पुकारने वाला जब मुझे पुकारता है, मैं उसकी पुकार सुनता और जवाब देता हूँ। (आयत 186)

(vii) तलाक़ के नियम:

- ◆ तीन तलाक़ तीन बार में है। दो बार तीन मासिक धर्म के अंदर रुजूअ किया जा सकता है। तीसरी बार में रुजूअ की कोई गुंजाइश बाक़ी नहीं रहती,
- ◆ तलाक़ मासिक धर्म में नहीं बल्कि पाकी को हालत में दी जाय,
- ◆ एक बार में एक तलाक़ दी जाय,
- ◆ एक तलाक़ के बाद, 'इदत तीन मासिक धर्म होगी।
- ◆ पहले और दूसरे तलाक़ के बाद इदत के दौरान बीवी अपने शौहर के साथ ही रहेगी ताकि वह दोनों अगर चाहें तो रुजूअ कर सकें।
- ◆ रुजूअ करने में बीवी को किसी भी किस्म की तकलीफ़ पहुंचाना हरगिज़ मक़सूद न हो,
- ◆ अगर रुजूअ न किया हो तो भी इदत गुज़रने के बाद उन्हें अख़्तियार होगा कि वह चाहें तो दोनों दोबारा निकाह कर सकते हैं,
- ◆ तीन तलाक़ के बाद शौहर और बीवी दोनों का निकाह नहीं हो सकता जबतक कि उस औरत का निकाह किसी और मर्द से बग़ैर किसी शर्त के हो और वह तलाक़ दे दे या उसकी मृत्यु हो जाय तो फिर उस औरत का निकाह पहले शौहर से हो सकता है,
- ◆ एक बार में तीन तलाक़ देना वास्तव में शरीअत का मज़ाक़ उड़ाना है,
- ◆ हलाला का मौजूदा रायेज तरीक़ा हराम है क्योंकि शर्तिया शादी इस्लाम में हराम है। शर्तिया निकाह के कारण ही मुतआ हराम है।
- ◆ इदत के दौरान गर्भ को औरतें न छुपाएं क्योंकि अगर गर्भ है तो बच्चा पैदा होने के बाद ही किसी से निकाह हो सकता है। (227 से 232)

(viii) किस्सा तालूत:

बनी इस्राईल में इस क़दर बिगाड़ आ गया था कि एक नबी के अपने दरम्यान मौजूद होते हुए उनसे एक बादशाह बनाने की मांग कर रहे थे लेकिन जब तालूत को बादशाह बना दिया गया तो बहुत कम लोगों ने तालूत की बात मानी लेकिन उन्होंने तादाद में कम होने के बावजूद अल्लाह के हुक्म से जालूत के लश्कर को परास्त कर दिया। (246 से 251)।

(ix) और इब्राहीम की दुआ कुबूल हो गई:

इब्राहिम अलैहिस्सलाम ने जो दुआ की थी कि "ऐ रब! इन लोगों में खुद इन्हीं की क़ौम से एक ऐसा रसूल उठा" वह दुआ कुबूल हो गई और अल्लाह ने इस्माईल अलैहिस्सलाम की नस्ल कुरैश में उन्हीं में से मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आखिरी नबी बना कर भेजा।

"हमने तुम्हारे बीच खुद तुम में से एक रसूल भेजा, जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाता है, तुम्हारी जिंदगियों को सँवारता है, तुम्हें किताब और हिकमत [तत्वदर्शिता] की तालीम देता है, और तुम्हें वह बातें सिखाता है जो तुम न जानते थे" (आयत 151)

पारा (03) तिलकर रुसूल

इस पारे में 2 हिस्से हैं:

- [1] सूरह (002) अल बकरह का बाक़ी हिस्सा
- [2] सूरह [003] आले इमरान का इब्तेदाई हिस्सा

[1] सूरह (002) अल बकरह (बाक़ी हिस्सा)

(i) आयतुल कुर्सी:

आयतुल कुर्सी बड़ी फ़ज़ीलत वाली आयत है। (255) सोने से पहले आयतुल कुर्सी पढ़ने वाले की हिफ़ाज़त पूरी रात एक फ़रिश्ता करता रहता है और सुबह तक शैतान उसके पास नहीं आता। (बुखारी 2311) जो हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद जो आयतुल कुर्सी पढ़े उसे मौत के इलावा कोई चीज़ जन्नत में दाखिल होने से नहीं रोकती। (सही अल जामेउस सगीर 6464)

(ii) दीन में कोई ज़बरदस्ती नहीं:

जो चाहे ईमान लाकर नेक अमल करे और जो चाहे कुफ़र पर क़ायम रहे, किसी पर कोई ज़बरदस्ती नहीं है अलबत्ता उसके आमाल की बुनियाद पर आखिरत में फ़ैसला होगा। (256)

(iii) दो नबियों का बयान:

इब्राहीम अलैहिस्सलाम का नमरूद से मुबाहिसा और यह कह कर नमरूद को लाजवाब कर देना कि 'मेरा रब तो सूरज को पूरब से निकालता है तू ज़रा पश्चिम से निकाल दे' मुर्दा के जिंदा उठाये जाने के Observing की दुआ।

दूसरे **उज़ैर अलैहिस्सलाम** जिन्हें अल्लाह तआला ने सौ बरस तक मौत दे कर फिर जिंदा किया। (258, 259)

(iv) सदक़ा और ब्याज (सूद):

देखने में ऐसा महसूस होता है कि सदक़ा से माल कम होता है और सूद से बढ़ता है लेकिन सही बात यह है कि सदक़ा से माल बढ़ता है और सूद से घटता है। अल्लाह के रास्ते में खर्च करने का सवाब 700 गुना से भी ज़्यादा है 700 गुना तो दुनिया में भी अल्लाह देता है एक व्यक्ति एक दाना ज़मीन में डालता है उस दाने से पौधा निकलता है उसमें 7 बालियां होती हैं और हर बाली में 100 दाने होते हैं लेकिन उसके साथ शर्त यह है कि उसमें दिखावा, या एहसान जताने और तकलीफ़ पहुचाने की नीयत शामिल न हो वरना वह सवाब के बजाय अज़ाब बन जाएगा। इसके मुक़ाबले में ब्याज उतना ही धिनौना गुनाह है ब्याज में लिप्त लोग हक़ीक़त में अल्लाह और उसके रसूल से जंग का बिगुल बजा रहे हैं और जो अल्लाह और उसके रसूल से जंग करे उसका अंजाम कितना भयानक होगा। (261 से 279)

(v) कुरआन की सबसे लंबी आयत:

कुरआन की सबसे लंबी आयत तिजारत और क़र्ज़ के सिलसिले में है जिसमें क़र्ज़ लेने और देने के नियम बताए गए हैं। क़र्ज़ को लिखा जाय, दो गवाह बनाये जाएं, एक मुंशी हो वगैरह। (282, 283) [1]

[2] सूरह 003 आले इमरान का इब्तेदाई हिस्सा

(i) सूरह बक़रह से मुनासिबत (जोड़):

दोनों सूरतों में कुरआन की हक्क़ानियत (सच्चाई) और अहले किताब से ख़िताब है। सूरह बक़रह में ज़्यादा तर ख़िताब यहूदियों से है और आले इमरान में ज़्यादातर नसारा (ईसाइयों) से है।

(ii) आयाते मुहकमात और आयाते मुतशाबिहात:

कुरआन में दो तरह की आयतें हैं एक बिल्कुल स्पष्ट हैं जिनमें अहकाम हैं और इंसान को अमल करने की दावत दी गई है। नेक मोमिन का तअल्लुक उन्हीं आयतों से होता है। इसके इलावा कुछ आयतें मुतशाबिहात हैं जिसका इल्म अल्लाह को है। मुतशाबिहात भी मुहकम आयात होती जाती हैं जब अल्लाह उसको खोलना चाहता है। जिनके दिलों में टेढ़ होती है वह मुहकम को छोड़ कर केवल मुतशाबिहात के पीछे पड़े रहते हैं। (आयत 07)

(iii) अल्लाह तआला की कुदरत के चार वाकिआत:

- जंगे बद्र का वाकिआ जिसमें तीन सौ उन्नीस (319) मुसलमानों ने एक हज़ार कुफ़्रार को परास्त किया।
- मरयम अलैहास्सलाम के पास बग़ैर मौसम के फल पाए जाने का वाकिआ।
- ज़करिया अलैहिस्सलाम को बुढ़ापे में औलाद मिलने का वाकिआ।
- ईसा मसीह अलैहिस्सलाम का बग़ैर बाप के पैदा होना, मां की गोद में दूध पीने की हालत में ही बात करना और फिर जिंदा आसमान पर उठाए जाने का वाकिआ।

(iv) इस्लाम के इलावा कोई दीन कुबूल नहीं:

अल्लाह के नज़दीक असल दीन इस्लाम ही है जो भी कुफ़्र की हालत में दुनिया से जाएगा तो वह ज़मीन के बराबर सोना भी फ़िदिया में दे दे तब भी जहन्नम से नहीं बच सकता। (19, 85)

(v) अहले किताब (ईसाइयों) से मुनाज़िरा, मुबाहिला और मुफ़ाहिमा):

फिर जब तुम्हारे पास इल्म (कुरआन) आ चुका उसके बाद भी अगर कोई ईसाई (नसरांनी) ईसा के बारे में तुम से हुज्जत करे तो कहो कि (अच्छा मैदान में) आओ हम अपने बेटों को बुलाएं तुम अपने बेटों को, हम अपनी औरतों को बुलाएं और तुम अपनी औरतों को और हम अपनी जानों को बुलाएं और तुम अपनी जानों को उसके बाद हम सब मिलकर (अल्लाह की बारगाह में) गिड़गिड़ाएं और झूठों पर अल्लाह की लानत भेजें। (61)

(vi) पिछले अंबिया से अहद:

यह अहद पिछले अंबिया से भी था और उनकी उम्मतों से भी

(और ऐ रसूल वह वक्तत भी याद दिलाओ) जब अल्लाह ने पैग़म्बरों से इक़्रार लिया कि हम तुमको जो कुछ किताब और हिकमत (वग़ैरह) दें उसके बाद तुम्हारे पास कोई रसूल

आए और जो किताब तुम्हारे पास है उसकी तस्दीक़ करे तो (देखो) तुम ज़रूर उस पर ईमान लाना और ज़रूर उसकी मदद करना (और) अल्लाह ने फ़रमाया क्या तुमने इक़रार कर लिया तुमने मेरे (अहद का) बोझ उठा लिया सभी ने अर्ज़ किया कि हमने इक़रार किया इरशाद हुआ (अच्छा) तो आज के क़ौल व (क़रार) पर आपस में एक दूसरे के गवाह रहना और तुम्हारे साथ मैं भी गवाह हूँ। (81)

(vii) अल्लाह से मुहब्बत के लिए रसूल के पैरवी शर्त है:

ऐ नबी! लोगों से कह दो कि “अगर तुम हक़ीक़त में अल्लाह से मुहब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुमसे मुहब्बत करेगा और तुम्हारी ग़लतियों को माफ़ कर देगा। वह बड़ा माफ़ करने वाला और रहम करने वाला है।” (आयत 31)

(viii) मास्टर कुंजी (Master Key):

सूरह आले इमरान की आयत नंबर 64 मास्टर कुंजी (master key) की हैसियत रखती है जो लोगों के लिए एक चैलेंज भी है और अल्लाह के रास्ते की तरफ़ दावत का वसीला भी क्योंकि आज भी दुनिया में जितने धर्म पाए जाते हैं उनकी कोई न कोई मुक़द्दस किताब ज़रूर है और उसमें तौहीद (एक ईश्वरवाद) की ही शिक्षा दी गई है और अब भी मौजूद है। खुद सनातन धर्म या वैदिक धर्म में भी एक ईश्वरवाद की शिक्षा पूर्ण रूप से पाई जाती है।

वह master key है:

قُلْ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِّنْ دُونِ اللَّهِ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ

(ऐ रसूल) तुम कहो कि ऐ अहले किताब तुम ऐसी (ठिकाने की) बात पर तो आओ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान यकसौ (समान) है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें और किसी को उसका शरीक न बनाएं और अल्लाह के सिवा हममें से कोई किसी को अपना परवरदिगार न बनाए अगर इससे भी मुंह मोड़ें तो तुम गवाह रहना हम (अल्लाह के) फ़रमाबरदार हैं। (64)

पारा (04) लन तनालुल बिर

इस पारे में 2 हिस्से हैं:

- 1- सूरह आले इमरान का आखिरी हिस्सा
- 2- सूरह अन निसा का शुरुआती हिस्सा

सूरह (003) आले इमरान का आखिरी हिस्सा

(i) नेकी क्या है?

नेकी यह है कि दुनिया में जिस चीज़ से भी मुहब्बत और लगाव है (जान, माल व दौलत, शहरत, औलाद वगैरह) उसे अल्लाह की राह में बिला झिझक कुर्बान कर दिया जाय (92)

(ii) खाना ए काबा के फज़ाएल

यह सबसे पहली इबादतगाह है और इसमें स्पष्ट निशानियां हैं जैसे मुक़ामे इब्राहीम, जो हरम में दाखिल हो जाय उसे अम्र हासिल हो जाता है। (96)

(iii) फ़िरका बंदी हराम है

अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थाम लो, और फ़िरका में न बंटो। फ़िरकाबन्दी से बचने के लिए अल्लाह से डरो जैसा कि डरने का हक़ है, और पूरी ज़िंदगी डरते रहो यहां तक कि अंत भी ईमान पर ही हो। (103)

(iv) रसूल भी इंसान हैं और उन्हें भी मौत आती है

मुहम्मद इसके सिवा कुछ नहीं कि बस एक रसूल हैं, उनसे पहले और रसूल भी गुज़र चुके हैं। फिर क्या अगर उनका इंतिक़ाल हो जाए या उनको क़त्ल कर दिया जाए तो तुम लोग उलटे पाँव फिर जाओगे? याद रखो! जो उलटा फिरेगा, वह अल्लाह का कुछ नुक़सान नहीं करेगा। हाँ, जो अल्लाह के शुक्रगुज़ार बन्दे बनकर रहेंगे, उन्हें वह उसका बदला देगा। (144)

(v) भलाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना

हर दौर में मोमिनों का एक गिरोह रहा है जो भलाई की तरफ लोगों को बुलाता और बुराई से रोकता रहा है और इस दौर में मुसलमान ही वह बेहतरीन उम्मत हैं जिन्हें लोगों की समस्याओं के समाधान के लिए निकाला गया है। यह उम्मत भलाई का हुक्म देती है, बुराई से रोकती है और अल्लाह पर ईमान रखती है। लेकिन इस समय यह उम्मत अपने फ़रीजे से बहुत हद तक गाफ़िल है। (110)

(vi) 3 ग़ज़वे (लड़ाइयां)

- 1, ग़ज़वा ए बद्र,
- 2, ग़ज़वा ए उहद,
- 3 ग़ज़वा ए हुमराउल असद

(vii) अच्छे लोगों की पहचान

अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करना, गुस्सा पर कंट्रोल, लोगों को माफ़ कर देना।

(viii) कामयाबी के 4 उसूल

- 1, सब्र,
- 2, मुसाहिरा
- 3, मुराबिता,
- 4, तक्रवा

(ix) कुरआन ग़ौर व फ़िक्र की दावत देता है

जो लोग उठते, बैठते और लेटते, हर हाल में अल्लाह को याद करते हैं और ज़मीन और आसमानों की बनावट में ग़ौर-फ़िक्र करते हैं तो वह बेइख्तियार बोल उठते हैं, “हे पालनहार! ये सब कुछ तूने फुज़ूल और बेमक़सद नहीं बनाया है, (चुनांचे इंसान भी बेकार और बे मक़सद नहीं बनाया गया है) इसलिये ऐ रब! हमें जहन्नम के अज़ाब से बचा ले। (आयत 191)

सुरह (004) अन निसा का शुरुआती हिस्सा

(i) आलमी भाई चारे के पैगाम

दुनिया में जितने भी महिला पुरुष हैं सभी एक इंसान यानी आदम की संतान हैं। सभी बराबर हैं इसलिए कोई ऊंचा नीचा नहीं, (आयत 01)

(ii) बीवियों की तादाद

एक मर्द एक वक़्त में चार निकाह से ज़्यादा नहीं कर सकता, चार भी इस शर्त के साथ उनके हुक्क की अदायगी में इंसाफ़ से काम लिया जाय (03)

(iii) महर

औरतों के महर खुशी खुशी दो। (04)

(iv) यतीमों का हक़

यतीमों का माल उनके हवाले कर दिया जाय क्योंकि जो लोग यतीम का माल खाते हैं वह अपने पेट में जहन्नम की आग भरते हैं। (6, 10)

(v) विरासत का क़ानून

◆ वारेसीन की तीन क़िस्में हैं

1. ज़विल फ़ुरूज़
2. असबा,
3. ज़विल अरहाम

◆ विरासत की तक्कसीम मय्यत के क़र्ज़ और वसीयत की अदायगी के बाद होगी।

◆ मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर है।

◆ अगर मय्यत की वारिस दो या दो से ज़्यादा लड़कियां हों तो विरासत के दो तिहाई (2/3) हिस्से में वह सब शामिल होंगी।

◆ अगर मय्यत के सिर्फ़ एक ही लड़की हो तो वह विरासत के आधा (1/2) हिस्सा की हक़दार होगी।

- ◆ अगर मय्यत के औलाद हो तो मां को छठा (1/6) और बाप को छठा (1/6) हिस्सा मिलेगा।
- ◆ अगर मय्यत के औलाद न हो और भाई बहन भी न हों तो मां तिहाई (1/3) की हकदार होगी बाकी विरासत का मालिक बाप होगा।
- ◆ अगर मय्यत के भाई बहन हों तो मां छठा (1/6) हिस्से की हकदार होगी।
- ◆ अगर बीवी का इंतेक़ाल हो जाय और उसके औलाद हो तो शौहर को चौथाई (1/4) हिस्सा मिलेगा और अगर औलाद न हो तो आधा (1/2) हिस्सा होगा।
- ◆ अगर शौहर का इंतेक़ाल हो जाय और उसकी औलाद हो तो बीवी को आठवां (1/8) हिस्सा मिलेगा और अगर औलाद न हो तो चौथाई (1/4) हिस्सा होगा।
- ◆ **कलालह:** अगर मय्यत के केवल मां जाये एक भाई और एक बहन हों तो प्रत्येक को छठा (1/6) हिस्सा मिलेगा और अगर ज़्यादा हों तो तिहाई (1/3) में सभी शामिल होंगे।
- ◆ **कलालह:** अगर मय्यत के केवल सुल्बी (सगी) या अल्लाती (सौतेली) एक बहन हो तो उसे आधा (1/2) हिस्सा मिलेगा, अगर दो या दो से ज़्यादा बहनें हों तो दो तिहाई (2/3) में सभी शामिल होंगी। अगर मय्यत का एक ही भाई है तो वह कुल विरासत के वारिस होगा और अगर भाई बहन दोनों हों तो भाई का हिस्सा बहन से दुगना (double) होगा।
- ◆ गोद लिए हुए बच्चे (Adopted children) का विरासत में कोई हिस्सा नहीं होगा।
- ◆ यह अल्लाह के मुकर्रर किए हुए हिस्से हैं इसलिए विरासत के मामले में कोई कमी कमी बेशी न की जाय और न किसी को नुक़सान पहुंचाया जाय।
- ◆ किसी की विरासत की तक्रसीम उसकी मौत के बाद होगी पहले नहीं।
- ◆ यह अल्लाह की मुकर्रर की हुई हदें हैं जो अल्लाह और रसूल की नाफ़रमानी करेगा वह हमेशा जहन्नम में रहेगा। (11 से 14 और 176)
- ◆ अपनी मिल्कियत में से तिहाई (1/3) से ज़्यादा की वसीयत नहीं की जा सकती (सही मुस्लिम 4213, से 4215)
- ◆ वारिस को वसीयत नहीं की जा सकती। (सुनन अबी दाऊद 2870)
- ◆ काफ़िर का वारिस मोमिन और मोमिन का वारिस काफ़िर नहीं हो सकता। (सुनन अबी दाऊद 2911)

◆ रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फ़रमाया: मर्द और औरत दोनों साठ वर्ष तक अल्लाह की इताअत के काम में लगे रहते हैं। फिर जब उनकी मौत का वक़्त आता है तो वह ग़लत वसीयत करके वारिसों को नुक़सान पहुंचाते हैं तो उनके लिए जहन्नम वाजिब हो जाती है। शहर बिन हौशब कहते हैं: इस मौक़ा पर, अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने (सूरह अन निसा की आयत 11, 12) पढ़ी।

مَنْ بَعْدَ وَصِيَّةٍ يُوصَىٰ بِهَا أَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَارٍّ وَذَلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ "

"जबकि वसीयत जो की गई हो पूरी कर दी जाए और क़र्ज़ जो मरने वाले ने छोड़ा हो अदा कर दिया जाए, शर्त यह है कि किसी को नुक़सान न पहुंचाया जाय। यह अल्लाह का आदेश है और अल्लाह अलीम, और हलीम (सहनशील) है। यह अल्लाह की मुक़र्रर की हुई हदे हैं जो अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करेगा उसे अल्लाह ऐसी जन्नत में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी और वह हमेशा उसमें रहेगा, यही बड़ी कामयाबी है। (सुनन अबी दाऊद 2867/ किताबुल वसाया)

(vi) महरम औरतें

वह औरतें जिन से निकाह हराम है मां, बहन, बेटी, फूफी, खाला, भतीजी, भांजी, रज़ाई माएं (दूध पिलाने वाली), रज़ाई बहन (दूध शरीक बहनें), सास, सौतेली बेटियां, बहु। (23)

(vii) मौत से पहले पहले तौबा

तौबा मौत से पहले होनी चाहिए, मौत के समय कोई तौबा कुबूल नहीं होती और जो बग़ैर तौबा के मर जाए उसके लिए दर्दनाक अज़ाब है। (18)

पारा (05) वल मुहसनात

सूरह 004 अन निसा

(i) गुनाह कबीरा

1, नाहक़ किसी का माल खाना या लेना, 2, अल्लाह के साथ शिर्क करना 3, जादू 4, किसी का नाहक़ क़त्ल करना 5, यतीम का माल खाना, 6, सूद (ब्याज) खाना 7, लड़ाई के दिन पीठ दिखाना 8, भोली और पाकदामन औरत पर इल्ज़ाम लगाना, 9, मां बाप की नाफ़रमानी, 10, झूठी गवाही और झूठी क़सम। (आयत 29, 36 और 37, सही मुस्लिम 89, सही बुखारी 6870)

(ii) ख़ानादारी की तदाबीर

पहली हिदायत तो यह दी गई है कि मर्द ही औरत का मुखिया है, फिर नाफ़रमान बीवी से मुतअल्लिक़ मर्द को 3 तदबीरें बतायी गयीं।

(1) उसको समझाए और नसीहत करे।

(2) समझाने और नसीहत करने पर न मानने पर बिस्तर से अलग कर दे।

(3) अगर फिर भी न माने तो अगला क़दम उठाते हुए (हद में रहते हुए) उसकी पिटाई भी की जा सकती है।

अगर उसके बाद भी बात न बने तो एक फ़ैसला करने वाला एक मर्द की तरफ़ से और एक औरत की तरफ़ से हो और वह दोनों बनाव और सुधार की पूरी कोशिश करें। (34, 35)

(iii) अदल व एहसान और ईमानदारी (इंसाफ़ और भलाई)

अदल व एहसान और अमानत को उनके मालिकों के हवाले करने का हुक्म दिया गया ताकि इज्तेमाई (सामुहिक) ज़िन्दगी भी दुरुस्त हो सके। (58)

(iv) शिर्क सबसे भयानक जुर्म है

अल्लाह मुशरिक को कभी माफ़ नहीं करेगा उसके इलावा जिसे चाहेगा माफ़ कर देगा। (48, 116)

(v) अल्लाह और उसके रसूल की इताअत फ़र्ज़ है

ईमान वालो! इताअत करो अल्लाह की और इताअत करो रसूल की और उन लोगों की जो तुममें से हुक्म देने का अधिकार रखते हों। फिर अगर तुम्हारे बीच किसी मामले में झगड़ा (इख़्तेलाफ़) हो जाए तो उसे अल्लाह और रसूल की तरफ़ फेर दो। अगर तुम हक़ीक़त में अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो। काम करने का यही एक सही तरीक़ा है और अंजाम के लिहाज़ से भी बेहतर है। (59)

(vi) जिहाद (संघर्ष) की तर्गीब

जिहाद (हक़ के लिए लड़ने) की तर्गीब दी कि मौत से न डरो वह तो बिस्तर पे भी आ सकती है। न जिहाद में निकलना मौत को यक़ीनी बनाता है न ही घर में पड़े रहना ज़िन्दगी के सुरक्षा की ज़मानत है। (74, 78)

(vii) क़त्ल की सज़ाएं

क़त्ल की सज़ाएं बयान करते हुए बहुत सख़्त लहजा अख़्तियार किया गया है:

وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ خَالِدًا فِيهَا وَغَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهُ وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا

जो किसी मोमिन को जान बूझ कर क़त्ल कर दे तो उस का बदला जहन्नम है जिसमें वह हमेशा रहेगा। वह अल्लाह के ग़ज़ब और लानत का मुस्तहिक्क़ हुआ और अल्लाह ने उस के लिए बड़ा अज़ाब तैयार कर रखा है। (93)

(viii) हिजरत और सलातुल खौफ़

जिहाद की तर्गीब दी गई थी। इसमें हिजरत (migrate) करना पड़ता है। लेकिन नमाज़ किसी भी हालत में माफ़ नहीं है यहां तक कि जिहाद व हिजरत के दौरान भी नहीं। चूंकि उस वक़्त नमाज़ पढ़ते हुए दुश्मन का खौफ़ होता है। इसलिए सलातुल खौफ़ कहा गया है। (101, 102)

(ix) एक वाक़िआ

क़बीला ए बनी ज़फ़र के एक आदमी तअमा या बशीर बिन उबैरिक्क़ ने एक अंसारी की ज़िरह (कवच) चुरा ली और जब उसकी छान-बीन शुरू हुई तो चोरी का माल एक यहूदी के यहां रख दिया। ज़िरह के मालिक ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के सामने मसअला रखा और तअमा पर अपना शक़ ज़ाहिर किया। मगर तअमा और उसके भाई-बन्धुओं और

क्रबीला ए बनी-ज़फ़र के बहुत से लोगों ने आपस में साँठ गाँठ करके उस यहूदी पर इल्ज़ाम थोप दिया। यहूदी से पूछा गया तो उसने कहा कि मुझे इसकी कोई जानकारी नहीं। लेकिन ये लोग तअमा की हिमायत में ज़ोर व शोर से वकालत करते रहे और कहा कि यह शरारती यहूदी, जो हक़ और अल्लाह के रसूल का इंकार करने वाला है, इसकी बात का क्या भरोसा, बात हमारी तस्लीम की जानी चाहिए क्योंकि हम मुसलमान हैं। करीब था कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) इस मुक़द्दमे की ज़ाहिरी रिपोर्ट को देखते हुए उस यहूदी के खिलाफ़ फ़ैसला कर देते और मुक़द्दमा करने वाले ज़िरह के मालिक को भी बनी-उबैरिक्क पर इल्ज़ाम लगाने पर ख़बरदार करते। इतने में वही नाज़िल हुई और मामले की सारी हक़ीक़त खोल दी गई। (105, सुनन तिर्मिज़ी 3036)

(x) मोमिन के लिए ईमान लाना जरूरी है

- (1) अल्लाह पर
- (2) रसूल पर
- (3) आसमानी किताबों पर
- (4) फरिश्तों पर
- (5) आख़िरत के दिन पर।

(xi) मुनाफ़िक्कीन की मुज़म्मत और उनकी सिफ़ात

मुनाफ़िक्कीन की मुज़म्मत करके मुसलमानों को उन से होशियार किया गया है और उनका अंजाम बताया गया है कि वह जहन्नम के सबसे निचले हिस्से में होंगे। मुनाफ़िक्कीन की निम्नलिखित विशेषताएं गिनाई गई हैं:

- (i) वह मोमिनों को छोड़कर दूसरों को दोस्त बनाते हैं कि समाज में उन्हें इज़्ज़त हासिल हो हालांकि इज़्ज़त तो अल्लाह के हाथ में है।
- (ii) वह खुद को धोखा देते हैं हालांकि वह समझते हैं कि अल्लाह को धोखा दे रहे हैं।
- (iii) नमाज़ के लिए जाते हैं तो कसमसाते हुए।
- (iv) दिखावे के लिए नमाज़ पढ़ते हैं।
- (v) अल्लाह को कम ही याद करते हैं।

(vi) तज़बजुब (शक) में पड़े रहते हैं यानी सही और ग़लत की तमीज़ नहीं होती।

(142 से 145)

पारा (06) ला युहिबुल्लाहु

इस पारे में 2 हिस्से हैं

- (1) सूरह अन निसा का आखिरी हिस्सा
- (2) सूरह अल मायेदा का इब्तिदाई हिस्सा

(1) सूरह (004) अन निसा का आखिरी हिस्सा

(i) बुराई की तशहीर

किसी को खुल्लमखुल्ला बुरा कहने से मना किया गया मगर मज़लूम को अख़्तियार दिया गया कि ज़ालिम के जुल्म को लोगों के सामने बयान करे ताकि वह जुल्म से तौबा कर ले। (148, 149)

(ii) तमाम अंबिया पर ईमान

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनसे पहले जितने भी अंबिया गुज़रे हैं उन पर ईमान लाना लाज़मी (अनिवार्य) क़रार दिया गया। उन के दरमियान किसी तरह की तफ़रीक़ (किसी को मानने और किसी को न मानने) को कुफ़्र क़रार दिया गया। (152)

(iii) यहूद की मुज़म्मत और उनके मुतालिबात

यहूदियों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुतालिबा (demand) किया कि हमारी तरफ़ आसमान से कोई तहरीर नाज़िल क्यों नहीं की जाती तो अल्लाह ने आप सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम को यक्रीन दहानी कराई कि यह आप से पहले भी इस से बड़ी बड़ी demand रख चुके हैं कि जबतक हम अल्लाह को अपनी आँखों से न देख लें ईमान नहीं लायेंगे। चुनांचे उनके फ़ालतू सवालात और सरकशी की वजह से उन पर बिजली का अज़ाब नाज़िल हुआ। (153)

(iv) यहूदियों के करतूत

- (i) अल्लाह से किये हुए अहद (इकरार) को तोड़ा,
 - (ii) मरयम अलैहस्सलाम पर बुहतान ए अज़ीम (झूठा इल्ज़ाम) बांधा,
 - (iii) ईसा अलैहस्सलाम को क़त्ल करने की कोशिश (मगर अल्लाह तआला ने ईसा अलैहस्सलाम की हिफ़ाज़त फ़रमाई और उन्हें आसमान पर उठा लिया)
 - (iv) अल्लाह की आयात का इंकार और अंबिया का क़त्ल,
 - (v) सूद का लेन देन (जैसा आज हम में कुछ लोग हलाल कर रहे हैं और लंबे चौड़े दलाएल दे रहे हैं)
 - (vi) लोगों का माल बातिल तरीक़े से खाना,
 - (vii) दीन में ख़ुराफ़ात व बिदआत दाख़िल करना,
 - (viii) सब्त का क़ानून तोड़ना
 - (ix) कोई बात ख़ुद कह कर उसे अल्लाह की तरफ़ मंसूब करना। (x) बहुत सी हराम चीज़ों को जाएज़ ठहरा लेना।
 - (xi) जब जंग पर जाने के लिए आदेश दिया गया तो कहा "तुम जाओ और तुम्हारा ख़ुदा जाए हम तो यहीं बैठे रहेंगे"।
- (155 से 161)

(v) ईमान के तक्राज़े

पुख़्ता इल्म वाले, ईमानदार और अज़्र ए अज़ीम के मुस्तहिक्क अल्लाह के नज़दीक वह लोग हैं जो कुछ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल हुआ और जो कुछ पहले नाज़िल हुआ उस पर ईमान लाते हैं, नमाज़ और ज़कात की पाबंदी करते हैं और आख़िरत पर यक्रीन रखते हैं। (162)

(vi) खुशखबरी सुनाने वाले और डराने वाले

दुनिया में कोई क्रौम ऐसी नहीं गुज़री जहाँ नबी न भेजे गए हों ताकि कोई हुज्जत बाकी न रह जाय। सभी रसूल सच्चे और हक़ बात लेकर आए थे। वह खुशखबरी सुनाने वाले और डराने वाले थे। और जिस तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर वही (ﷺ) नाज़िल हुई वैसे ही नूह, इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक़ और दूसरे अंबिया पर नाज़िल हुई। आख़िर में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह तआला ने तसल्ली दी है कि जो नहीं मानता न माने। जो कुछ आप पर नाज़िल किया गया है वह अल्लाह ने अपने इल्म से नाज़िल किया है उसपर फ़रिश्ते भी गवाह हैं और वैसे तो केवल अल्लाह की गवाही काफ़ी है। (163 से 166)

(vii) नसारा (christian) की मुज़म्मत

ईसाई ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में गुलु (Extreme) का शिकार हो (हद से आगे बढ़) कर अक़्रीदा ए तस्लीस (Trinity = तीन खुदा) के मानने वाले हो गए। हालांकि हक़ीक़त यह है कि अल्लाह एक है, उस का कोई बेटा नहीं है वह इन तमाम ऐब से پاک है। (171)

(viii) तकब्बुर (घमंड) करने वाले

जो लोग घमंड करते हैं और अल्लाह की गुलामी को अपने लिए शर्म का बाइस समझते हैं और उसके रास्ते से रोकते हैं तो एक वक्त आएगा जब अल्लाह सब को अपने सामने घेर लेगा। ईमान लाने वाले, नेक अमल करने वाले, और घमंड से बचने वालों के लिए बेहतरीन बदले का अल्लाह ने वादा किया है। (167 से 170)

सूरह (005) अल माएदा का इब्तिदाई हिस्सा

(i) वादा व इक़रार को पूरा करना (أوفوا بالعقود)

तमाम् जाएज़ वादा और इक़रार जो मोमिन और रब के दरमियान हो या इंसान और इंसान के बीच हो उसे पूरा करना ज़रूरी है। (01)

(ii) नेकी और भलाई में सहयोग

नेकी के काम में एक दूसरे की मदद करना और गुनाह व दुश्मनी के कामों में किसी भी प्रकार का सहयोग न देने का आदेश। (02)

(iii) हराम चीज़ों से परहेज़

- (1) बहने वाला खून,
- (2) सुअर का मांस,
- (3) मुर्दार,
- (4) जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो,
- (5) जो गला घुटने से मरा हो,
- (6) चोट खाकर मरा हुआ
- (7) जो ऊंची जगह से गिरकर मर जाए,
- (8) जो किसी के सींग मारने से मरा हो,
- (9) जिसे दरिन्दे ने फाड़ खाया हो,
- (10) जो जानवर बुतों (के थान) पर चढ़ा कर ज़िबह किया जाए,
- (11) जिसपर कुरआ अंदाज़ी के तीरों की फ़ाल निकाली गई हो।

(आयत 03)

(iv) दीन मुकम्मल हो गया

कुरआन की आखिरी नाज़िल होने वाली आयत है, अब दीन में कमी ज़्यादाती की कोई गुजाइश नहीं है। "आज मैंने तुम्हारे दीन (जीवन विधान) को तुम्हारे लिए मुकम्मल कर दिया है और अपनी नेअमत तुम पर पूरी कर दी है और तुम्हारे लिए इस्लाम को तुम्हारे दीन की हैसियत से पसंद कर लिया है" (03)

(v) तहारत (पाकी)

- (1) वुज़ू, तयम्मूम, और गुस्ल के मसाएल,
- (2) अद्ल व इंसाफ का हुक्म,
- (3) दुश्मनों के साथ भी नाइंसाफी न हो।

(06 से 08)

(vi) हाबील और क़ाबील का वाक़िआ

क़ाबील ने हाबील को क़त्ल कर दिया, क़िसास में क़ाबील भी क़त्ल हुआ। (27 से 31)

(vii) यहूदियों और ईसाइयों की मुज़म्मत

यहूदियों और ईसाइयों की तरफ़ से जो सरकशियाँ हुईं उनपर नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तसल्ली दी गई, मुसलमानों को उनसे दोस्ती रखने से मना किया गया, और दाऊद व ईसा अलैहिमस्सलाम की ज़बानी उन पर लानत का तज़क़िरा हुआ। और आख़िर में बताया गया कि यह तुम्हारे ख़तरनाक दुश्मन हैं और उनमें से ज़्यादा तर अल्लाह की इताअत से निकल चुके हैं। (57, 78)

(viii) अहले किताब की गुमराही

अहले किताब की गुमराही का सबब यह बयान किया गया है कि उनकी सोसायटी में गुनाह होते रहे लेकिन कोई रोकने वाला न था इसलिए हमारा फ़र्ज़ है कि **امر بالمعروف ونهى عن المنکر** (भलाई का हुक्म देने और बुराई से रोकने) का फ़रीज़ा अंजाम दें और हर हाल में दामने मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से वाबस्ता हो जाएं। (59 से 63)

(ix) बदला और क़िसास

बदला और क़िसास इंसान का तक्काज़ा है। इसके द्वारा समाज में फैले हुए जुल्म और ना बराबरी को दूर किया जा सकता है। इसीलिए इसे ज़िन्दगी कहा गया है। (45)

(x) चोरी की सज़ा

चोर का हाथ काटने का आदेश यदि चोर एक मिक्क़दार से ज़्यादा चोरी करे। लेकिन पहले उसकी चोरी के बारे में पता लगाया जाएगा कि उसने चोरी क्यों की? (38)

(xi) यहूदियों, ईसाइयों, मुनाफ़िक्कीन, और अहले ईमान की सिफ़ात का बयान

चारों की अनेक सिफ़ात गिनाई गई हैं और उनके अंजाम के बारे में सूचना दी गई है।

(xii) इस्लाम का आलमगीर (universal) शांति पैगाम

जिसने किसी इंसान को नाहक क़त्ल किया या ज़मीन में फ़साद फैलाया, उसने मानो तमाम इंसानों को क़त्ल कर दिया और जिसने किसी की जान बचाई उसने मानो तमाम इंसानों को ज़िन्दगी बरख़्श दी। (32)

पारा-(07) व इज़ा समेऊ

इस पारे में 2 हिस्से हैं

- (1) सूरह अल माएदा का बाक़ी हिस्सा
- (2) सूरह अल अनआम का इब्तेदाई हिस्सा

सूरह (005) अल माएदा का बाक़ी हिस्सा

(i) हब्शा (Ethiopia) के नसारा की तारीफ़

जब उनके सामने कुरआन की तिलावत की जाती है तो उसे सुन कर उनकी आंखों से आंसु टपकने लगते हैं और वह पुकार उठते हैं कि "ऐ पालनहार हमारा नाम भी गवाहों में लिख ले। (83)

(ii) हलाल व हराम के मसाएल

- ◆ हर चीज़ को खुद से हलाल या हराम न बनाओ। (87)
- ◆ क़सम तोड़ने पर कफ़़ारा है 10 मिस्कीनों को एक दिन का खाना खिलाना या एक गुलाम आज़ाद करना अगर यह न हो सके तो फिर 3 दिन लगातार रोज़े रखना है। (89)

◆ शराब, जुआ, आस्ताने (वह जगह जहां अल्लाह के इलावा किसी और के नाम पर चढ़ावे चढ़ाये जाते हैं) और पांसा हराम हैं। इस के ज़रिए शैतान लोगों के दिलों में नफ़रत और दुश्मनी पैदा करता है। (90)

◆ अहराम की हालत में पानी के जानवर का शिकार हलाल और खुशकी के जावर का शिकार हराम है और उसका कफ़ारा उसी जैसा एक जानवर देना होगा या कुछ मिसकीनों को खाना खिलाना होगा या उसी मिक़दार में रोज़े रखने होंगे। (94, 95)

◆ हरम में दाख़िल होने वालों के लिए अमन है। (97)

◆ चार किस्म के जानवर मुशरिकों ने हराम कर रखे थे। बहीरा, सायबा, वसीला, हाम (103)

बहीरा: उस ऊंटनी को कहा जाता था जो पांच बार बच्चे दे चुकी हो और आखिरी बार नर बच्चा हुआ हो उसका कान चीर कर आज़ाद छोड़ दिया जाता था, फिर न कोई उसपर सवारी करता, न दूध पिया जाता, न उसे ज़बह किया जाता, उसे हक़ था कि जहाँ चाहे चरे जिस घाट से चाहे पानी पिये।

सायबा: उस ऊंट या ऊंटनी को कहते थे जिसे किसी मन्नत के पूरा होने या किसी बीमारी से ठीक होने या किसी ख़तरा से बच जाने पर शुकराने के लिए आज़ाद कर दिया जाता था, या फिर अगर किसी ऊंटनी ने दस मादा बच्चे जन्म दिए हों उसे भी आज़ाद छोड़ दिया जाता था।

वसीला: अगर बकरी का पहला बच्चा नर होता तो वह खुदाओं के नाम पर ज़बह कर दिया जाता था और अगर वह पहली बार मादा जन्म देती तो उसे अपने लिए रख लिया जाता था लेकिन अगर नर और मादा एक साथ जन्म लेते तो मादा को अपने पास रख लेते और नर को ज़बह करने के बजाय ऐसे ही खुदाओं के नाम पर छोड़ दिया जाता था।

हाम: अगर किसी ऊंट का पोता सवारी के क़ाबिल हो जाता तो उस बूढ़े ऊंट को आज़ाद छोड़ दिया जाता था और अगर किसी ऊंट के नुत्फ़े से दस बच्चे पैदा हो जाते तो उसे भी आज़ादी मिल जाती थी।

(iii) ईसा अलैहिस्सलाम को दी गई निशानियां

◆ पाक रूह,

◆ दूध पीने के दिनों में बात करना,

- ◆ किताब व हिकमत की तालीम,
- ◆ मिट्टी के परिंदे बनाना और उसमें फूंक मारने पर चिड़िया बनकर उड़ जाना,
- ◆ अंधे और कोढ़ी को अच्छा करना,
- ◆ मुर्दों को जिंदा करना।

(110)

(iv) क़यामत का तज़किरा और ईसा अलैहिस्सलाम

क़यामत के दिन अंबिया कराम अलैहिमुस्सलाम से पूछा जाएगा कि जब तुमने हमारा पैग़ाम लोगों को पहुँचाया तो तम्हें क्या जवाब मिला था? इसी तरह ईसा अलैहिस्सलाम पर किये गए एहसानात को अल्लाह तआला याद दिलायेगा। इन्हीं एहसानात में माएदा (दस्तरख़्वान) वाला वाक़िआ भी है कि "हवारियों ने ईसा अलैहिस्सलाम से अर्ज़ किया कि ऐ मरियम के बेटे ईसा! क्या आप का खुदा इस पर क़ादिर है कि हम पर आसमान से (नेअमत भरा) एक ख़्वान नाज़िल फ़रमाए" (112)

इन एहसानात को याद दिला कर अल्लाह तआला पूछेगा "ऐ ईसा क्या तुमने उनसे कहा था कि तुझे और तेरी मां को माबूद बना लिया जाय। जवाब में ईसा अलैहिस्सलाम कहेंगे " तू पाक है। मैं ऐसी बात कैसे कह सकता हूँ जिसका मुझे हक़ नहीं पहुँचता।

مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنْ أَعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ

मैंने तो वही कहा था जिसका मुझे हुक्म दिया गया था कि अल्लाह की इबादत करो जो मेरा रब भी और तुम्हारा रब भी। (116, 117)

(2) सूरह (006) अल अनआम का इब्तेदाई हिस्सा

(i) तौहीद

इस सूरह में अल्लाह की हम्द व सना (प्रशंसा) और अज़मत व किबरियाई (बड़ाई) और मुख़लिफ़ ख़ुसूसियात का तफ़्सीली बयान है। जैसे:

- ◆ शिर्क का इन्कार और तौहीद (एक ईश्वरवाद) की दावत,

◆ जाहलियत के उन अंधविश्वास को रद्द किया गया जिनमे लोग पड़े हुए थे।

(ii) रिसालत

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तसल्ली के लिए अल्लाह तआला ने 18 अंबिया का ज़िक्र किया है

- 1- नूह अलैहिस्सलाम,
- 2- इब्राहीम अलैहिस्सलाम,
- 3- लूत अलैहिस्सलाम,
- 4- इस्माईल अलैहिस्सलाम,
- 5- इस्हाक़ अलैहिस्सलाम,
- 6- याकूब अलैहिस्सलाम,
- 7- यूसुफ़ अलैहिस्सलाम,
- 8- अय्यूब अलैहिस्सलाम,
- 9- मूसा अलैहिस्सलाम,
- 10- हारून अलैहिस्सलाम,
- 11- दाऊद अलैहिस्सलाम,
- 12- सुलैमान अलैहिस्सलाम,
- 13- इल्यास अलैहिस्सलाम,
- 14- यसा अलैहिस्सलाम,
- 15- यूनस अलैहिस्सलाम,
- 16- ज़करिया अलैहिस्सलाम,
- 17- यहया अलैहिस्सलाम,

18- ईसा अलैहिस्सलाम

(iii) आखिरत

1. आखिरत के रोज़ अल्लाह तमाम इंसानों को इकठ्ठा करेगा (12)
2. आखिरत के दिन किसी इंसान से अगर अज़ाब टाल दिया गया तो यह उस पर अल्लाह की बड़ी मेहरबानी होगी। (16)
3. आखिरत के दिन मुशरिकों से मुतालिबा किया जाएगा कि कहां हैं वह जिन्हें तुम अल्लाह के साथ शरीक करते थे। (22)
4. आखिरत के दिन जहन्नमी यह चाहेंगे कि काश उन्हें दुनिया में लौटा दिया जाता ताकि वह अपने रब की आयात को अब नहीं झुठलाते और ईमान वाले बन जाते। (27)
5. दुनिया की ज़िंदगी तो बस खेल तमाशा है और आखिरत की ज़िंदगी ही असल, बेहतर और ठोस है। (32)

(iv) अल्लाह की अज़मत की निशानियां

दाने और गुठली को फाड़ कर पौधे निकालना, ज़िंदगी और मौत देना, चांद और सूरज का हिसाब, समुद्र और ख़ुशकी में रहनुमाई के लिए सितारों की तखलीक, एक जान से इंसान को पैदा करना और मां के पेट से ज़मीन पर आने तक के मरहले से गुज़ारना, आसमान से पानी नाज़िल करना, हर किसिम के पेड़ पौधे उगाना, हरे भरे खेत और तह पर तह चढ़े हुए दाने, खजूर के शगुफ़ों से फलों के गुच्छे के गुच्छे निकालना, अंगूर, जैतून और अनार के बाग़ जो एक दूसरे से मिलते जुलते भी हैं और अलग-अलग भी, दरख्तों में फल आने और उनके पकने की कैफ़ियत, ज़मीन और आसमान की ईजाद। (95 से 99)

(v) इंसान अल्लाह को इस दुनिया में नहीं देख सकता

"निगाहें उसको नहीं पा सकतीं और वह निगाहों को पा लेता है, वह निहायत बारीक बीं [सूक्ष्मदर्शी] और बाख़बर है"। (103)

(vi) मुशरेकीन के बनाये हुए ख़ुदाओं को गाली न दी जाए

"ऐ ईमान वालो यह लोग अल्लाह के सिवा जिनको पुकारते हैं उन्हें गालियाँ न दो, कहीं ऐसा न हो कि यह शिर्क से आगे बढ़कर जिहालत की बिना पर अल्लाह को गालियाँ देने लगें"। (108)

पारा (08) व लौ अन्नना

इस पारे में दो हिस्से हैं-

- (1) सूरह अल अनआम का बाक़ी हिस्सा
- (2) सूरह अल आराफ़ का इब्तेदाई हिस्सा

(1) सूरह (006) अल अनआम का बाक़ी हिस्सा

(i) रसूल की तसल्ली

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तसल्ली दी गई है, "ये लोग ज़िद्दी हैं, वह चमत्कार (miracle معجزه) की मांग करते रहते हैं हालांकि अगर मुर्दे भी अपनी क़बरो से उठ कर उनसे बात करें या संसार की तमाम वस्तुएं उनकी आँखों के सामने हाज़िर कर दी जाएं फिर भी यह विश्वास नहीं करेंगे, कुरआन के चमत्कार ईमान रखने वालों के लिए काफ़ी है। (111)

(ii) मुशरिकों के अजीब रस्मो रिवाज

◆ यह लोग चौपायों में अल्लाह तआला और जिन को अल्लाह के साथ साझी ठहराते हैं उनका हिस्सा अलग अलग कर देते हैं, शरीको के हिस्से को अल्लाह तआला के हिस्से में मिलने नहीं देते लेकिन अगर अल्लाह तआला का हिस्सा शरीकों के हिस्से में मिल जाता तो इसे बुरा नहीं समझते थे। (135)

◆ मुफ़लिसी या आर यानी बे इज़्ज़ती के खौफ़ से लड़कियों को जान से मार देते थे। (आयत 136) (आज की मुहज़ज़ब (Civilized) दुनिया में औरत के पेट में ही मार दिया जाता जाता है। केवल अपने देश भारत में हर साल लगभग दस लाख से ज़्यादा बच्चियों का गर्भपात (Abortion) के ज़रिए क़त्ल कर दिया जाता है)

◆ चौपायों की तीन क्रिस्में कर रखी थीं

एक वह जो उनके पेशवाओं (उलेमाओं) के लिए मख़सूस थीं। दूसरे वह जिनपर सवारी करना मना था। तीसरे वह जिन्हें अल्लाह के इलावा किसी और के नाम पर ज़बह किया जाता था। (138)

◆ जानवर के पेट में जो बच्चा पल रहा होता उसे अपने लिए हलाल और औरतों के लिए हराम समझते लेकिन अगर वह बच्चा मुर्दा होता तो मर्द व औरत दोनों उसमें शरीक होते। (139)

(iii) अल्लाह तआला की नेअमतें

ज़िंदगी, खेतियाँ, चौपाए, बागात (खुजूर, अनार, जैतून वगैरह) (141)

(iv) सिराते मुस्तकीम क्या है?

- 1, अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराया जाय।
- 2, माता पिता के साथ अच्छा बरताव (व्यवहार)
- 3, अपने बच्चों को गरीबी और मुफ़लिसी के डर से क़त्ल न किया जाय।
- 4, बुरे और गंदे कामों से दूर रहें।
- 5, किसी को नाहक़ क़त्ल न किया जाय।
- 6, यतीमों का मॉल न खाया जाए न दबाया जाय।
- 7, नाप तौल में पूरा पूरा इंसान के साथ दिया और लिया जाय।
- 8, बात करते वक़्त इंसान से काम लिया जाय।
- 9, अल्लाह तआला के हक़ को पूरा किया जाय।
- 10, सिराते मुस्तकीम पर ही चला जाय।

(151, 152)

(v) कुछ अहम बातें

(i) शैतान इन्सान और जिन्नात दोनों में होते हैं और जो नबी का विरोध करे वह शैतान है। (112, 113)

(ii) जिन जानवरों पर ज़बह करते हुए अल्लाह का नाम लिया जाय सिर्फ़ उसे ही खाना हलाल है 119 से 121)

(iii) खुले छुपे दोनों गुनाहों से बचें (151)

(iv) अल्लाह जिसे हिदायत देना चाहता है उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। (125)

(2) सूरह (007) अल आराफ़ के इब्तेदाई हिस्सा

(i) अल्लाह तआला की नेअमतें

कुरआन हक़ीम, ज़मीन में खलीफ़ा बनाया जाना, इंसानों की तखलीक़, इन्सानों को अफ़ज़ल तरीन मख़लूक़ बनाया कि इसे फ़रिश्तों से सज्दा कराया। (2, 10, 11)

(ii) चार वाणियां (निदायें)

इस सूरह में अल्लाह तआला ने इंसान को **चार बार या बनी आदम** يَا بَنِي آدَم कह कर पुकारा है। पहली तीन वाणियों में **लिबास का ज़िक्र** है। इस मामले में अल्लाह तआला ने **मुश्रीकीन (बहुदेववादियों) के नंगे होकर तवाफ़** करने के दावे को अस्वीकार कर दिया कि ऐसा तरीक़ा खुद उनका अपना ईजाद किया हुआ है। चौथी वाणी में **रसूल की पैरवी करने का हुक्म** दिया गया है। (26 से 28, 35)

(iii) हराम करार दिया गया

1. चौराहे या बंद कमरे में की गई गंदगी और बेशर्मी,
2. गुनाह,
3. सरकशी,
4. शिर्क

(आयत 33)

(iv) अल्लाह तआला की कुदरत के दलाएल (तर्क)

- 1, बुलंद व बाला (बहुत ऊंचाई वाला) आसमान.

- 2, अति विशाल और अति व्यापक अर्श.
 - 3, रात और दिन का निज़ाम (system)
 - 4, चमकते सूरज, चांद और सितारे.
 - 5, हवाएं और बादल.
 - 6, मुर्दा पड़ी हुई ज़मीन का दोबारा ज़िंदा होना,
 - 7, ज़मीन से निकलने वाली वनस्पति (Plants)
- (54 से 57)

(v) पांच क़ौमों के क़िस्से

1. क़ौमे नूह,
2. क़ौमे आद,
3. क़ौमे समूद,
4. क़ौमे लूत,
5. क़ौमे शुऐब

अंबिया के क़िस्से बयान करने की हिकमतें

1, रसूल को तसल्ली, 2, अच्छे और बुरे लोगों के अंजाम की ख़बर देना, 3, अल्लाह के यहां देर है अंधेर नहीं, 4, रिसालत की दलील कि उम्मी होने के बावजूद पिछली क़ौमों के वाक़यात बताना, 5, इंसान को इबरत व नसीहत कि कहीं आदम की तरह नस्ले आदम को भी शैतान न बहका दे।

(vi) झुठलाने वाले जन्नत में नहीं जा सकेंगे

यक़ीन जानो, जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुठलाया और उनके मुक़ाबले में सरकशी की, उनके लिये आसमान के दरवाज़े हरगिज़ न खोले जाएंगे। उनका जन्नत में जाना उतना ही नामुमकिन है जितना सूर्य के नाके से ऊंट का गुज़रना। मुजरिमों को हमारे यहाँ ऐसा ही बदला मिला करता है। (आयत 40)

(vii) जन्नतियों और जहन्नमियों की बात चीत (dialogue)

जन्नती कहेंगे: "क्या तुमने अल्लाह के वादों पर यक़ीन आ गया?",

जहन्नमी इक़रार करेंगे।

जहन्नमी खाना पानी मांगेंगे,

मगर जन्नती जवाब में उनसे कहेंगे: "अल्लाह ने काफ़िरो पर अपनी नेअमत हराम कर दी है।"

(आयत 44)

(viii) आराफ़ वाले

जन्नतियों और जहन्नमियों के बीच कुछ लोग होंगे जो असहाबुल-आराफ़ (आराफ़वाले) के नाम से पुकारे जाएंगे। यह वह लोग होंगे जिनकी ज़िन्दगी का न तो सकारात्मक पहलू ही इतना ताक़तवर होगा कि जन्नत में दाख़िल हो सकें और न नकारात्मक पहलू ही ऐसा ख़राब होगा कि दोज़ख़ में झोंक दिये जाएं लेकिन उन्हें इस बात की खुशी होगी कि वह जहन्नम से बच गए। बाद में वह जन्नत में दाख़िल कर दिए जाएंगे। (आयत 46 से 48)

पारा (09) व क़ालल मलऊ

इस पारे में दो हिस्से हैं-

- (1) सूरह अल आराफ़ का बाक़ी हिस्सा
- (2) सूरह अल अनफ़ाल का इब्तेदाई हिस्सा

(1) सूरह (007) अल आराफ़ का बाक़ी हिस्सा

(i) मूसा अलैहिस्सलाम का तफ़सीली बयान

(103 से 171)

(ii) अल्लाह की बंदगी का तमाम इंसानी रूहों ने इक़रार किया था

ऐ रसूल ! लोगों को याद दिलाओ वह वक़्त जबकि तुम्हारे परवरदिगार ने बनी-आदम की पीठों से उनकी नस्ल को निकाला था और उन्हें खुद उनके ऊपर गवाह बनाते हुए पूछा था, **“क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ?”** सभी ने इक़रार किया था, **“ज़रूर आप ही हमारे रब हैं, हम इस पर गवाही देते हैं।”** यह हमने इसलिये किया कि कहीं तुम क़यामत के दिन यह न कह दो कि “हम तो इस बात से बेख़बर थे। (172)

(iii) बलअम बिन बाऊरा का वाकिआ

وَأَثَلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ الَّذِي آتَيْنَاهُ آيَاتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاتَّبَعَهُ الشَّيْطَانُ فَكَانَ مِنَ الْغَاوِينَ

और (ऐ रसूल) तुम उन लोगों को उस शख्स का हाल पढ़ कर सुना दो जिसे हमने अपनी आयतें अता की थी फिर वह उनसे निकल भागा तो शैतान ने उसका पीछा पकड़ा और आखिरकार वह गुमराह हो गया।

"कहा जाता है कि बलअम बिन बाऊरा बनी इस्राईल का एक बड़ा आलिम था जिसकी दुआएं कुबूल होती थीं उसे अल्लाह तआला की किसी किताब (तौरात) का इल्म मिला फिर उसने उनका इंकार कर दिया और उन आयात को पीठ पीछे फेंक दिया, फिर शैतान उसके पीछे लग गया और वह गुमराह हो गया और बनी इस्राईल को छोड़ कर क़ौमे जब्बारीन से जा मिला। फिर औन के डूबने के बाद जब मूसा अलैहिस्सलाम (कुछ लोगों के मुताबिक़ यूशा बिन नून) बनी इस्राईल का लश्कर लेकर फ़लीस्तीन पर हमला करने के लिए निकले तो वहां के बादशाह ने बलअम से उनके खिलाफ़ हिलाकत की बददुआ करने को कहा, बलअम ने बददुआ करने से इंकार कर दिया मगर जब बादशाह ने रिश्त पेश की तो वह बददुआ पर राज़ी हो गया लेकिन जब बददुआ करनी शुरू की तो बददुआ के बजाय मूसा अलैहिस्सलाम के हक़ में दुआ के अल्फ़ाज़ निकलने लगे। जब बार बार बददुआ करने पर ऐसा ही हुआ तो उसने बादशाह के लोगों को मशविरा दिया कि वह अपनी हसीन और ख़ूबसूरत लड़कियों को तैयार करें और बनी इस्राईल के खेमों में भेज दें ताकि वह बदकारी में मुब्तिला हो जाएं। बदकारी की विशेषता यह है कि वह अल्लाह के क़हर और अज़ाब की वजह बनती है इसलिए बनी इस्राईल अपनी बदकारी के कारण अल्लाह की मदद से महरूम हो जाएंगे। चुनाँचे ऐसा ही हुआ। बनी इस्राईल फ़ितने में पड़ गए जिसकी वजह से उनमें अज़ाब के तौर पर ताऊन (Plague) की बीमारी फूट पड़ी। यह

वाक़िआ बाईबल में अध्याय 22 से 25 में बयान हुआ है" अल्लाह तआला ने बलअम बिन बाऊरा की मिसाल कुत्ते से दी है"

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَاهُ بِهَا وَلَكِنَّهُ أَخْلَدَ إِلَى الْأَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوَاهُ ۖ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ الْكَلْبِ إِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ أَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ۚ ذَٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا ۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ

और अगर हम चाहते तो हम उसे उन्हीं आयतों की बदौलत बुलन्द मरतबा कर देते मगर वह तो खुद ही पस्ती (नीचे) की तरफ़ झुक पड़ा और अपनी नफ़रसानी ख्वाहिश का गुलाम बन बैठा तो उसकी मिसाल उस कुत्ते की सी है कि अगर उसको धुत्कार दो तो भी ज़बान निकाले रहे और उसको छोड़ दो तो भी ज़बान निकाले रहे ये मिसाल उन लोगों की है जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया (ऐ रसूल) ये क़िस्से उन लोगों से बयान कर दो ताकि ये लोग खुद भी गौर करें। (175, 176)

(iv) बनी इस्राईल की सरकशी

एक बुत बनाने मुतालिबा, बछड़े को माबूद बनाना, सब्त के क़ानून की अवहेलना (नाफ़रमानी) (138, 148, 163)

(v) बनी इस्राईल पर एहसानात

फ़िरऔन की गुलामी से निकालना, पानी के बारह चश्मे जारी करना, बादल का साया, मन व सलवा, उन्हीं में से एक रसूल। (141, 160)

(vi) बनी इस्राईल के तीन गिरोह

बनी इस्राईल तीन गिरोह में तक्रसीम हो गए थे। (1) जो अल्लाह के हुक्म की खुल्लमखुल्ला ख़िलाफ़ वर्ज़ी करते थे। (2) जो अल्लाह के हुक्म को मानते थे लेकिन पहले गिरोह को समझाते नहीं थे बल्कि ख़ामोशी से तमाशा देखते थे और तीसरे गिरोह से कहते थे कि इन्हें क्यों नसीहत करते हो जिन्हें अल्लाह अज़ाब देने वाला है (3) जो अल्लाह के आदेश का पालन करते थे और पहले गिरोह के सुधार के लिए मुमकिन कोशिश करते थे। यही तीसरा गिरोह महफूज़ रहा बाक़ी दो अज़ाब का शिकार हो गए। (164 से 166)

(vii) जानवरों से गए गुज़रे लोग

"जो लोग आंख, कान और दिल रखने के बावजूद हिदायत कुबूल नहीं करते वह चौपाए से भी बदतर हैं"। (आयत 179)

(viii) क़यामत का इल्म किसी को नहीं

(ऐ रसूल) तुमसे लोग क़यामत के बारे में पूछा करते हैं कि कहीं उसका कोई वक़्त भी तय है तुम कह दो कि उसका इल्म तो केवल पररवदिगार ही को है वही उसके निर्धारित समय पर उसे ज़ाहिर कर देगा। वह आसमान व ज़मीन में एक कठिन वक़्त होगा वह तुम्हारे पास अचानक आ जाएगी तुमसे लोग इस तरह पूछते हैं गोया तुम उनसे ब खूबी वाकिफ़ हो तुम (साफ़) कह दो कि उसका इल्म केवल अल्लाह ही को है मगर ज़्यादातर लोग नहीं जानते। (आयत 187)

(ix) कुरआन की अज़मत

إِذَا قُرِئَ الْقُرْآنُ فَاسْتَمِعُوا لَهُ وَأَنْصِتُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ

जब कुरआन पढ़ा जाय तो इन्तेहाई खमोशी (pin drop silent) से सुनो। (204)

(x) कुछ अहम बातें

- ◆ अल्लाह के अच्छे नाम हैं उन नामों से पुकारा जाय। (180)
- ◆ जब दिल में कोई शैतानी वस वसा आये तो फ़ौरन अउजुबिल्लाहि मिनश शैतानिर रजीम ज़रूर पढ़ा जाय। (200)
- ◆ अपने रब का ज़िक्र आजिज़ी के साथ सुबह - शाम, खुले छुपे, सोते बैठते यानी हर हालत में किया जाय। (59)
- ◆ माफ़ी का तरीक़ा अपनाया जाय, भलाई का हुक्म दिया जाय और बुराई से रोका जाय। (199)

(2) सूरह (008) अल अनफ़ाल का इब्तेदाई हिस्सा

(i) माले ग़नीमत का हुक्म

गज़वा ए बद्र में जो माले ग़नीमत हाथ आया था उसकी तक्रसीम को लेकर मुसलमानों में कुछ इख़्तेलाफ़ हो गया था चुनाँचे उसके बारे में फ़रमाया गया

قُلِ الْأَنْفَالُ لِلَّهِ وَالرَّسُولِ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَصْلِحُوا ذَاتَ بَيْنِكُمْ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ

कह दो माले गनीमत अल्लाह और उसके रसूल का हक़ है अल्लाह से डरो, और अपने आपसी तअल्लुक्रात की इस्लाह (सुधार) करो और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो। (1)

(ii) मोमिन की पांच सिफ़ात (खूबियाँ)

- 1, अल्लाह के ज़िक्र से उनके दिल चमक उठते हैं।
- 2, कुरआन की तिलावत (समझ कर पढ़ने) से उनका ईमान बढ़ता है।
- 3, तवक्कुल (अल्लाह पर ही भरोसा)।
- 4, नमाज़ कायम करना.
- 5, सख़ावत (जिसमें दिखावा न हो)

(2, 3)

(iii) ग़ज़वा ए बदर में अल्लाह की मदद

हज़ार फ़रिश्तों से, मोमिनीन के दिल से एक ऊँघ के जरिए ख़ौफ़ निकाल दिया गया, बारिश से मुसलमानों को फ़ायदा हुआ और काफ़िरों को नुक़सान, काफ़िरों के दिलों में ख़ौफ़ डाल दिया गया। (9 से 12)

(iv) मोमेनीन को छह नसीहतें

- 1, अल्लाह और उसके रसूल की इताअत.
- 2, मैदाने जंग में पीठ न दिखाना.
- 3, जब अल्लाह और रसूल किसी काम के लिए बुलाएं तो ख़ुशी ख़ुशी दौड़ पड़ो.
- 4, अल्लाह और रसूल से ख़यानत न करो उन्हें अपनी अमानत समझो.
- 5, अल्लाह से ही डरो, अल्लाह तुम्हें मुमताज़ कर देगा और तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा.
- 6, जब अल्लाह के दुश्मनों से मुकाबला हो तो साबित क़दम (जमे) रहो।

(20, 24, 27, 30)

(v) कुछ अहम बातें

- ◆ ईमान लाने से पिछले तमाम गुनाह माफ़ हो जाते हैं। (29)
- ◆ माल और औलाद इंसान के लिए एक इम्तेहान हैं उनके आराम और खुशहाली के लिए अपनी आखिरत हरगिज़ खराब न करे। (28)
- ◆ अल्लाह और उसके रसूल की बात न सुनने वाले अल्लाह के नज़दीक बदतरीन जानवर हैं। (23)

पारा (10) वाअलमू

इस पारे में 2 हिस्से हैं:

- (1) सूरह अल अनफ़ाल का बाक़ी हिस्सा
- (2) सूरह अत तौबा का इब्तेदाई हिस्सा

(1) सूरह (008) अल अनफ़ाल का बाक़ी हिस्सा

(i) माले ग़नीमत का हुक्म

माले ग़नीमत का 5वां (1/5) हिस्सा नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, आप के करीबी, यतीमों, मिस्कीनों और मुसाफ़िरों के लिए है (यह हिस्सा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद बैतुल माल में जाता था और उन लोगों में तक्सीम होता था) बाक़ी 4 हिस्से मुजाहिदीन के लिये है। (41)

(ii) ग़ज़वा ए बद्र में किए गए एहसानात

- ◆ कुफ़्रार को मुसलमान और मुसलमानों को काफ़िर तादाद में कम दिखाए गए। (43, 44)

◆ शैतान मुशरिकीन के सामने उनके आमाल को सजा संवार कर पेश करता रहा। दूसरी तरफ़ मुसलमानों की मदद के लिए आसमान से फ़रिश्ते नाज़िल हुए। (48)

◆ राज़वा ए बद्र में कुरैश ज़लील व रुसवा हुए। (50)

(iii) अल्लाह तआला की नुसरत (मदद) के 6 असबाब (कारण)

- ◆ मैदाने जंग में सबित क़दमी।
- ◆ ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह का ज़िक्र।
- ◆ अल्लाह और रसूल की इताअत
- ◆ आपसी इख़्तेलाफ़ और लड़ाई से बच कर रहना।
- ◆ मुक़ाबले में ना मुवाफ़िक़ हालात पर सब्र।
- ◆ दिखावा और घमंड से दूर रहना

(45 से 47)

(iv) जंग के मुतअल्लिक़ हिदायात

- ◆ दुश्मनों के मुक़ाबले में साज़ व सामान, आर्थिक और रुहानी तीनों लिहाज़ से तैयारी मुकम्मल रखी जाय।
- ◆ अगर काफ़िर सुलह (समझौता) के लिए हाथ बढ़ाएं तो सुलह कर ली जाय।
- ◆ भरोसा सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह पर हो

(60, 61)

(v) मोमेनीन की तीन अक़्साम

मुहाजिरीन= ईमान, हिजरत, जान व माल की कुर्बानी

अंसार= ईमान, मुहाजिरीन को पनाह दी, क्षमता से ज़्यादा मदद की

पीछे रह जाने वाले= ईमान लाए लेकिन हिजरत नहीं की। (72)

(vi) कुछ अहम बातें

- ◆ अल्लाह ने सहाबा के दिलों को जोड़ दिया जिसको दुनिया की तमाम दौलत खर्च कर के भी नहीं जोड़ा जा सकता था। (43)
- ◆ अल्लाह किसी को नेअमत दे कर उसे तब्दील नहीं करता जबतक कि क़ौम खुद न तब्दील कर दे। (53)
- ◆ अगर अहले ईमान बीस हों तो वह अपने दो गुने दुश्मन पर भारी होंगे। (66)

(2) सूरह (009) अत तौबा के इब्तेदाई हिस्सा

(i) मुशरिकीन और अहले किताब के साथ जिहाद

उन मुशरिकीन से बरअत का एलान है जिन्होंने हज्जे बैतुल्लाह से मना कर दिया। अहले किताब के साथ जंग की इजाज़त दी गई। अलबत्ता उनके साथ मुआहिदे को पूरा करने का आदेश दिया गया जिन्होंने ख़िलाफ़ वर्ज़ी नहीं की। (4 से 6)

(ii) मुसलमान और मुनाफ़िक़ीन के दरमियान फ़र्क़

मुसलमान और मुनाफ़िक़ीन में फ़र्क़ करने वाली बुनियादी चीज़, ग़ज़वा ए तबूक बना। रूमियों के साथ मुक़ाबला जो उस समय सुपर पाँवर थे। सख़्त गर्मी, ग़रीबी और भूखमरी के मौक़ा पर जबकि फ़सल भी बिल्कुल तैयार थी। कुछ मुसलमानों को छोड़कर तमाम मुसलमान चले गए, जबकि मुनाफ़िक़ीन ने बहाने तराशने शुरू कर दिए। पारे के अंत तक मुनाफ़िक़ीन की मुज़म्मत है। कुदरत के बावजूद मैदाने जंग से भागे और झूठे बहाने तराशे, वह मुसलमानों से दिल में बुग़ाज़ व जलन रखते, मुसलमानों की खुशी व क़ामयाबी पर ग़मगीन और मुसलमानों के नुक़सान पर खुश होते। दूसरी तरफ़ क़समें खा खा कर मुसलमानों को यक़ीन दिलाते, हमेशा दौलत के लालच में रहते, कंजूसी उनकी घुटटी में पड़ी थी। हमेशा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए अपशब्द बकते रहते, उनके लिए फ़रमाया गया कि

اسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ إِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِينَ مَرَّةً فَلَنْ يَغْفِرَ اللَّهُ لَهُمْ ۖ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِينَ

"(ऐ रसूल) ख्वाह तुम उन (मुनाफिकों) के लिए मग़फ़िरत की दुआ माँगों या न माँगों (उनके लिए बराबर है) तुम उनके लिए सत्तर बार भी बख़्शिश की दुआ मांगोगे तो भी अल्लाह उनको हरगिज़ न बख़्शेगा। यह (सज़ा) इस वजह से है कि उन लोगों ने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया और अल्लाह बदकार लोगों को हिदायत नहीं दिया करता" (आयत 80)

और

وَلَا تُصَلِّ عَلَى أَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّتَّ أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلَى قَبْرِهِ إِنَّهُمْ كَفَرُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَمَاتُوا وَهُمْ فَاسِقُونَ

"और (ऐ रसूल) उन मुनाफिकीन में से जो मर जाए तो कभी न किसी पर नमाज़े ज़नाज़ा पढ़ना और न उसकी क़ब्र पर (जाकर) खड़े होना इन लोगों ने यक़ीनन अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया और बदकारी की हालत में मर (भी) गए। (आयत 84)

(iii) पीछे रह जाने वालों के तीन गिरोह

(1) मुनाफिकीन

(2) मुख़्लिस मगर मजबूर लोग जिनके पास सवारियां और रास्ते का ख़र्च न था। उनके दिल न जाने से बहुत दुखी थे।

(3) मुख़्लिस और मोमिन तो थे लेकिन केवल अपनी सुस्ती की वजह से पीछे रह गए थे।

(iv) सदक़ा व ज़कात के हक़दार

- ◆ फ़क़ीर,
- ◆ मिस्कीन,
- ◆ ज़कात वसूल करने वाले,
- ◆ किसी के दिल को नरम करने के लिए,
- ◆ कैदी को छुड़ाने के लिए,
- ◆ कर्ज़दार जिन में क़र्ज़ अदा करने की वास्तव में सकत न हो,
- ◆ अल्लाह के रास्ते में,

◆ मुसाफ़िर

(60)

(v) उलेमा को ख़ुदा की जगह न दी जाय

जिस तरह यहूदियों और ईसाइयों ने अपने उलेमा को ख़ुदा का दर्जा दे दिया था, वह अल्लाह की किताब को छोड़ कर अंधाधुंध उनकी बात मानते और अमल करते थे और उन उलेमा ने अवाम का तअल्लुक़ अल्लाह की किताब से तोड़ कर रख दिया बल्कि किताबों को बदल कर रख दिया था। लोगों के माल को हराम तरीक़े से खाते थे और सोना चांदी जमा कर के रखते थे, और अल्लाह के रास्ते में सबसे बड़ी रुकावट बन गए थे। (31, 34)

उलेमा की बात उसी वक़्त तक तस्लीम की जाय जब तक उसका तअल्लुक़ अल्लाह की किताब और रसूल की सुन्नत के मुताबिक़ हो।

(vi) अल्लाह और उसके रसूल से ज़्यादा कोई चीज़ महबूब नहीं

ऐ नबी! कह दो कि अगर तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे तुम्हारे भाई, तुम्हारी बीवियाँ, तुम्हारे रिश्ते-नातेदार, तुम्हारे वह माल जो तुमने कमाए हैं, तुम्हारे वह कारोबार जिनके ठंडे पड़ जाने का तुमको डर है और तुम्हारे वह घर जो तुमको बहुत पसन्द हैं, तुमको अल्लाह और उसके रसूल और उसकी राह में संघर्ष से ज़्यादा प्यारे हैं तो इन्तेज़ार करो, यहां तक कि अल्लाह अपना फ़ैसला तुम्हारे सामने ले आए। (आयत 24)

(vii) माल जमा कर के रखने और ख़र्च न करने वालों का अंजाम

जो लोग सोना चांदी जमा करके रखते हैं और उसमें से अल्लाह के रास्ते में ख़र्च नहीं करते क़्यामत के दिन उसी सोने-चाँदी पर जहन्नम की आग दहकाई जाएगी और फिर इसी से उन लोगों की पेशानियों, बग़ल और पीठ को दागा जाएगा (यह कहते हुए कि) यही है वह ख़ज़ाना जो तुमने अपने लिए जमा किया था, लो अब अपनी समेटी हुई दौलत का मज़ा चखो। (आयत 34, 35)

पारा (11) यातज़िरून

इस पारे में दो हिस्से हैं

- (1) सूरह अत तौबा का बाक़ी हिस्सा
- (2) सूरह यूनस मुकम्मल

(1) सूरह (009) अत तौबा के बाक़ी हिस्सा

(i) मुनाफ़िक़ीन की मुज़म्मत

गज़वा ए तबूक में शरीक न होने वाले मुनाफ़िक़ीन के झूठे बहाने की ख़बर अल्लाह तआला ने अपने नबी को पहले ही दे दी। मुनाफ़िक़ीन ने मुसलमानों को तंग करने के लिए मस्जिद ज़रार बनाई थी अल्लाह ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को उस में खड़े होने से मना फ़रमाया, नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्म से इस मस्जिद को जला दिया गया। क्योंकि मस्जिद की बुनियाद तक्रवा पर रखी जाती है न कि कुफ़्र करने और अल्लाह के रसूल के ख़िलाफ़ साज़िश करने के लिए। (108)

(ii) मोमिनीन की 9 सिफ़ात (विशेषताएं)

- 1, तौबा करने वाले
- 2, इबादत करने वाले
- 3, हम्द (तारीफ़ बयान) करने वाले
- 4, रोज़ा रखने वाले
- 5, रुकूअ करने वाले
- 6, सज्दा करने वाले
- 7, नेकी का हुक्म देने वाले
- 8, बुराई से रोकने वाले

9, अल्लाह की मुकर्रर की हुई हदों की हिफाज़त करने वाले (112)

(iii) किसी काफ़िर के हक़ में मग़फ़िरत की दुआ कुबूल नहीं होती

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولَىٰ قُرْبَىٰ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ

किसी नबी या मोमिन के लिए जाएज़ नहीं कि वज़ाहत कर देने के बाद भी वह मुशरिकों के लिए मग़फ़िरत तलब करे चाहे वह उसका कितना ही करीबी क्यों न हो। मुशरिकों का ठिकाना जहन्नम है। (113)

(iv) ग़ज़वा ए तबूक में शिरकत न करने वाले 3 मुखलिस सहाबा

1. काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु
2. हिलाल बिन उमय्या रज़ियल्लाहु अन्हु
3. मुरारह बिन रबीअ रज़ियल्लाहु अन्हु

इन तीनों का 50 दिन तक सोशल बॉयकॉट किया गया फिर उनकी तौबा की कुबूलियत का ऐलान इस वही के ज़रिए हुआ।

وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خَلَفُوا حَتَّىٰ إِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ أَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوا أَنْ لَا مَلْجَأَ مِنَ اللَّهِ إِلَّا إِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوبُوا إِنَّ اللَّهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ

और उन तीनों पर जो (जिहाद से) पीछे रह गए थे जब ज़मीन अपनी वुसअत (फैलाव) के बावजूद उन पर तंग हो गई और उनकी जानें (तक) उन पर बोझ मालूम होने लगीं और उन लोगों ने समझ लिया कि अल्लाह के सिवा और कहीं पनाह की जगह नहीं। फिर अल्लाह ने उनको तौबा की तौफ़ीक़ दी ताकि वह (अल्लाह की तरफ़) रूजू करें, बेशक अल्लाह बड़ा तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान है। (118, सही बुखारी 4418)

(2) सूरह (010) यूनुस मुकम्मल

(i) तौहीद

राज़िक़, मालिक, हाकिम, ख़ालिक़ और हर किस्म की तदबीर करने वाला अल्लाह ही है। यही वजह है कि जब इंसान पर कोई बला आती है तो वह अपने तमाम बनाये हुए देवी देवताओं को छोड़ कर लेटे, बैठे और खड़े होकर अल्लाह को ही पुकारता है। (2 से 12)

(ii) रिसालत

इस हवाले से नूह, मूसा, हारून और यूनुस अलैहिमुस्सलाम के वाकिआत बयान हुए हैं। क़ौमे यूनुस एकलौती ऐसी क़ौम थी जिस पर अज़ाब आकर टल गया था। (90)

(iii) क़यामत

उस दिन तमाम इंसानों को जमा किया जायेगा, कुफ़्रार भले ही इसका यक्कीन न करें। और किसी पर ज़र्रा बराबर भी जुल्म न होगा बल्कि सबको न्याय मिलेगा।

(iv) कुरआन की अज़मत और तख़लीक़ ए कायनात (universe)

सूरज, चांद, उनकी सीमाएं, साल और महीनों का हिसाब, रात और दिन का उलटफेर, आसमान और ज़मीन और उनसे रिज़क़ का हासिल होना, जल और थल, सुनने और देखने की सलाहियत अता करना, मौत और ज़िंदगी, रात को सुकून और दिन को रौशन बनाना आदि। (5, 31)

(v) अंबिया की दावत में तीन ख़ास बातें

- ◆ शिर्क से बचने की नसीहत,
- ◆ मैं तुमसे दावत का कोई बदला नहीं माँगता मेरा अज़्र तो अल्लाह के ज़िम्मे है,
- ◆ मुझे मुसलमान रहने का हुक्म दिया गया है।

(72)

(vi) काफ़िरों के इंकार के मुख्तलिफ़ पहलू

(1) आख़िरत का इंकार, (2) उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर इसलिए देवी देवता बना रखा है कि वह अल्लाह के सिफ़ारिशी हैं। (3) नबूवत का इंकार। (4) कुरआन नबी खुद घड़ लाए हैं। (5) यह दीन बाप दादा के दीन के खिलाफ़ है।

(vii) काफ़िरों को क़ायल करने के लिए मुख्तलिफ़ दलाएल

- ◆ निशानियां याद दिला कर
- ◆ चैलेंज के ज़रिए
- ◆ आख़िरत के अंजाम की सूचना के ज़रिए,
- ◆ बलाओं और मुसीबत के वक़्त देवी देवता क्यों नहीं याद आते?

(viii) अंबिया के वाक़िआत

(1) नूह अलैहिस्सलाम का वाक़िआ

नूह अलैहिस्सलाम ने अपनी क़ौम को अपने रब की तरफ़ बुलाया, लेकिन केवल कुछ लोगों को छोड़ कर किसी ने उन की बात नहीं मानी। अल्लाह तआला ने मानने वालों को कश्ती में सवार करके बचा लिया और बाक़ी सभी नाफ़रमान लोगों को डुबो दिया। उन नाफ़रमानों में नूह अलैहिस्सलाम का एक बेटा भी था। (71 से 73)

(2) मूसा व हारून अलैहिमुस्सलाम का वाक़िआ

अल्लाह ने मूसा व हारून अलैहिमुस्सलाम को फ़िरऔन की तरफ़ भेजा कि वह उसे अल्लाह के रास्ते की तरफ़ बुलाएं लेकिन फ़िरऔन और उसके दरबारियों ने बात न मानी बल्कि फ़िरऔन ने उल्टा खुदाई का दावा कर दिया, मूसा अलैहिस्सलाम को जादूगर बताया और उनके मुक़ाबले में मुल्क के जादूगरों को बुला लिया। जादूगर मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाए। फ़िरऔन जब इंकार पर डटा रहा तो अल्लाह ने उसे समुद्र में डुबो दिया फिर अल्लाह ने मूसा और हारून अलैहिमुस्सलाम को हुक्म दिया कि अपनी क़ौम के लिए घर और मस्जिद बनाएं और मस्जिदों में सब नमाज़ अदा करें। (75 से 92)

(3) यूनस अलैहिस्सलाम का वाक़िआ

इस सूरह का नाम उनके नाम पर "सूरह यूनस" रखा गया है। यूनस अलैहिस्सलाम का नाम कुरआन में चार बार सूरह (अन निसा, अल अनआम, यूनस और अस साफ़ात) में आया है, और दो जगहों पर जुन नून ذوالنون अल अंबिया में और साहेबुल हूत صاحب الحوت (यानी मछली वाले) सूरह अल क़लम में आया है।

यूनस अलैहिस्सलाम के वाक़िए के दो पहलू हैं।

- 1, मछली के पेट में जाना इसका तफ़सीली बयान सूरह 37 अस साफ़ात में है।
- 2, उनकी ग़ैर मौजूदगी में क़ौम का इस्तेग़फ़ार करना इस सूरह में इसकी तरफ़ इशारा है।

दरअसल यूनस अलैहिस्सलाम अपनी क़ौम के ईमान न लाने के कारण निराश हो कर और अल्लाह के अज़ाब को यक़ीनी (सुनिश्चित) देख कर "नैनवा" की ज़मीन छोड़कर चले गए। आगे जाने के लिए जब वह क़श्ती में सवार हुए तो समुद्र में तूफ़ान आगया और क़श्ती डूबने लगी। तो लोगों में चर्चा होने लगी कि ज़रूर कोई गुनहगार आदमी है, यूनस अलैहिस्सलाम को उसी वक़्त अपनी ग़लती का एहसास हुआ और उन्होंने समुद्र में छलांग लगा दी ताकि क़श्ती के और मुसाफ़िर महफूज़ रहें। जैसे ही उन्होंने छलांग लगाई एक बड़ी मछली ने निगल लिया। अल्लाह ने उन्हें मछली के पेट में भी सही सालिम रखा। मछली के पेट में ही उन्होंने दुआ की जिसका ज़िक्र सूरह अल अंबिया में है।

لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ

"तेरे इलावा कोई माबूद नहीं, पाक है तेरी ज़ात बेशक मैं ही ज़ालिम था" (सूरह 21 अल अंबिया 87)

अल्लाह ने उनकी दुआ कुबूल कर ली और कुछ दिन बाद मछली ने उन्हें साहिल पर उगल दिया। उधर यह हुआ कि यूनस अलैहिस्सलाम की क़ौम के मर्द, औरतें, बच्चे और बूढ़े सभी सहारा (रेगिस्तान) में निकल गए और रोना धोना और इस्तेग़फ़ार करना शुरू कर दिया और सच्चे दिल से ईमान लाए जिसकी वजह से अल्लाह का अज़ाब उन से टल गया। (98)

पारा (12) व मा मिन दाब्बा

इस पारे में दो हिस्से हैं-

- (1) सूरह हूद मुकम्मल (इब्तेदाई 5 आयत ग्यारहवें पारे में है)
- (2) सूरह यूसुफ़ का इब्तेदाई निस्फ़ हिस्सा

(1) सूरह (011) हूद मुकम्मल

(i) कुरआन करीम की अज़मत

कुरआन अपनी आयात, मआनी, और मज़मून के एतेबार से मुहकम (स्पष्ट) किताब है और उसमें किसी भी लिहाज़ से फ़साद और खलल नहीं आ (दूषित या बाधित नहीं किया जा) सकता। और न ही इसमें कोई विरोधाभास (conflict) या अन्तर्विरोध (Contradiction) है। मुहकम होने की बड़ी वजह यही है कि इसकी तफ़सील और तशरीह (explanation) उस ज़ात ने किया है जो हकीम भी है और ख़बीर भी। उसका हर हुक्म किसी न किसी हिकमत से इबारत है और उसे इंसान के माज़ी (past), हाल (present) मुस्तक़बिल (future), उसकी नफ़सियात (psychology), कमज़ोरी (weakness) और ज़रूरियात का इल्म है।

जो लोग यह दावा करते हैं कि इस्लाम सवा 1400 साल पहले की पैदावार है और हिंदुस्तानी इतिहास में यह पढ़ाया जाता है कि इस्लाम के संस्थापक (founder) मुहम्मद साहब (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) थे तो उन्हें यह जान लेना चाहिए कि कुरआन उनके नज़रियात को रद्द करते हुए ऐलान करता है कि इस्लाम तो उसी वक़्त आया था जब पहले इंसान ने दुनिया में क़दम रखा था और हज़ारों अंबिया और रसूल के बाद आखिरी नबी मुहम्मद अरबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को रिसालत दी गई। उन लोगों का भी ज़िक्र किया गया है जो अल्लाह की आयात का इंकार करते हैं उनको जवाब दिया गया बल्कि चैलेंज किया गया कि

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَاهُ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ سُوْرٍ مِّثْلِهِ مُفْتَرِيَتٍ وَادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُونِ اللَّهِ إِن كُنْتُمْ صَادِقِينَ

वह कहते हैं कि (नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने यह कुरआन खुद घड़ लिया है तो आप उनसे कह दीजिए कि अगर वह सच्चे हैं तो उन झूठे माबूदों को भी मदद के लिए बुला लें और इस जैसी ज़रा दस सूरतें ही बना लाएं। (आयत 13)

आगे धमकी भी है,

अब अगर तुम्हारे अपने बनाये हुए माबूद तुम्हारी मदद नहीं कर सकते तो जान लो कि यह अल्लाह के इल्म से नाज़िल की गई है। और हक़ीक़त यह है कि अल्लाह के इलावा कोई माबूद नहीं है। क्या तुम अब भी न मानोगे। (आयत 14)

(ii) तौहीद और तौहीद के दलाएल

दुनिया में जितनी मख़लूक हैं इंसान हों या जिन्नात, चौपाए हों या परिंदे, पानी में रहने वाली मछलियां और दूसरे जंतु हों या ज़मीन पर रेंगने वाले कीड़े मकोड़े, तमाम मख़लूक को रिज़क़ देने वाला अल्लाह ही है, और तमाम मख़लूक़ात और आसमान व ज़मीन को अल्लाह ने ही पैदा किया है। (6, 7)

(iii) रिसालत और उसके सुबूत के लिए सात अंबिया के वक्फ़िआत

- (1) नूह अलैहिस्सलाम,
- (2) हूद अलैहिस्सलाम,
- (3) सालेह अलैहिस्सलाम,
- (4) इब्राहीम अलैहिस्सलाम,
- (5) लूत अलैहिस्सलाम,
- (6) शुऐब अलैहिस्सलाम,
- (7) मूसा अलैहिस्सलाम

इन वक्फ़िआत में जहां एक तरफ़ अक्ल, समझ बूझ और सुनने देखने वालों के लिए बे पनाह इबरत और नसीहत है वहीं दूसरी तरफ़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और सच्चे पक्के मुसलमानों के लिए तसल्ली और अपने दीन पर जमे रहने की तलक़ीन भी है। इसीलिए यह वक्फ़िआत बयान करते हुए आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस्तेक़ामत का हुक्म दिया गया है और यह हुक्म पूरी उम्मत के लिए भी है। इस्तेक़ामत कोई सस्ती और आसान चीज़ नहीं है बल्कि बहुत ही मुश्किल काम है जो अल्लाह के मख़सूस बंदों को ही नसीब होती है। इस्तेक़ामत का मतलब है उन तालीमात के मुताबिक़ पूरी ज़िंदगी गुज़ारी जाय जिसका अल्लाह ने हुक्म दिया है। (25 97)

(iv) क़यामत का तज़क़िरा

क़यामत के दिन इंसान दो गिरोहों में बंटे होंगे। 1, बदबख़्त लोग जिनके लिए हौलनाक अज़ाब होगा। कुफ़्र की हालत में मरने वाले सदैव जहन्नम में जलते रहेंगे परन्तु जो मुसलमान अपने गुनाहों की वजह से जहन्नम में जाएंगे, जबतक अल्लाह की मर्ज़ी होगी वह जलेंगे फिर उन्हें जहन्नम से निकाल कर जन्नत में दाख़िल किया जाएगा। 2, खुश किस्मत लोग, यह सदैव जन्नत में रहेंगे जहां उनके लिए सभी प्रकार का रिज़क़ होगा। (105, 109)

(v) मोमिनों को नसीहत

(1) ज़ालिमों की बातों में हरगिज़ न आएँ वरना जहन्नम के मुस्तहिक्क हो जाएंगे। नेकी बुराई को दूर कर देती है। (2) दिन के दोनों किनारों और रात के हिस्सों में नमाज़ अदा करें। (3) जो परेशानियाँ आएँ उन पर सब्र करें। (113 से 115)

(2) सूरह (012) यूसुफ़ का इब्तेदाई निस्फ़ हिस्सा

इस सूरह में यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के वाक़ये को बड़ी तफ़सील से बयान किया गया है।

- "तमाम अंबिया ए कराम के वाक़िए क़ुरआन में जगह जगह बिखरे पड़े हैं मगर यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का वाक़िआ इसी सूरह में मुकम्मल बयान हुआ है। उसकी वजह यह है कि उस ज़माने में मक्के के कुछ काफ़िरों ने (यहूदियों के इशारे पर) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की परीक्षा लेने के लिए आप से सवाल किया था कि बनी इस्राईल मिस्र कैसे पहुंचे? चूंकि अरब के लोग इस वाक़िए से नावाक़िफ़ थे, बल्कि उसका नाम व निशान तक उनके यहां नहीं पाया जाता था, खुद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बान से भी इस से पहले कभी न सुना गया था इसलिए उन्हें उम्मीद थी कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम या तो इसका विस्तारपूर्वक जवाब न दे सकेंगे या उस वक़्त टाल मटोल करने के बाद किसी यहूदी से पूछने की कोशिश करेंगे और इस तरह आप का भ्रम खुल जायेगा। लेकिन इस परीक्षा में उन्हें उल्टी मुंह की खानी पड़ी। अल्लाह तआला ने सिर्फ़ यही नहीं किया कि फ़ौरन उसी वक़्त यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का यह पूरा वाक़िआ आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बान पर जारी कर दिया बल्कि इस क़िस्से को क़ुरैश के उस मामले पर चस्पां भी कर दिया जो वह यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाईयों की तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ कर रहे थे।

لَقَدْ كَانَ فِي يُوسُفَ وَإِخْوَتِهِ آيَاتٍ لِّلْسَائِلِينَ

"यूसुफ़ और उसके भाइयों के क्रिस्से में पूछने वालों के लिए बड़ी निशानियां हैं"

हकीकत यह है कि यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के क्रिस्से को मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और कुरैश के मामले पर चस्पां कर के कुरआन मजीद ने गोया स्पष्ट भविष्यवाणी कर दी थी कि जिसे आने वाले 10 वर्ष के वाकिआत ने बिल्कुल सही साबित करके दिखा दिया। इस सूरह के नाज़िल हुए अभी डेढ़ दो वर्ष भी नहीं गुज़रे थे कि कुरैश के लोगों ने बिरादराने यूसुफ़ की तरह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़त्ल की साज़िश की और आप को मजबूरन अपनी जान बचा कर मक्का से निकलना पड़ा। फिर उनकी उम्मीदों के उलट आप को भी जिला वतनी की ज़िंदगी में भी ऐसा ही उरूज और इक़तेदार नसीब हुआ जैसा यूसुफ़ अलैहिस्सलाम को हुआ था। फिर जिस तरह यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के भाई मिस्र में उनके सामने सिर झुकाए शर्मिंदा, हाथ फैलाये खड़े विनती कर रहे थे:

وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا إِنَّ اللَّهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِينَ

"हमें सदक़ा दीजिए, बेशक अल्लाह सदक़ा करने वालों को बड़ा अज़्र देता है।"

तो यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने कुदरत रखने के बावजूद उन्हें माफ़ कर दिया और कहा,

لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللَّهُ لَكُمْ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ

आज तुम्हारी कोई पकड़ नहीं, अल्लाह तुम्हारी मग़फ़िरत करे वही सब रहम करने वालों से बढ़ कर रहम करने वाला है।" (आयत 92)

यही हाल मक्के के लोगों का भी हुआ। मक्का फ़तह होने के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने कुरैश शिकस्त खाये और सिर झुकाए खड़े थे और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक एक जुल्म का बदला लेने पर क़ादिर थे। आपने पूछा तुम्हारा क्या ख़याल है? तुम्हारे साथ क्या सुलूक किया जाय? उन्होंने जवाब दिया

خَيْرًا، أَخْ كَرِيمٌ، وَابْنُ أَخٍ كَرِيمٍ،

"आप एक आली ज़फ़्र भाई और आली ज़फ़्र भाई के बेटे हैं।"

इस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया,

فَإِنِّي أَقُولُ كَمَا قَالَ أَخِي يُوسُفُ ، لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ اذْهَبُوا فَأَنْتُمْ الطُّلَقَاءُ

"मैं तुम्हें वही जवाब देता हूँ जो यूसुफ़ ने अपने भाइयों को दिया था आज तुम्हारी कोई पकड़ नहीं जाओ तुम सब आज़ाद हो।" (सीरत इब्ने हिशाम)

● यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का वाकिआ

याकूब अलैहिस्सलाम के बारह बेटे थे यूसुफ़ अलैहिस्सलाम उनमें सूरत और सीरत दोनों लिहाज़ से बेहद हसीन थे यही वजह है कि याकूब अलैहिस्सलाम उनसे ज़्यादा मुहब्बत करते थे। एक बार यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने एक ख़्वाब देखा और अपने वालिद को बताया कि "ग्यारह सितारे, सूरज और चांद मुझे सज्दा कर रहे हैं" उनके वालिद ने भाइयों से ख़्वाब का ज़िक्र करने से मना किया। बाप की बेपनाह मुहब्बत की वजह से दूसरे बेटे यूसुफ़ से हसद करने लगे। उन्होंने आपस में मशविरा किया और अपने वालिद को राज़ी कर तफ़रीह का बहाना करके जंगल ले गये और वहां एक अंधे कुएं में गिरा दिया, शाम को अपने वालिद से झूठ बोल दिया कि उसे भेड़िया खा गया। इधर यूसुफ़ कुएं में पड़े थे कि एक क़ाफ़िला गुज़रा। उन्होंने पानी निकालने के लिए कुएं में जो डोल डाला तो आप निकल आए। क़ाफ़िले वाले खुश हुए और मिस्र ले जाकर अज़ीज़ ए मिस्र को बेच दिया, अज़ीज़ ए मिस्र ने अपने घर में रखा, उनका हुस्न देख कर अज़ीज़ ए मिस्र की बीवी का दिल उनपर आ गया, उसने बुराई की दावत दी जिसे आप ने ठुकरा दिया। चूंकि शहर में चर्चा होने लगा इसलिए अज़ीज़ ए मिस्र ने बदनामी के डर से आप को जेल में डलवा दिया। जेल में भी आप ने तौहीद की दावत का सिलसिला जारी रखा, यही वजह थी कि तमाम कैदी आप की इज़्ज़त करने लगे। उसी दौरान दो कैदियों ने ख़्वाब देखा और उनसे ताबीर पूछी आप ने अल्लाह के हुक्म से ठीक ठीक बता दिया। फिर बादशाह ने ख़्वाब देखा कि "सात मोटी गायें हैं जिन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं और अनाज की सात बालें हरी हैं और सात सूखी" बादशाह बहुत परेशान हुआ और उसने दरबारियों को इकट्ठा कर उन से ताबीर चाही लेकिन कोई ताबीर न बता सका। इत्तेफ़ाक़ से उस वक़्त वह भी मौजूद था जिसे यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने जेल में ख़्वाब की ताबीर बताई थी, उसने यूसुफ़ अलैहिस्सलाम के पास जाने की इजाज़त तलब की और उन्होंने ताबीर बताई तो बादशाह ने आश्चर्य से कहा ऐसा ज़हीन और माहिर व्यक्ति जेल में कैसे है, उसने आज़ाद कर के ख़ज़ाने, व्यापार, और राज्य का स्वतंत्र मंत्री (خود مختار وزیر) बना दिया। मिस्र और आस पास में अकाल (قحط) की वजह से आप के भाई अनाज हासिल करने के लिए मिस्र आए। आपने उन्हें पहचान लिया लेकिन वह न पहचान सके। फिर आखिर में एक बार उनके भाई आए तो बहुत ख़स्ता हालत थी और उन्होंने सदक़े की मांग की तो यूसुफ़ को रहम आ गया। उन्होंने उनसे पूछा तुम्हें पता है कि तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या किया था? अब उनके समझ में आया तो उन्होंने तअज्जुब से पूछा क्या तुम यूसुफ़ हो? जब यूसुफ़ ने कहा हां मैं यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई है तो सभी भाई उनके सामने नादिम व शर्मिदा खड़े थे। फिर उन्होंने

अपने वालिदैन और तमाम परिवार को मिस्र बुला लिया और इस तरह बनी इस्राईल मिस्र महुँच कर आबाद हो गए।

पारा। (13) व मा उबरीयो

इस पारे में तीन हिस्से हैं:

- (1) सूरह यूसुफ़ (बाक़ी निस्फ़ हिस्सा)
- (2) सूरह अर रअद मुकम्मल
- (3) सूरह इब्राहिम मुकम्मल

(1) सूरह (012) यूसुफ़ का बाक़ी निस्फ़ हिस्सा

कुछ अनमोल बातें

- (i) अल्लाह के फ़ैसले के सामने कोई तदबीर काम नहीं करती।
- (ii) दावत देने वाले को जहां भी मौक़ा मिलता है तौहीद की दावत जारी रखता है।
- (iii) हसद और जलन घर, ख़ानदान और समाज के लिए एक नासूर से कम नहीं।
- (iv) नफ़्स अम्मारह इंसान को बुराई की तरफ़ ले जाती है।
- (v) अच्छे अख़लाक़ की कद्र हर जगह होती है।
- (vi) नामहरम मर्द और औरत को तन्हाई में एक दूसरे से नहीं मिलना चाहिए।
- (vii) जहां इल्ज़ाम आने का ख़तरा हो ऐसी जगह और माहौल से भी होशियार रहना चाहिए।
- (viii) गुनाह पर मुसीबत को तरजीह (Priority) देनी चाहिए

- (ix) पाकदामनी तमाम भलाइयों का स्रोत है।
- (x) अगर ईमान मज़बूत हो तो मुसीबतें खुद आसान हो जाती हैं।
- (xi) मुसीबत और परेशानियों के बाद राहत और सुकून नसीब होता है
- (xii) सत्य परेशान हो सकता पराजित नहीं (यूसुफ़ की नेकी की गवाही खुद उनके हासिदीन ने दी यानी अज़ीज़ ए मिस्र की बीवी और उसके खानदान वालों ने)।
- (xiii) बिना वजह ख़तरे को दिल में जगह नहीं देना चाहिए।

(2) सूरह (013) अर रअद

(i) कुरआन की हक्कानियत (सत्यता)

यह बिंदु भी क़ाबिले गौर है कि जिन सूरतों का आरम्भ हुरुफ़े मुक़त्त आत से होता है उन की इब्तेदा में आम तौर पर कुरआन का ज़िक्र उन लोगों को चैलेंज करने के लिए होता है जो कुरआन करीम को मुआज़ अल्लाह इंसानी तख़लीक़ करार देते हैं।

(ii) तौहीद (अल्लाह की कुदरत के करिशमे)

बग़ैर किसी स्तम्भ (pillar) के आसमान की बुलंदी, सूरज और चांद पर कंट्रोल, तमाम चीज़ों का एक दायरे (axis) में हरकत करना, ज़मीन को फैलाकर कर बिछाना, पहाड़ और नहरें, तमाम फलों के जोड़े जोड़े, रात का दिन को ढक लेना, ज़मीन के मुख़्तलिफ़ हिस्से, अंगूर और खुजूर की खेतियां जिनकी एक ही पानी से सिंचाई होती है लेकिन कोई पेड़ एक तने वाला होता है और कोई बग़ैर तने वाला और मज़े में सब अलग अलग होते हैं, बिजली की चमक, भारी बादल पैदा करना, कड़क भी अल्लाह की हम्द व तारीफ़ करती है। (2 से 4, 12, 13)

(iii) क़यामत

मुशरिकों को इस बात पर तअज्जुब होता है कि मुर्दा हड्डियों में जान कैसे डाली जा सकती है जबकि तअज्जुब तो वास्तव में उनकी बात पर होता है कि वह कैसे ऐसी बातें कर रहे हैं। जब इंसान कुछ भी नहीं था तो अल्लाह तआला ने उसे पैदा किया तो दोबारा पैदा करना कौन सा मुश्किल काम होगा। (5)

(iv) रिसालत

हर क़ौम के लिए कोई न कोई रहनुमा और पैग़म्बर ज़रूर भेजा जाता रहा है। (7)

(v) ईमान वालों की दस सिफ़ात

- (i) अल्लाह की बंदगी का हक़ अदा करना
 - (ii) अल्लाह से किए हुए अहद को तोड़ते नहीं हैं।
 - (iii) रिश्तेदारों से नेक सुलूक
 - (iv) अल्लाह का तक्रवा,
 - (v) आखिरत का ख़ौफ़
 - (vi) नमाज़ की पाबंदी
 - (vii) सदक़ा
 - (viii) सब्र
 - (ix) बुराई के बदले भलाई,
 - (x) अल्लाह के ज़िक़्र से दिल का इत्मिनान हासिल करते हैं।
- (20 से 22, 25, 28)

(vi) बदबख़्तों की तीन निशानियां

- 1, वादा पूरा न करना
 - 2, रिश्ते नाते को तोड़ना,
 - 3, ज़मीन में फ़साद मचाना
- (25)

(vii) बातिल की मिसाल झाग से

जब बारिश होती है तो तमाम घाटियां भी अपनी क्षमता के अनुसार बह निकलती हैं और सैलाब के साथ कुछ झाग भी आ जाता है और ऐसा ही झाग सोने को जब ज़ेवर बनाने के लिए पिघलाया जाता है तो उसमें भी निकलता है लेकिन यह झाग सूख कर उड़ जाता है और फ़ायदेमंद चीज़ बाक़ी रह जाती है ऐसे ही बातिल भी झाग बन कर उड़ जाएगा और हक़ बाक़ी रहेगा। (17)

(3) सूरह (014) इब्राहीम मुकम्मल

(i) तौहीद

तमाम आसमान और ज़मीन अल्लाह के बनाए हुए हैं। उसी ने आसमान से पानी बरसाया, फिर इस के द्वारा ज़मीन से क़िस्म क़िस्म के फल निकाले और पानी की सवारियों और नहरों को इंसान के अधीन कर दिया। सूरज और चांद, रात और दिन को इंसान के कामों में लगा दिया जो कुछ इंसानों ने मांगा अल्लाह ने अता किया। उसकी नेअमतें इतनी हैं कि इंसान गिन भी नहीं सकता। (32 से 34)

(ii) रिसालत

1, नबी अलैहिस्सलाम की तसल्ली के वास्ते बताया गया है कि पिछले अंबिया के साथ भी उनकी क़ौमों ने इंकार, मुखालिफ़त, दुश्मनी का रवैया इख़्तियार किया जो आप की क़ौम इख़्तियार किये हुए है।

2, हर नबी अपनी क़ौम की ज़बान ही बोलता है।

3, पिछली क़ौमों के झुठलाने वालों के कुछ संदेह, जैसे अल्लाह के वजूद के बारे में शक, इंसान रसूल नहीं हो सकता, बाप दादा का रास्ता कैसे छोड़ दें। (3)

(iii) क़यामत

काफ़िरों के लिए जहन्नम और मोमेनीन के लिए जन्नत का वादा है। जन्नत की नेअमतों और जहन्नम की हौलनाकियों का ज़िक्र है। क़यामत में हिसाब किताब हो चुकने के बाद शैतान गुमराहों से कहेगा जो वादा अल्लाह ने तुमसे किया था वही सच्चा था और जो वादा मैंने तुम

से किया था वह झूठा था। मैंने तुम से ज़बरदस्ती तो नहीं की थी, तुम खुद मेरे बहकावे में आ गए थे। अब मुझे मलामत करने के बजाय अपने आप को मलामत करो। (21, 22)

(iv) क़ब्र के चार सवाल

आयत नंबर 27

يُنَبِّئُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَيُضِلُّ اللَّهُ الظَّالِمِينَ وَيَفْعَلُ اللَّهُ مَا يَشَاءُ

क़ब्र में किये जाने वाले चार सवालों से मुतअल्लिक भी है जैसा कि हदीस में है, बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: क़ब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह तलब करो। इसे 2 या 3 बार फ़रमाया, जरीर की रिवायत में इतना इज़ाफ़ा है और वह (मुर्दा) उनके जूतों की चाप सुन रहा होता है जब वह पीठ फेर कर लौटते हैं उसी वक़्त उस से पूछा जाता है ऐ शख्स!

1, तुम्हारा रब कौन है (مَنْ رَبُّكَ)?

मोमिन जवाब में कहता है,

मेरा रब (माबूद) अल्लाह है (رَبِّيَ اللَّهُ) /

जबकि काफ़िर और मुनाफ़िक़ जवाब देते हैं,

हाय अफ़सोस हाय अफ़सोस! मुझे नहीं मालूम (هَاهُ هَاهُ لَا أَدْرِي)!!

2, तुम्हारा दीन क्या है? (مَا دِينُكَ?)

मोमिन जवाब में कहता है,

मेरा दीन इस्लाम है (دِينِي الْإِسْلَامُ) /

जबकि काफ़िर और मुनाफ़िक़ जवाब देते हैं,

हाय अफ़सोस हाय अफ़सोस! मुझे नहीं मालूम (هَاهُ هَاهُ لَا أَدْرِي)!

3, ये शख्स (यानी रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) कौन है जो तुममें भेजे गये थे? (مَا هَذَا الرَّجُلُ الَّذِي بُعِثَ فِيكُمْ?)

कुछ अहादीस में है। तुम्हारा नबी कौन है (مَنْ نَبِيِّكَ)?

मोमिन जवाब में कहता है,

هُوَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

यह तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) हैं।

बुखारी के अल्फ़ाज़ है कि मोमिन गवाही देगा,

أَشْهَدُ أَنَّهُ عَبْدُ اللَّهِ وَرَسُولُهُ

“मैं गवाही देता हूँ कि यह (ﷺ) अल्लाह के बन्दे और उस के रसूल हैं।”

जबकि काफ़िर और मुनाफ़िक़ जवाब देते हैं,

हाय अफ़सोस हाय अफ़सोस! मुझे नहीं मालूम ((هَاهُ هَاهُ لَا أَدْرِي)!

كُنْتُ أَقُولُ مَا يَقُولُ النَّاسُ

मैं तो वही कहता था जो दूसरे लोग कहते थे (यानी मुझे खुद तो कुछ नहीं मालूम, बस जो लोग कहते थे मैं भी अन्धा धुंध उनकी पैरवी करता था, कभी मैंने खुद रसूलल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शख़्सियत को नहीं जाना।)

فَقِيلَ: لَا دَرَيْتَ وَلَا تَلَيْتَ

फिर उससे कहा जायेगा कि, “ना तूने जानने की कोशिश की और ना समझने वालों की राय पर चला।”

4, तुम्हें ये सब बातें कहाँ से मालूम हुई? (وَمَا يُدْرِيكَ؟)

तो मोमिन जवाब में कहता है,

قَرَأْتُ كِتَابَ اللَّهِ، فَأَمَنْتُ بِهِ، وَصَدَّقْتُ،

मैंने अल्लाह की किताब पढ़ी और उस पर ईमान लाया और उसको सच समझा। और जरीर की हदीस में यह इज़ाफ़ा है "अल्लाह तआला के क़ौल

يُنَبِّئُ اللَّهُ الَّذِينَ آمَنُوا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ سُورَةُ إِبْرَاهِيمَ آيَةُ 27،

(जो लोग तौहीद पर सच्चे दिल से ईमान लाए उनको अल्लाह दुनिया की ज़िन्दगी में भी साबित क़दम रखता है और आखिरत में भी साबित क़दम रखेगा) उन्हें सवाल व जवाब में कोई दिक्कत न होगी) से यही मुराद है।

इस सवाल जवाब के बाद मोमिन के लिए नेअमतों का दरवाज़ा खोल दिया जाता है। और मुनाफ़िक़ और काफ़िर के लिए अज़ाबे क़ब्र मुसल्लत कर दिया जाता है। [सहीह बुखारी 1374/ किताबुल जनाएज़, मुर्दा जूतों की चाप सुनता है के बारे में और सुनन अबू दाऊद 4753/ किताबुस सुन्नह क़ब्र के सवाल और उसके अज़ाब के सिलसिले में]

(iv) कुछ अहम बातें

- ◆ अल्लाह की किताब का मक़सद लोगों को कुफ़्र के अंधेरे से निकाल कर ईमान की रौशनी में लाना है। (1)
- ◆ शुक्र से नेअमत में इज़ाफ़ा होता है और ना शुक़रों के लिए अल्लाह तआला का सख़्त अज़ाब है।
- ◆ काफ़िरों के आमाल की मिसाल राख की सी है कि तेज़ हवा आये और सब उड़ा ले जाए (18)
- ◆ हक़ और ईमान (तौहीद) का कलेमा एक पाकीज़ा दरख़्त के समान है जिसकी जड़ बहुत मज़बूत है और उसकी टहनियाँ आसमान में लगी हों जो अपने परवरदिगार के हुक्म से हर वक्त फ़ला फूला रहता है। जबकि गन्दी बात (शिरक) की मिसाल गोया एक गन्दे दरख़्त की सी है (जिसकी जड़ ऐसी कमज़ोर हो) कि ज़मीन के ऊपर ही से उखाड़ फेंका जाए (क्योंकि) उसको कुछ ठहराव नहीं होता और फल भी नहीं देता। (24 से 26)
- ◆ अल्लाह ज़ालिमों के करतूतों से बेख़बर नहीं है।

(v) कुछ दुआएं

इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने अपने रब से छह चीज़ें मांगी

- 1, अमन व शांति वाला मुल्क,
- 2, शिरक से हिफ़ाज़त,
- 3, नमाज़ क़ायम करना,
- 4, रिज़क़ ल,

5, मक्का को मरकज़ (केंद्र)

6, आखिरत के दिन निजात।

رَبِّ اجْعَلْ هَذَا الْبَلَدَ آمِنًا وَاجْنُبْنِي وَبَنِيَّ أَنْ نَعْبُدَ الْأَصْنَامَ

ऐ मेरे रब इसे (मक्के को) अमन (शांति) का शहर बना दे, मुझे और मेरी औलाद को बूत परस्ती से बचा। (35)

رَبَّنَا إِنِّي أَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِي بِوَادٍ غَيْرِ ذِي زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ رَبَّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ فَاجْعَلْ أَفْئِدَةً مِنَ النَّاسِ تَهْوِي إِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُونَ

ऐ रब मैंने तेरे मुहतरम घर (काबे) के पास एक बेखेती के (वीरान) बियाबान (मक्का) में अपनी औलाद को ला बसाया है ताकि ये लोग यहाँ नमाज़ क़ायम करें तो तू कुछ लोगों के दिलों को उनकी तरफ़ माएल कर और उन्हें तरह तरह के फलों से रोज़ी अता कर ताकि ये लोग (तेरा) शुक्र करें। (37)

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ

ऐ मेरे रब मुझे और मेरी औलाद को नमाज़ क़ायम करने वाला बना, ऐ रब हमारी दुआओं को कुबूल कर ले। ऐ हमारे रब तू मेरी, मेरे वालिदैन और तमाम अहले ईमान की मग़फ़िरत फ़रमा जिस दिन हिसाब किताब होगा। (40, 41)

पारा (14) रुबमा

इस पारे में दो हिस्से हैं-

- (1) सूरह अल हिज्र मुकम्मल
- (2) सूरह अन नहल मुकम्मल

(1) सूरह (015) अल हिज्र मुकम्मल

(i) कुफ़र की ख्वाहिश

आखिरत में जब कुफ़र मुसलमानों को मज़े व ऐश में और खुद को अज़ाब में देखेंगे तो यह ख्वाहिश करेंगे कि काश वह भी दुनिया में मुसलमान हो गए होते। (2)

(ii) कुरआन की हिफ़ाज़त

अल्लाह तआला ने क़यामत तक के लिए कुरआन की हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी ली है।

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ

"हमने ही कुरआन को नाज़िल किया है और हम ही इसकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं" (आयत 09)

(iii) इंसान और जिन्नात की तखलीक़

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَلٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ وَالْجَانَّ خَلَقْنَاهُ مِن قَبْلُ مِن نَّارِ السُّمُومِ

अल्लाह तआला ने इंसान को खनखनाती हुई मिट्टी से और जिन्नात को भड़कती हुई आग से पैदा किया। फ़रिश्तों ने आदम को सज्दा किया। शैतान सज्दा न करने की वजह से मरदूद हो (धुत्कार दिया) गया। उसने क़यामत तक की ज़िंदगी की मुहलत मांगी और इंसानों को गुमराह करने की क़सम खाली। (26, 39)

(iv) तीन वाक़िआत

(1) इब्राहीम अलैहिस्सलाम को फ़रिश्तों ने आकर बेटे (इस्हाक़) की खुशख़बरी सुनाई। उस वक़्त उनकी पत्नी बहुत बूढ़ी थी, वास्तव में यह pregnancy की उम्र न थी इसलिए आप को बेटे की खुशख़बरी सुन कर खुशी भी हुई और तअज्जुब भी और उनसे भी ज़्यादा तअज्जुब तो उनकी बीवी (सारा) को हुआ उनका तज़क़िरा सूरह 51 अज़ ज़ारियात आयत 29 में आया है

فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهُ فِي صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمٌ

तो (यह सुनते ही) इब्राहीम की बीवी (सारा) चिल्लाती हुई उनके सामने आयी और अपना मुँह पीट लिया। कहने लगीं (ऐ है) एक तो (मैं) बुढ़िया (उस पर) बांझ। फ़रिश्तों ने कहा हम आप को सच्ची खुशख़बरी सुना रहे हैं। आप मायूस न हों तो इब्राहीम ने कहा

وَمَنْ يَقْنُطْ مِنْ رَحْمَةِ رَبِّهِ إِلَّا الضَّالُّونَ

मायूस होना तो बस गुमराहों का काम है (51 से 56)

(2) फ़रिश्ते इब्राहीम अलैहिस्सलाम को खुशख़बरी सुना कर लूत अलैहिस्सलाम के पास पहुंचे और उनसे दरखास्त की कि रातों रात अपने घर वालों (बीवी को छोड़ कर) और तमाम अहले ईमान को साथ लेकर इस बस्ती से निकल जाएं क्योंकि आपकी बस्ती के लोग सरकशी में हद से आगे बढ़ गए हैं इसलिए अल्लाह तआला ने उनके नापाक वजूद से ज़मीन को पाक करने का फैसला कर लिया है, सुबह होते होते उनकी जड़ काट दी जाएगी। क़ौमे लूत का एक भयानक जुर्म यह था कि वह औरतों को छोड़ कर मर्दों से अपनी ख़ाहिशात पूरी करते थे यानी Homosexual समलैंगिक जैसी गंदगी के शिकार थे इसलिए जब अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को खूबसूरत और हसीन नौजवानों की शक़ल में भेजा तो वह उनके साथ ज़्यादती करने की कोशिश करने लगे। लूत अलैहिस्सलाम डरे लेकिन फ़रिश्तों ने उनसे कहा, यह हम तक पहुंच ही नहीं सकेंगे। उसके बाद फ़रिश्ते चले गए और लूत अलैहिस्सलाम अहले ईमान के साथ बस्ती से निकल गए। और काफ़िरों पर नामनेट पत्थर बरसाए गए और इस क़ौम को अल्लाह ने लोगों के लिए निशाने इबरत बना दिया। मृत सागर (dead sea) वही है जिसमें आज भी कोई जीव जंतु नहीं पाए जाते। (57 से 75)

(3) इस सूरह का नाम अल हिज़्र है। हिज़्र वालों से मुराद क़ौमे समूद ही हैं। यह लोग जुल्म व ज़्यादती के रास्ते पर चल पड़े थे और बार बार समझाने के बावजूद बुत परस्ती को छोड़ने के लिए किसी क़ीमत पर तैयार न थे, उन्हें मुख़्तलिफ़ मोअजिज़ात दिखाए गए। ख़ास तौर से चट्टान से ऊंटनी के जन्म लेने का वाक़िआ में ही कई मोअजिज़े शामिल थे। ऊंटनी का

चट्टान से निकलना, निकलते ही गर्भवती (pregnant) होना, उसके आकार की असाधारण वृद्धि, बहुत ज़्यादा दूध देने वाली होना। लेकिन उनकी क्रौम बड़ी बदबख़्त निकली। मोअजिज़े की क़द्र करने के बजाय उल्टे ऊंटनी की दुश्मन हो गई। सालेह अलैहिस्सलाम के समझाने और मना करने के बावजूद एक दिन मौक़ा मिलते ही ऊंटनी को मार डाला। फिर क्या था यह भी अज़ाब की लपेट में आ गए। (80 से 84)

(v) मक्का के मुशरिकीन और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली दी गई है कि आप मुशरिकीन की बातों से परेशान न हों बल्कि अपने रब की हम्द व तस्बीह बयान करते रहें, सज्दा करने वालों में शामिल हो जाएं और ज़िंदगी की आखिरी सांस तक अपने रब की इबादत करते रहें। (94 से 99)

(2) सूरह (016) अन नहल मुकम्मल

(i) तौहीद

अल्लाह ने ज़मीन को फ़र्श और आसमान को छत बनाया, इंसान को नुत्फ़े से पैदा किया, चौपाए पैदा किए जिन के मुख़लिफ़ फ़ायदे हैं जिस से तुम गर्म कपड़े, गोबर और ख़ून के बीच से शुद्ध और पौष्टिक दूध और गोشت हासिल करते हो, उसी ने घोड़े, ख़च्चर और गधे पैदा किए जो बोझ ढोने और सामान को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचाने के काम आते हैं, अल्लाह बारिश बरसाता है फिर उस बारिश से ज़ैतून, ख़जूर, अंगूर और दूसरे बहुत से स्वादिष्ट फल, मेवे और अनाज वही पैदा करता है, रात और दिन, सूरज और चांद, और सितारों को उसी ने इंसान की ख़िदमत के लिए मुक़र्रर का रखा है। नदियों से ताज़ा गोشت और ज़ेवर प्रदान (provide) करता है। ज़मीन को मौत के बाद ज़िन्दगी, समुद्र में कश्तियाँ और जहाज़ उसी के हुक्म से चलते हैं। इंसान की ज़िन्दगी और मौत उसी के क़ब्ज़े में है। वही बेटे और पोतों के ज़रिए इंसानी नस्ल को आगे बढ़ाता है। बच्चे का मां के पेट से निकलना, उसकी आंख, नाक, कान और दीगर चीज़ें, परिंदों का आसमान में उड़ना, घर को सुकून, जंग के मैदान में जानवरों की खालों का घर, तमाम मख़लूक़ का साया (shadow), पहाड़ों की गुफायें, गर्मी ठण्ड और जंगों से महफूज़ रखने वाला लिबास यह सब अल्लाह की ही कारीगरी है। इसलिए अगर अल्लाह की नेअमतों को गिनना (counting) चाहो तो गिन नहीं सकते मगर इंसान बेशुमार इनआमात और एहसानात का

शुक्र अदा करने के बजाय अल्लाह के मुक़ाबले में खड़ा होना चाहता है। (3 से 19, 65 से 67, 72, 78 से 81)

(ii) रिसालत

रसूल हमेशा इंसान ही आते हैं अगर यक़ीन नहीं आता तो इंकार करने वाले ज़रा अपने उलेमा से पूछ लें कि पहले जो रसूल आये थे क्या वह इंसान नहीं थे। फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली दी गई कि आप सब्र कीजिए, कुफ़्रार की चालों से ग़मगीन न हों, और दिलों में तंगी महसूस न करें। बेशक अल्लाह तक़्वा इख़्तियार करने वालों और भलाई करने वालों के साथ है। (43, 127, 128)

(iii) शहद की मक्खी

अरबी में शहद की मक्खी को "नहल" कहते हैं इसी कारण सूरह का नाम "नहल" रखा गया है। शहद की मक्खी का system बड़ा अजीब व ग़रीब होता है। यह अल्लाह के हुक्म से पहाड़ों, दरख़्तों में अपना छत्ता बनाती है। यह मुख़लिफ़ किस्म के फलों और फूलों का रस चूसती है फिर पेट से शहद निकालती है जिसके रंग मुख़लिफ़ होते हैं और इसमें अल्लाह ने इंसानों की बीमारियों की शिफ़ा रखी है। (67, 68)

(iv) इब्राहीम अलैहिस्सलाम की तारीफ़ (प्रशंसा)

इब्राहीम अलैहिस्सलाम पूरी ज़िंदगी तौहीद पर जमे रहे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मिल्लत की पैरवी करने का हुक्म दिया गया है क्योंकि इब्राहीम अलैहिस्सलाम यहूदी या ईसाई न थे, मुशरिक न थे, बल्कि सच्चे और पक्के मुसलमान थे। अल्लाह के ख़ालिस बंदे थे, अल्लाह की नेअमतों पर शुक्र अदा करने वाले थे, उन्हें अल्लाह ने चुन लिया था, वह सिराते मुस्तक़ीम पर चलने और उसी की दावत देने वाले थे। (120, 123)

(v) दावत का तरीक़ा

दावत देते हुए मुख़लिफ़ दुशवार गुज़ार मराहिल से गुज़रना पड़ता है कभी कभी गुस्सा और झुंझलाहट भी होती है इसलिए कुरआन में बताया गया है

أَدْعُ إِلَى سَبِيلِ رَبِّكَ بِالْحُكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَدِلْهُمْ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ

दावत दो अपने रब के रास्ते की तरफ़ हिकमत और उमद: नसीहत के साथ और बहस में वह अंदाज़ इख़्तियार करो जो सबसे बेहतर हो। (125)

(vi) कुछ अहम बातें

◆ अगर अल्लाह लोगों को उनकी ज़्यादती पर फ़ौरन ही पकड़ना शुरू कर दे तो इस ज़मीन पर कोई जानदार बाक़ी न रहे। लेकिन वह एक तयशुदा वक़्त तक मोहलत देता है, फिर जब वह वक़्त आ जाता है तो उससे कोई एक घड़ी भर भी आगे-पीछे नहीं हो सकता। (आयत 61)

◆ إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَنِ وَإِيتَايَ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ الْفَحْشَاءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ

बेशक अल्लाह इन्साफ़ और भलाई करने और करीबी लोगों को (कुछ) देने का हुक्म देता है और बदकारी और बेहयाई की हरकतों और सरकशी करने से मना करता है (और) तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम नसीहत हासिल करो। (आयत 90)

यह आयत जुमा के दूसरे ख़ुत्बे में बिल्कुल आख़िर में अक्सर पढ़ी जाती है। इसे उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने शुरू किया था।

◆ मर्द हो या औरत, जो भी ईमान वाला अच्छा काम करेगा उसे हम दुनिया में पाकीज़ा ज़िन्दगी बसर कराएँगे और (आख़िरत में) ऐसे लोगों को बदला उनके बेहतरीन आमाल के मुताबिक़ देंगे। (आयत 97)

◆ فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ

जब कुरआन पढ़ो तो "औज़ुबिल्लाहि मिनस शैतानिर रजीम" (मैं शैतान मरदूद से अल्लाह की पनाह मांगता हूँ) पढ़ो। (आयत 98)

◆ إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخَنِزِيرِ وَمَا أُهْلَ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ فَمَنْ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ

तुम पर मुरदार, ख़ून, सूअर का गोشت और वह जिस पर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया जाए हराम किया है फिर जो शख्स (भूख के कारण) मजबूर हो ख़ुदा से सरतापी (नाफरमानी) करने वाला न हो और न (हद से) बढ़ने वाला हो और (हराम खाए) तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। (आयत 115)

पारा (15) सुब्हानल लज़ी

इस पारे में दो हिस्से हैं-

- (1) सूरह बनी इस्राइल (अल इसरा) मुकम्मल
- (2) सूरह अल कहफ़ का ज़्यादा तर हिस्सा

(1) सूरह (017) बनी इस्राइल मुकम्मल

(i) मेराज कब हुई?

इस के बारे में विभिन्न राय पाई जाती है:

- (1) जिस वर्ष आप नबी बनाये गए उसी वर्ष मेराज भी हुई। (इब्ने जरीर तबरी)
- (2) नबूवत के पांचवें वर्ष मेराज हुई। (इमाम नववी और इमाम कुरतबी)
- (3) नबूवत के दसवें वर्ष 27 रजब को हुई। (क़ाज़ी सुलैमान मंसूरपुरी, रहमतुल लिल आआलमीन पेज 106 कुतुब ख़ाना एज़ाज़िया देवबंद 2017)
- (4) हिजरत से 16 महीने पहले यानी नबूवत के बारहवें वर्ष रमज़ान के महीने में हुई।
- (5) हिजरत से एक साल दो माह पहले यानी नबूवत के तेरहवीं साल मुहर्रम में हुई।
- (6) हिजरत से एक साल पहले यानी नबूवत के तेरहवीं साल रबीउल अव्वल के महीने में हुई।

(ii) मेराज का वाक़िआ ख़्वाब (सपने) में पेश आया या बेदारी (जागने) में?

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम यहां से गये या अपनी जगह बैठे बैठे केवल रूहानी तौर पर ही आप को यह observation कराया गया?

इन सवालों का जवाब कुरआन मजीद के अल्फ़ाज़ ख़ुद दे रहे हैं। سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَىٰ से सूरह का आरंभ करना ख़ुद इस बात का सुबूत है कि यह कोई बहुत बड़ा ख़ारिके आदत वाक़िआ (चमत्कार) था जो अल्लाह तआला की ग़ैर महदूद कुदरत से ज़ाहिर हुआ यहां ग़ौर

करने की बात यह है कि ख़्वाब में किसी शख्स का इस तरह की चीज़ें देख लेना, या कश्फ़ के तौर पर देखना यह महत्त्व नहीं रखता कि उसे बयान करने के लिए इस प्रस्तावना (preface) की ज़रूरत हो

"तमाम कमियों और ऐब से पाक है वह ज़ात जिसने अपने बन्दे को एक रात मस्जिदे हराम (खान ए काबा) से मस्जिदे अक़सा (आसमानी मस्जिद) तक की सैर कराई" (1) जिस्मानी सफ़र माने बग़ैर कोई चारा नहीं। यह केवल एक रूहानी तजुर्बा ही नहीं था बल्कि एक जिस्मानी सफ़र और आंखों देखा मुशाहिदा था जो अल्लाह तआला ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कराया।

मस्जिद हराम से मस्जिदे अक़सा की दूरी 3983 किलोमीटर है अब अगर एक रात में हवाई जहाज़ के बग़ैर मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक़सा जाना और आना संभव था तो उन दूसरी तफ़सीलात ही को नामुमकिन कह कर क्यों रद्द (reject) कर दिया जाय जो हदीस में बयान हुई हैं? मुमकिन और नामुमकिन की बहस तो उस सूरत में पैदा होती है जब किसी मख़लूक़ का अपनी मर्ज़ी से किसी काम के करने का मामला हो लेकिन जब यह बयान हो कि अल्लाह ने फ़ुलां काम किया तो फिर इम्क़ान का सवाल वही शख्स उठा सकता है जिसे अल्लाह की कुदरत का यक़ीन न हो।

(iii) बनी इस्राईल का फ़ितना व फ़साद

बनी इस्राईल को पहले से बता दिया गया था कि तुम ज़मीन में दो बार फ़ितना व फ़साद करोगे। चुनाँचे पहली बार 586 ईसा पूर्व में बुख्ते नसर को उनपर मुसल्लत कर दिया गया, उसने सल्लतनत की ईंट से ईंट बजा दी, फिर अल्लाह ने बनी इस्राईल को सल्लतनत दी लेकिन यह नहीं सुधरे और ज़करिया और यहया अलैहिमुस्सलाम को शहीद कर दिया और ईसा अलैहिमुस्सलाम को क़त्ल करने की नापाक साज़िश की तो दूसरी बार 70 ई० में टाइटस (Titus) को मुसल्लत कर दिया जिसने तलवार के ज़ोर से यरूशलम को जीत लिया और ख़ूब तबाही मचाई। इस मौक़े पर क़त्ले-आम में 133000 लोग मारे गए, 67000 गुलाम बनाए गए। उस वक़्त से यह मुख़लिफ़ इलाक़ों में बिखरे हुए थे कि 1948 में ब्रिटेन ने अरबों में इख़्तेलाफ़ पैदा कर के यहूदियों को यरूशलम में आबाद कर दिया।

(iv) इस्लामी अख़लाक़ व आदाब

- ◆ शिर्क से बचो, अल्लाह के इलावा किसी की इबादत न करो।
- ◆ माता पिता के साथ अच्छा बर्ताव, उन्हें उफ़ तक मत कहो, झिड़को भी मत, मिलो तो झुक कर मिलो, नरमी से गुफ़्तगू करो, उनके लिए अल्लाह से दुआ करते रहो رَبِّ ارْحَمْهُمَا

كَمَا رَبَّيْنِي صَغِيرًا "ऐ मेरे रब तू उन दोनों पर रहम कर क्योंकि उन्होंने मुझे बचपन में बड़े प्यार से पाला है"

- ◆ रिश्तेदार, मिस्कीन, मुसाफ़िर और गरीबों को उनका हक़ दो उनके साथ नरमी से पेश आओ।
- ◆ फ़िज़ूल खर्ची न करो फ़िज़ूलखर्च शैतान के भाई हैं।
- ◆ न हाथ इतना फैलाकर दो कि बाद में पछताना पड़े और न इतनी कंजूसी करो हाथ को अपनी गर्दन से ही बांध लो।
- ◆ अपनी औलाद को मुफ़लिसी (गुरबत) के डर से क़त्ल मत करो क्योंकि रोज़ी देने वाला अल्लाह है।
- ◆ ज़िना के क़रीब भी मत जाओ।
- ◆ किसी का नाहक़ क़त्ल न करो।
- ◆ यतीम का माल हराम तरीक़े से न खाओ।
- ◆ जो वादा भी करो उसे पूरा करो।
- ◆ नाप-तौल में कमी ज़्यादती न करो।
- ◆ जिस चीज़ के बारे में इल्म न हो उसके पीछे न पड़ो क्योंकि कान आंख, और दिल सभी से क़यामत के दिन सवाल किया जाएगा।
- ◆ ज़मीन पर अकड़ कर न चलो।

(22 से 38)

(v) कुछ अहम बातें

- ◆ शैतान इंसान का खुला दुश्मन है, उसका काम तो बस ज़मीन में बिगाड़ और फ़साद फैलाना है। (53)
- ◆ इंसान इस दुनिया की सबसे अफ़ज़ल मख़लूक़ है। (70)
- ◆ सात आसमान और ज़मीन और जितनी भी चीज़ें हैं सब अल्लाह की प्रशंसा में लगी हुई हैं।

- ◆ इंसान की हड्डियां कितनी पुरानी और चूर चूर ही क्यों न हो जायें बल्कि वह पत्थर, लोहा, या ऐसी ही कोई और चीज़ क्यों न हो जाएं जैसा कि इंसान के दिमाग में तस्वीर उभरती हैं तो भी उन्हें क़यामत के दिन ज़रूर उठा खड़ा किया जाएगा। (49 से 51)
- ◆ कुरआन लोगों के लिए हिदायत भी है और शिफ़ा भी है। (82)
- ◆ तमाम इंसानों की गर्दन में उनका आमाल नामा लटका हुआ है जो क़यामत के दिन खुला हुआ मिलेगा और यही अपने अंजाम के फ़ैसले के लिए काफ़ी होगा। (13, 14)
- ◆ रूह क्या है? इसका इल्म सिर्फ़ अल्लाह को है। (85)
- ◆ कुरआन की अज़मत, उसके नुज़ूल के मक़ासिद, उसका मोअजिज़ा होना, कुरआन के थोड़ा थोड़ा नाज़िल होने की हिकमत,
- ◆ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तहज़ुद का हुक्म, मूसा अलैहिस्सलाम और फ़िरऔन का क़िस्सा, अल्लाह तआला के अस्मा ए हुस्ना (अच्छे नाम) वग़ैरह

(2) सूरह (018) अल कहफ़

(i) सूरह के नाज़िल होने का कारण

यह सूरह मक्का के मुशरिकों के तीन सवालों के जवाब में उतरी है जो उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से किये थे

- (1) असहाबे-कहफ़ (गुफावाले) कौन थे?
- (2) ख़िज़र के क़िस्से की हक़ीक़त क्या है?
- (3) जुल-करनैन का क्या क़िस्सा है?

(1) असहाबे-कहफ़ (गुफावाले) कौन थे?

यह कुछ मोमिन नौजवान थे जिन्हें उस वक़्त का बादशाह दक़यानूस बुत परस्ती पर मजबूर करता था। वह हर उस व्यक्ति को क़त्ल कर देता था जो उसकी शिरकिया दावत को मानने

से इंकार कर देता था। इन नौजवानों को एक तरफ़ माल व दौलत के ढेर, ऊंचे ओहदों का लालच, और जीवन स्तर (standard of life) को बेहतर बनाने की पेशकश की गई। तो दूसरी तरफ़ डराया धमकाया गया और जान से मारने की धमकी दी गई लेकिन उन नौजवानों ने हर पेशकश को ठुकरा दिया और ईमान की हिफ़ाज़त की खातिर शहर से बहुत दूर निकल गये और एक पहाड़ की गुफा तक पहुंच गए। रास्ते में एक कुत्ता भी उनके साथ शामिल हो गया। उन्होंने उस गुफा में पनाह लेने का इरादा किया। जब वह गुफा में दाखिल हो गए तो अल्लाह तआला ने उन्हें गहरी नींद सुला दिया। यहां तक कि वह तीन सौ साल से ज़्यादा सोते रहे। जब नींद खुली तो खाने की फ़िक्र हुई। एक को खाना लेने के लिए बाज़ार भेजा। खाना लेकर जब उसने सिक्का दिया तो दुकानदार ने सिक्का लेने से इंकार कर दिया और इल्ज़ाम लगाया कि सिक्का खोटा है। उस शख्स ने कहा अभी कल ही तो हम यहां से गये थे एक दिन में यह क्या हो गया? उसने जब बादशाह का नाम लिया तो सब हैरत में पड़ गए और मामला उस समय के बादशाह थ्यूडोर्स (Theodosius) के सामने पेश हुआ। जब उस शख्स ने तमाम तफ़सीलात से आगाह किया तो उसे पहचान लिया गया। अब हालात बदल चुके थे। अहले तौहीद हुक्मरां थे, मुशरिकों की हुक्मत खत्म हुए भी काफ़ी वक़्त हो गया था। इसलिए यह नौजवान बस्ती वालों की नज़र में हीरो बन गए। उस समय के बादशाह Theodosius ने गुफा में पनाह लेने वाले उन ततमाम लोगों से मुलाकात की और उनसे बस्ती में आ कर रहने की गुज़ारिश की लेकिन उन लोगों ने कहा हमें नींद आ रही है और वह दोबारा हमेशा के लिए सो गए। (9 से 28)

(2) ख़िज़र के क्रिस्से की हक़ीक़त क्या है?

(3) जुल-करनैन का क्या क्रिस्सा है?

मूसा और ख़िज़र अलैहिमस्सलाम का वाक़िआ और जुल करनैनन का वाक़िआ पारा 16 के तहत होगा।

(ii) शिर्क और घमंड का अंजाम

दो व्यक्ति थे जिनमें से एक के पास खुजूर और अंगूर के बहुत से बाग़ थे और उनके बीच खेती होती थी, ख़ूब फल आते। बाग़ के बीच एक नहर भी जारी थी। एक दिन घमंड में बाग़ के मालिक ने पड़ोसी से कहा मुझे तो यह नहीं लगता कि यह बाग़ कभी नष्ट होगा और कभी क़यामत आएगी? और अगर अपने रब के पास ले जाया भी गया तो इससे शानदार जगह मुझे मिलकर रहेगी। उसके साथी ने कहा क्या तुम उस ज़ात का इंकार कर रहे हो जिसने तुझे मिट्टी से फिर नुत्फ़े से पैदा किया फिर अच्छा ख़ासा इंसान बना कर खड़ा कर दिया। मेरा रब तो अल्लाह ही है और मैं अपने रब के साथ कभी किसी को शरीक नहीं करूंगा। जब तुम खेत में दाखिल हुए तो "माशाल्लाह और लाहौल वला कुव्वत इल्ला

बिल्लाह" क्यों न कहा? अगर मेरे पास तुमसे कम माल व औलाद है तो क्या ख़बर अल्लाह तुम्हारे बाग़ से बेहतर मुझे बाग़ अता कर दें और तेरे बाग़ पर कोई आसमानी बला आ जाय और यह समतल मैदान बन जाय या उसका पानी तह में चला जाए (तो तुम उसको निकाल नहीं सकोगे) अंततः वही हुआ जब वह अपने बाग़ में पहुंचा तो देखा उसका बाग़ ऊंधें मुंह उल्टा पड़ा था। वह अपनी लगाई हुई लागत पर हाथ मलता रह गया और पुकार उठा: "يَلَيْتَنِي لَمْ أَشْرِكْ بِرَبِّي أَحَدًا" काश मैंने अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं किया होता" (32 से 42)

(iii) कुछ अहम बातें

- ◆ किसी काम को करने पर इंशा अल्लाह ان شاء الله और काम होने पर माशाअल्लाह ما شاء الله ज़रूर कहा जाय क्योंकि कि किसी काम को पूरा करना अल्लाह की तौफ़ीक़ के बग़ैर संभव नहीं। (24)
- ◆ दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल ऐसी है जैसे आसमान से पानी बरसा ज़मीन हरी भरी हो गई। कुछ वक़्त के बाद सब कुछ सूख कर चूरा चूरा हो गया। (45)
- ◆ माल व औलाद दुनियावी ज़िंदगी का सामान हैं। आख़िरत में तो नेक अमल ही काम आएगा (46)

पारा (16) क़ाल अलम

इस पारे में तीन हिस्से हैं-

- (1) सूरह (018) अल कहफ़ का बाक़ी हिस्सा
- (2) सूरह (019) मरयम मुकम्मल
- (3) सूरह (020) ताहा मुकम्मल

(1) सूरह (018) अल कहफ़ का बाक़ी हिस्सा

(2) ख़िज़र के क़िस्से की हक़ीक़त क्या है?

(यह वाक़िआ पंद्रहवीं पारे के आख़िर से शुरू हो कर सोलहवीं पारे के पहले पेज तक है)

दरअसल हुआ यूं कि एक दिन मूसा अलैहिस्सलाम ने ख़ुल्बा दिया, उसी दौरान आप से पूछा गया लोगों में सबसे ज़्यादा इल्म वाला कौन है? आप ने फ़रमाया "मैं" यह बात अल्लाह को नागवार गुज़री और उनकी तरफ़ अल्लाह ने वही وحی भेजी कि मेरे बंदों में से एक बंदा दरियाओं के संगम (जहां फ़ारस ईरान और रूम के समुद्र मिलते हैं) पर मिलेगा वह तुझसे बड़ा आलिम है। मूसा अलैहिस्सलाम ने पूछा मेरे रब उन से मेरी मुलाक़ात कैसे होगी? हुक्म हुआ एक मछली ज़नबील में रख लो, जहां यह मछली ज़िंदा होकर निकल भागे वह बंदा तुम्हें वहीं मिलेगा। मूसा अलैहिस्सलाम ने यूशा बिन नून को साथ लिया, एक मछली ज़नबील में रखी और तलाश में निकल पड़े। जब वह एक चट्टान के पास आराम के लिए रुके और मूसा अलैहिस्सलाम को नींद आ गयी वह मछली ज़िंदा होकर समुद्र में निकल भागी। फिर वह वहां से उठ कर चल दिए, रात भर चलते रहे। जब सुबह हुई तो मूसा अलैहिस्सलाम ने साथी से कहा नाश्ता लाओ, तभी उनके साथी ने कहा कि "जब हम चट्टान के पास ठहरे थे तो मछली ज़िंदा होकर पानी में चली गयी थी लेकिन शैतान ने मुझे भुला दिया कि मैं आप से इसका तज़क़िरा करता, यह सुन कर मूसा अलैहिस्सलाम बोले " हमें उसी जगह की तो तलाश थी " चुनाँचे वह वापस हुए। जब उस चट्टान के करीब पहुंचे तो एक शख्स को कपड़ा ओढ़े हुए मौजूद पाया। मूसा अलैहिस्सलाम ने उन्हें सलाम किया और कहा मैं मूसा हूं। क्या मैं आप के साथ चल सकता हूं? ताकि आप मुझे वह बातें सिखाएं जो अल्लाह ने ख़ास तौर पर आप को सिखाई हैं। ख़िज़र अलैहिस्सलाम बोले तुम मेरे साथ सब्र नहीं कर सकोगे। ऐ मूसा मुझे अल्लाह ने वह इल्म दिया है जो तुम नहीं जानते और तुमको जो इल्म दिया है उसे

मैं नहीं जानता। मूसा ने कहा इन शा अल्लाह आप मुझे सब्र करने वाला पाएंगे और किसी भी मामले में आप की नाफ़रमानी नहीं करूंगा। ख़िज़र अलैहिस्सलाम ने वादा लिया कि जबतक मैं खुद ज़िक्र न करूं आप मुझसे कोई सवाल नहीं करेंगे फिर दोनों समुद्र के किनारे किनारे पैदल चले, रास्ते में एक कश्ती मिली उन्होंने ख़िज़र अलैहिस्सलाम को पहचान कर दोनों को बेग़ैर किराया के बिठा लिया। इतने में एक चिड़िया आई और कश्ती के किनारे पर बैठ गई। फिर समुद्र में उसने एक या दो चोंचें मारी। उसे देखकर ख़िज़र अलैहिस्सलाम बोले "ऐ मूसा मेरे और तुम्हारे इल्म ने अल्लाह के इल्म से इतना भी कम न किया होगा जितना इस चिड़िया ने समुद्र से। फिर ख़िज़र अलैहिस्सलाम ने कश्ती से उतरते ही उसमें सूराख़ कर दिया। मूसा अलैहिस्सलाम ने फ़ौरन पूछा "इन लोगों ने हमें किराया लिए बेग़ैर सवार किया और आपने सूराख़ कर दिया कि यह डूब ही जाएं। ख़िज़र अलैहिस्सलाम ने याद दिलाया कि मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ सब्र नहीं कर सकोगे? मूसा ने कहा आप मेरी भूल पर न पकड़ें। दोनों आगे बढ़े देखा एक लड़का बच्चों के साथ खेल रहा है। ख़िज़र अलैहिस्सलाम ने उसे क़त्ल कर दिया। मूसा अलैहिस्सलाम से बर्दाश्त नहीं हुआ, बोल पड़े, आप ने एक बे गुनाह बच्चे को नाहक़ मार डाला। ख़िज़र अलैहिस्सलाम ने फिर याद दिलाया कि मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ सब्र नहीं कर सकोगे। मूसा ने कहा, अब अगर इसके बाद कोई सवाल करूं तो अपने साथ मुझे न रखें। फिर दोनों आगे बढ़े यहां तक कि एक बस्ती से गुज़र हुआ। उनसे अपना मेहमान बनाने की दरखास्त की लेकिन बस्ती वालों ने मेहमान बनाने से इंकार कर दिया। वहां उन्हें एक दीवार मिली जी बिल्कुल गिरने के करीब थी ख़िज़र अलैहिस्सलाम ने अपने हाथ के इशारे से उसे सीधा कर दिया। मूसा अलैहिस्सलाम से फिर बर्दाश्त नहीं हुआ और बोल पड़े कि "अगर आप चाहते तो इसकी उजरत ले सकते थे"। ख़िज़र अलैहिस्सलाम ने कहा अब हमारे दरमियान जुदाई का वक़्त आगया है। (अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया: "अल्लाह मूसा पर रहम करे कुछ देर और सब्र करते तो कुछ और वाक़िआत (More events) हमारे सामने आते" सही बुखारी हदीस 122/ किताबुल इल्म के तहत भी देखा जा सकता है) उसके बाद ख़िज़र अलैहिस्सलाम ने तीनों सवालों के जवाब दिए:

वह कश्ती (जिसमें मैंने सूराख़ कर दिया था) चन्द ग़रीबों की थी जो दरिया में मेहनत मज़दूरी कर के गुज़ारा करते थे मैंने उसे ऐबदार बना दिया क्योंकि उनके पीछे एक ज़ालिम बादशाह था जो तमाम कश्तियां ज़बरदस्ती बेगार में पकड़ लेता था। वह लड़का जिसको मैंने क़त्ल कर दिया था उसके माँ बाप दोनों मोमिन और नेक हैं तो मुझे ये अन्देशा हुआ कि यह कहीं उनको अपने सरकशी और कुफ़्र में फँसा न दे। हमारी ख़्वाहिश है कि उनका परवरदिगार इसके बदले में ऐसी औलाद अता फ़रमाए जो उससे पाक नफ़सी और पाक क़राबत में बेहतर हो। और वह दीवार (जिसे मैंने खड़ा कर दिया) शहर के दो यतीम लड़कों की थी और उसके नीचे ख़ज़ाना दफ़न था। उन लड़कों का बाप एक नेक आदमी था तो तुम्हारे परवरदिगार ने चाहा कि दोनों लड़के अपनी जवानी को पहुँचे तो तुम्हारे

परवरदिगार की मेहरबानी से अपना खज़ाना निकाल लें और मैंने कुछ भी अपनी मर्जी से नहीं किया। यह हकीकत है उन वाक़िआत की जिन पर आप सब्र न कर सके। (60 से 82)

(3) जुल-करनैन का क्या वाक़िआ है?

जुल-करनैन बड़ा ज़बरदस्त, इंसाफ़ पसंद, और नेक बादशाह था जिसकी सल्तनत पूरब से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक फैली हुई थी। वह एक के बाद दूसरा मुल्क अपनी सल्तनत में शामिल करता गया यहां तक कि उसका गुज़र एक ऐसी क़ौम पर हुआ जो एक वहशी क़ौम याजूज माजूज के अत्याचार से पीड़ित थी। जुल-करनैन ने याजूज माजूज पर लोहे की सिलों वाली एक बहुत ही मज़बूत दीवार तामीर करा दी। अब वह क़यामत के क़रीब ही दीवार से बाहर निकल सकेंगे। याजूज माजूज का बाहर निकलना क़यामत की दस बड़ी निशानियों में से एक है। (83 से 98)

(iii) कुछ अहम बातें

- किसी के मुसलमान होने के लिए सिर्फ़ ईमान ही काफ़ी नहीं बल्कि नेक अमल होना भी ज़रूरी है। (30)
- ऐ नबी! कह दीजिए कि अगर समुद्र मेरे रब की बातें लिखने के लिए रौशनाई बन जाए तो वह ख़त्म हो जाए, मगर मेरे रब की बातें ख़त्म न हों, बल्कि अगर उतनी ही रौशनाई हम और ले आएँ तो वह भी काफ़ी न हो। (आयत 109)

(2) सूरह (019) मरयम मुकम्मल

(i) अंबिया का ज़िक्र

(1) सूरह मरयम में कुल बारह अंबिया ए कराम का तज़क़िरा आया है।

- (1) आदम
- (2) नूह
- (3) इदरीस
- (4) इब्राहीम

- (5) इस्माईल
- (6) इस्हाक़
- (7) याकूब
- (8) मूसा
- (9) हारून
- (10) ज़करिया
- (11) यहया
- (12) ईसा अलैहुस्सलाम

इनमें से तीन का ज़िक्र ज़रा तफ़्सील से बयान हुआ है।

(1) यहया अलैहिस्सलाम का जन्म

ज़करिया अलैहिस्सलाम और उनकी बीवी के यहां बुढ़ापे में औलाद हुई और नाम यहया भी वही وحی के ज़रिए ही decide किया गया। यहया अलैहिस्सलाम नबी बनाये गए। इस वाक़िआ से यह सबक़ मिलता है कि इंसान को कभी मायूस नहीं होना चाहिए। अपने रब से हमेशा दुआ करते रहना चाहिए। (2 से 15)

(2) ईसा अलैहिस्सलाम का जन्म

अल्लाह ने ईसा को बेग़ैर बाप के पैदा किया, क़ौम ने इल्ज़ाम लगाया तो मां की गोद से ही ईसा का बात करना दूसरे मोअजिज़े (miracle) के तौर पर ज़ाहिर हुआ। वह बोल पड़े कि "मैं अल्लाह का बंदा हूँ। अल्लाह ने मुझे किताब दी और नबी बनाया है, मुझे जीते जी नमाज़ और ज़कात अदा करने का आदेश दिया है और मुझे अपनी माता का फ़रमाबरदार भी बनाया है। (16 से 33)

(3) इब्राहीम अलैहिस्सलाम की अपने वालिद को दावत

ऐ मेरे प्यारे अब्बा जान, आप ऐसी चीज़ों को क्यों पूजते हैं जो न सुनते हैं, न देखते हैं, न कोई फ़ायदा पहुंचाते हैं। मेरे पास अल्लाह का दिया हुआ इल्म है जो आपके पास नहीं है इसलिए आप मेरी बात मान लें। शैतान के पीछे न चलें क्योंकि शैतान तो अपने रब का नाशुकरा है। मुझे इस बात का डर है कि कहीं आप पर अल्लाह का अज़ाब न आ जाय।

इब्राहीम के बाप ने न सिर्फ़ यह कि उनकी बात न मानी बल्कि पत्थर मारने और देश निकाला देने की धमकी भी दी लेकिन इब्राहीम अलैहिस्सलाम इलाही मिशन पर जमे रहे और घर बार और वतन सब कुछ छोड़ना मंज़ूर कर लिया। (41 से 50)

(ii) मौत के बाद ज़िंदगी

जो लोग कहते हैं कि जब वह मर खप जाएंगे तो भला दोबारा कैसे ज़िंदा होंगे। अल्लाह तआला ने उसका जवाब देते हुए कहा है कि इंसान जब कुछ भी न था तब उसे पैदा कर दिया तो दोबारा पैदा करना कौन सी बड़ी और अनोखी बात है। हम ज़रूर इकट्ठा करेंगे और शैतान को भी हाज़िर करेंगे और बताएंगे कि जहन्नम का ज़्यादा मुस्तहिक कौन है। (66 से 74)

(iii) किसी को अल्लाह का बेटा कहना भयानक जुर्म है

लोग कहते हैं कि रहमान ने बेटा बनाया है उन्होंने ऐसा झूठ घड़ लिया है, करीब है कि आसमान गिर पड़े, ज़मीन फट जाए और पहाड़ टुकड़े टुकड़े होकर गिर पड़ें। (88 से 94)

(iv) कुछ अहम बातें

- मायूसी कुफ़्र है, औलाद और तमाम आवश्यकताओं के लिए केवल अल्लाह की तरफ़ पलटना चाहिए। (4)
- दावत का काम किसी भी समय रुकना नहीं चाहिए चाहे कितनी ही परेशानियों का सामना क्यों न करना पड़े।
- ईसा अलैहिस्सलाम अल्लाह के बंदे और रसूल हैं उनको अल्लाह ने बगैर बाप के पैदा किया। (30)
- इस समय दुनिया में जितने भी इंसान हैं सभी उनकी औलाद हैं जो नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती (मनु की नौका) में सवार थे। (58)
- अक्सर ऐसा हुआ है कि नेके लोगों के बाद कुछ ऐसे अधम (नाहंजार) उठे जिन्होंने नमाज़ को छोड़ दिया और अपनी मनमानी की और गुमराही के दलदल में फंसते चले गए। (59)

● मौत के बाद जिंदगी अनिवार्य है जैसे अल्लाह ने इंसान को पहली बार पैदा किया है ऐसे ही मौत के बाद भी ला खड़ा करेगा। शिर्क करने और आखिरत के इंकार के कारण ही बहुत सी प्रसिद्ध क्रोमों दुनिया से यूँ मिट गई जैसे उनका कभी नामोनिशान ही न था। (67)

(3) सूरह (020) ताहा मुकम्मल

- (i) मूसा अलैहिस्सलाम का वाक्फ़िआ
- (ii) आदम अलैहिस्सलाम का वाक्फ़िआ
- (iii) रसूल को तसल्ली

(i) मूसा अलैहिस्सलाम का वाक्फ़िआ

मूसा अलैहिस्सलाम का वाक्फ़िआ इस सूरह में काफ़ी तफ़सील से बयान हुआ है, मूसा अलैहिस्सलाम का समुद्र में डाला जाना, ताबूत का फ़िरऔन के पास पहुंचना, इज्ज़त व एहरतेराम के साथ अपनी मां की तरफ़ लौटाया जाना, फ़िरऔन के घर में पालन पोषण, एक क़िबती का आप के हाथों क़त्ल होना, आप को क़िसास से निजात मिलना, मदयन में पनाह लेना और वहाँ कई वर्ष रहना, मदयन से लौटते हुए आग की तलाश में निकलना, रौशनी देख कर वहाँ जाना और अल्लाह तआला के साथ बातचीत, नबी बनाया जाना, फिर आपके भाई हारून का नबी बनाया जाना, फ़िरऔन के पास जाने का हुक्म, फ़िरऔन के साथ नरमी और उमदह नसीहतों के उसूल के तहत मुबाहिसा, जादूगरों से मुक़ाबला, जादूगरों का ईमान लाना, ईमान लाने पर फ़िरऔन की धमकी लेकिन उनकी साबित क़दमी, रातों रात बनी इस्राईल का मिस्र से निकलना, फ़िरऔन का अपने लश्कर के साथ पीछा करना और समुद्र में डूब जाना, अल्लाह की नेअमतों के मुक़ाबले में बनी इस्राईल का नाशुकरापन, सामिरी का बछड़ा बनाना और बनी इस्राईल की गुमराही, तौरात ले कर मूसा अलैहिस्सलाम की कोहे तूर से वापसी और अपने भाई पर गुस्से का इज़हार, हारून अलैहिस्सलाम की वज़ाहत, वगैरह। (9 से 86)

(ii) सामिरी और उसका अंजाम?

सामिरी की निस्बत सामरा की तरफ़ है। यह बनी इस्राईल का एक बुद्धिजीवी व्यक्ति था जिसने मूसा अलैहिस्सलाम के पीछे ज़ेवरों से (जिन्हें बनी इस्राईल ने बोझ के कारण फेंक दिया था) एक बछड़ा बनाया जिस से बैल की आवाज़ निकलती थी। और कहा यह तुम्हारा

और मूसा का माबूद है। इसके इस अमल से इमाम बग़वी के अनुसार 6 लाख में से केवल 12 हज़ार लोगों को छोड़ कर सब शिर्क में मुब्तिला हो गए थे। जब मूसा अलैहिस्सलाम ने सामिरी से पूछा तो उसने जवाब दिया मैंने ने वह देखा जो कोई न देख सका, मैंने एक मुट्ठी मिट्टी रसूल के क़दम के निशान से उठा कर उसमें डाल दिया था। उसकी सज़ा सामिरी को यह दी गई कि उसे दुनिया में ही अछूत बना दिया गया और वह खुद कहता फिरता था ۞
مِسَاسٌ मुझे छूना नहीं। (87 से 97)

(iii) आदम अलैहिस्सलाम का वाकिआ

अल्लाह तआला ने आदम अलैहिस्सलाम को पैदा कर के फ़रिश्तों को सज्दा करने का आदेश दिया, चुनांचे सभी फ़रिश्तों ने सज्दा किया मगर इब्लीस ने घमण्ड के कारण इंकार कर दिया। अल्लाह ने आदम से फ़रमाया अब यह (शैतान) तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का दुश्मन है, कहीं ऐसा न हो कि यह तुम दोनों को जन्नत से निकलवा दे। तुम जन्नत में रहो न तुम यहाँ भूखे रहोगे न नंगे और न प्यासे रहोगे और न धूप लगेगी। लेकिन फुलां दरख़्त के पास जाने की भी मत सोचना मगर शैतान ने वसवसा पैदा किया और आदम व हव्वा ने उस दरख़्त से कुछ खा लिया जिसके कारण वह एक दूसरे को नंगे नज़र आने लगे। आदम बहुत पछताए, उन्होंने माफ़ी मांगी तो अल्लाह ने उन्हें माफ़ कर दिया और ज़मीन पर ख़लीफ़ा बना दिया। (115 से 123)

(iv) रसूल को तसल्ली और पांच नमाज़ों का हुक्म

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मक्का के काफ़िरों की तरफ़ से सख़्त रंज का सामना करना पड़ता था, उनकी बदजुबानी, मज़ाक़ उड़ाना और इस्लाम के खिलाफ़ दौड़ भाग से आप कुढ़ते थे, उन्हें कुरआन सुनाना चाहते तो वह सुनने को तैयार न होते। इसके लिए अल्लाह ने अपने रसूल को तसल्ली दी है कि "उनकी बातों पर आप सब्र करें, सूरज निकलने से पहले (फ़ज़्र की नमाज़), डूबने से पहले (अस्र की नमाज़), रात में (ईशा की नमाज़, और नफ़ली तहज्जुद भी) और दिन के दोनों किनारों में (फ़ज़्र, जुहर, और मग़रिब की नमाज़) अल्लाह की तारीफ़ और तस्बीह करते रहें, घर वालों को नमाज़ का हुक्म दें अपने काम पर साबित क़दम रहें और दुनिया का ख़्याल बिल्कुल दिल में न लाएं। (130 से 132)

पारा (17) इक़तरबा लिन नास

इस पारे में दो हिस्से हैं-

- (1) सूरह अल अंबिया मुकम्मल
- (2) सूरह अल हज्ज मुकम्मल

(1) सूरह (021) अल अंबिया मुकम्मल

(i) नबी के विषय में सभी क़ौमों के एतेराज़ एक जैसे थे

- यह तो हमारे जैसा ही एक इंसान है।
- जादूगर है। • इसकी बातें तो उलझे हुए सपने हैं।
- उसने खुद यह बातें घड़ ली हैं।
- कोई निशानी ले आए।

(3 से 5)

(ii) बिग बैंग थ्योरी और कुरआन

“क्या वह लोग जिन्होंने (नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पुष्टि से) इंकार कर दिया है ध्यान नहीं करते कि यह सब आकाश और धरती परस्पर मिले हुए थे फिर हम ने उन्हें अलग किया“। (आयत 30)

(इस कुरआनी आयत और “बिग बैंग“ के बीच आश्चर्यजनक समानता से इंकार संभव ही नहीं! यह कैसे संभव है कि एक किताब जो आज से 1440 वर्ष पहले अरब के रेगिस्तानों में नाज़िल हुई अपने अन्दर ऐसे असाधारण वैज्ञानिक यथार्थ समाए हुए है।

(iii) तौहीद

तौहीद पर छह दलाएल का ज़िक्र किया गया है-

- ◆ आसमान और ज़मीन को अलग किया।
- ◆ तमाम जीव पानी से बनाये।
- ◆ ज़मीन में पहाड़ जमा दिए ताकि लोगों के बोझ से ज़मीन हिलने न लगे।
- ◆ ज़मीन में चौड़े रास्ते बनाये ताकि लोग उनपर चलें।
- ◆ आसमान को महफूज़ छत बनाया।
- ◆ रात और दिन, सूरज और चांद का निज़ाम बनाया, हर एक अपने अपने मदार (axis) पर बहुत तेज़ गति से घूम रहे हैं। न इनमें टकराव होता है और न गडमड ही होते हैं।

(30 से 33)

(iv) क़यामत

- सूरह का आरम्भ ही हुआ है कि हिसाब व किताब का वक़्त करीब आ गया है लेकिन लोग हैं कि इस दिल दहला देने वाले दिन से गाफ़िल हो रहे हैं (आयत 01)
- जैसे किसी रजिस्टर के पन्ने को खोला जाता है और फिर लपेट कर रोल कर दिया जाता है ऐसे ही क़यामत के दिन अल्लाह आसमान को लपेट कर अपनी मुट्ठी में ले लेगा। और इंसान दोबारा उठाये जाएंगे। (आयत 104)
- याजूज माजूज का निकलना क़यामत की दस बड़ी निशानियों में से एक है। यह जुल करनैनन की दीवार के पीछे बंद हैं जिसका बयान सूरह अल कहफ़ आयत 94 और 95 में हो चुका है। क़यामत के करीब याजूज माजूज खोल दिये जायेंगे, और वह बुलंदी से उतर रहे होंगे। वह दुनिया पर इस तरह टूट पड़ेंगे जैसे कोई शिकारी दरिंदा अचानक पिंजरे या बन्धन से आज़ाद कर दिया गया हो। (आयत 96)
- मुशरेकीन और उनके बनाये हुए बुत जहन्नम का ईंधन बनेंगे। (आयत 98)

(v) रिसालत

रिसालत के संदर्भ में सत्तरह अंबिया अलैहिमुस्सलाम का ज़िक्र आया है।

- (1) मूसा अलैहिस्सलाम
- (2) हारून अलैहिस्सलाम

- (3) इब्राहीम अलैहिस्सलाम
- (4) लूत अलैहिस्सलाम
- (5) इस्हाक़ अलैहिस्सलाम
- (6) याकूब अलैहिस्सलाम
- (7) नूह अलैहिस्सलाम
- (8) दाऊद अलैहिस्सलाम
- (9) सुलैमान अलैहिस्सलाम
- (10) अय्यूब अलैहिस्सलाम
- (11) इस्माईल अलैहिस्सलाम
- (12) इदरीस अलैहिस्सलाम
- (13) जुल किफ़ल अलैहिस्सलाम
- (14) यूनूस अलैहिस्सलाम
- (15) ज़करिया अलैहिस्सलाम
- (16) यहया अलैहिस्सलाम
- (17) ईसा अलैहिस्सलाम

इन सत्तरह में कुछ अंबिया अलैहिमुस्सलाम के वाकिआत थोड़े विस्तार से बयान हुए हैं और बाक़ी का संक्षिप्त (मुख़्तसर) ज़िक़्र है।

(vi) मोअजिज़ात (miracle)

- इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए आग ठंडी और सलामती बन गयी। (69)
- पहाड़ और परिंदे दाऊद अलैहिस्सलाम के साथ तस्बीह बयान करते थे, उनके हाथ में आते ही लोहा नरम हो जाता था। (79)

- तेज़ हवा सुलैमान अलैहिस्सलाम के हुक्म से चलती थी, जिन्नात पर उनका कंट्रोल था। (81)

(vii) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सबके लिए

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तमाम दुनिया के लिए रहमत हैं (وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ) यह प्रमाण है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पूरे संसार के लिए नबी बना कर भेजे गए थे। (107)

(viii) कुछ अहम बातें

- आसमान, ज़मीन और उनके दरमियान की चीज़ों को खिलवाड़ के लिए नहीं बनाया गया है। (16)
- जो खुदाई का दावा करेगा उसका ठिकाना जहन्नम है। (29)
- मौत सभी को आनी है। (36)
- इंसान बहुत जल्दबाज़ी मचाता है। (37)
- ज़मीन प्रत्येक दिशा से घटती चली जा रही है। (44)

सूरह (022) अल हज्ज मुकम्मल

(i) क़यामत

क़यामत की हौलनकियों का दिल दहलाने वाला तज़क़िरा है, imaginary इतनी ज़बरदस्त है कि ऐसा महसूस होता कि हम अपनी आंखों के सामने देख रहे हों। दूसरी ही आयत है:

"जिस दिन तुम उसे (क़यामत के ज़लज़ले को) देखोगे तो हर दूध पिलाने वाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जायेगी और सभी गर्भवती (pregnant) महिलाएं अपने अपने गर्भ गिरा देंगी और लोग तुझे नशे में धुत लगेंगे हालाँकि वह नशे में नहीं होंगे बल्कि अल्लाह का अज़ाब ही इतना सख्त होगा (2)

(ii) इंसान की तखलीक (creation) के सात मराहिल (step)

يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِن كُنْتُمْ فِي رَيْبٍ مِّنَ الْبَغْثِ فَإِنَّا خَلَقْنَاكُمْ مِّن نُّرَابٍ ثُمَّ مِّن نُطْفَةٍ ثُمَّ مِّن عِلْقَةٍ ثُمَّ مِّن مُّضْغَةٍ مُّخَلَّقَةٍ وَغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لَّنُبَيِّنَ لَكُمْ ۖ وَنُقَرُّ فِي الْأَرْحَامِ مَا نَشَاءُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِنَبْلُغُوا أَشَدَّكُمْ ۖ وَمِنْكُمْ مَّن يُّتَوَفَّىٰ وَمِنْكُم مَّن يُرَدُّ إِلَىٰ أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِن بَعْدِ عِلْمٍ شَيْئًا ۚ

लोगो अगर तुमको मरने के बाद दोबारा जी उठने में किसी तरह का शक है तो जान लो कि हमने तुम्हें पहले मिट्टी से, फिर नुत्फ़े (मनी) से, फिर जमे हुए खून से, फिर लोथड़े से जो पूरा (सूडौल हो) या अधूरा हो पैदा किया ताकि तुम पर (अपनी कुदरत) ज़ाहिर करें और हम औरतों के पेट में जिस (नुत्फ़े) को चाहते हैं एक मुद्दत मुअय्यन (specified term) तक ठहरा रखते हैं फिर तुमको बच्चा बनाकर निकालते हैं फिर तुम अपनी जवानी को पहुँचते हो और तुममें से कुछ लोग बुढ़ापे से पहले मर जाते हैं और कुछ उम्र के उस आखिरी हिस्से में लौटा दिए जाते हैं जहां वह सब कुछ जानने के बावजूद कुछ भी जानने के लायक नहीं रहते। यानी, मिट्टी, मनी, लोथड़ा, बोटी, बच्चा, जवान, बूढ़ा, (5)

(iii) मिल्लत और धर्म के लिहाज़ से छह गिरोह

मुस्लिम, यहूदी, साबी (सितारों को पूजने वाले), ईसाई, मजूसी (सूरज, चांद और आग के पुजारी), मुशरिक, (17)

(iv) इब्राहीम अलैहिस्सलाम का ऐलाने हज्ज

पहले दिन से ही काबा की बुनियाद तौहीद पर रखी गई है। अल्लाह ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को खाना ए काबा की जगह दिखा दी कि इस घर की तामीर करें और उपदेश दिया गया कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक (साड़ी) न ठहराया जाय। और दूर दूर से आकर तवाफ़, क़याम, रुकूअ और सज्दा करने वालों के लिए साफ़ सुथरा रखें। और लोगों में हज्ज का ऐलान कर दें कि लोग तुम्हारे पास (जूक दर जूक) ज़्यादा और हर तरह की दुबली सवारियों पर (जो दूर दराज़ का रास्ता तय करके आयी होगी चढ़-चढ़ के) आ पहुँचेंगे। फिर हज्ज के अरकान भी बताए गए हैं। (26 से 34)

(v) मोमिन (मुख्बेतीन) की पांच निशानियां

- जब अल्लाह का ज़िक्र हो तो खौफ़ से उनके दिल कांप उठते हैं।
- मुसीबत पर सब्र करते हैं।
- नमाज़ क़ायम करते हैं।

- अल्लाह के रास्ते में दिल खोल कर खर्च करते हैं।
- भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं।

(35)

(vi) अल्लाह को तक्रवा पसंद है दिखावा नहीं

हज्ज में या वैसे जो कुरबानी की जाती है उसका गोشت और खून अल्लाह को नहीं पहुंचता बल्कि तक्रवा (सही नियत) पहुंचता है और यही मामला हर काम के सिलसिले में है अगर नीयत ठीक है तो तक्रवा वरना दिखावा में गिनती होगी। (37)

(vii) मुशरेकीन और उनके माबूद कितने कमज़ोर हैं

मुशरेकीन अल्लाह को छोड़ कर जिनके आगे नतमस्तक होते हैं उनका हाल तो यह है कि वह सब मिलकर भी एक मक्खी नहीं बना सकते बल्कि मक्खी उनसे कुछ उड़ा ले जाए तो वह उसे छुड़ा भी नहीं सकते। हक़ीक़त तो यह है कि उन्होंने अल्लाह की कद्र ही न जानी जैसा जानने का हक़ था। (73)

(viii) मुस्लिम नाम रखा

अल्लाह तआला ने तमाम इंसानों में से कुछ को मुन्तख़ब किया कि वह अल्लाह की ज़मीन पर अल्लाह का क़ानून नाफ़िज़ करने के लिए हर मुमकिन कोशिश करें, अल्लाह ने उस ग़िरोह का नाम पहले से ही मुस्लिम रखा है इसलिए तमाम मुसलमानों को चाहिए कि कोई और title न लगाएं बल्कि खुद को मुस्लिम का ही नाम दें। (78)

पारा (18) क़द अफलहा

इस पारे में तीन हिस्से हैं-

- (1) सूरह अल मुमेनून मुकम्मल
- (2) सूरह अन नूर मुकम्मल
- (3) सूरह अल फुरक़ान इब्तेदाई हिस्सा

(1) सूरह (023) अल मुमेनून मुकम्मल

(i) जन्नतुल फ़िरदौस के वारिस

- 1, ईमान लाने वाले.
 - 2, नमाज़ में खुशुअ इख़्तियार करने (झुकने) वाले.
 - 3, फ़िज़ूल बातों से परहेज़ करने वाले.
 - 4, ज़कात अदा काने वाले.
 - 5, शर्मगाह की हिफ़ाज़त करने वाले.
 - 6, अमानत को हिफ़ाज़त के साथ लौटाने वाले.
 - 7, वादा को पूरा करने वाले.
 - 8, नमाज़ों की हिफ़ाज़त करने वाले।
- (1 से 11)

(ii) इंसान की तख़लीक़ के नौ मराहिल

- 1, मिट्टी का निचोड़
- 2, मनी (वीर्य)

- 3, जमा हुआ खून (भ्रूण)
 - 4, मांस का लोथड़ा
 - 5, हड्डी
 - 6, गोश्त का लिबास
 - 7, सर्वश्रेष्ठ मखलूक (इंसान)
 - 8, मौत
 - 9, दोबारा ज़िंदगी
- (12 से 16)

(iii) तौहीद के दलाएल

एक के बाद एक सात आसमान की तखलीक़, एक नियमित रूप से बारिश, बागात, मेवे और ग़ल्ला, चौपाए और उनके अनेक फ़ायदे, कश्ती (17 से 22)

(iv) अंबिया के वाकिआत

- नूह अलैहिस्सलाम, उनकी कश्ती और इंकार करने वालों पर पानी का अज़ाब। (23 से 27)
- हूद अलैहिस्सलाम की दावत और क़ौमे आद पर तेज़ हवा का अज़ाब। (आयत 33)
- मूसा और हारून अलैहिमस्सलाम का बयान।
- ईसा अलैहिस्सलाम और उनकी वालिदह मरयम का ज़िक्र (45 से 49)

तमाम रसूलों की एक ही दावत कि अल्लाह की बंदगी करो क्योंकि वही तुम्हारा माबूद है लेकिन तमाम क़ौमों ने एक जैसा ही काम किया कि दीन को टुकड़े टुकड़े करके फ़िरक़ों में बंट गए। और हर फ़िरके के पास जो कुछ है उसी में मगन है। (52, 53)

(v) नेक लोगों की पांच सिफ़ात

- अल्लाह पर ईमान रखते हैं

- अल्लाह से डरते हैं
- शिर्क और दिखावे से बचते हैं
- नेकी की वजह से दिल ही दिल में अल्लाह से डरते हैं कि उन्हें अल्लाह के पास जाना है,
- भलाई के कामों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते हैं।

(57 से 61)

(vi) दावत के इंकार की असल वजह

कुफ़्रार के इंकार करने और झुठलाने की वजह न तो यह है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पिछले अंबिया से अलग कोई नई बात लेकर आए हैं न आप के बुलंद अखलाक़ उन लोगों से छुपे हुए हैं, और न सच मुच आप को (मुआज़ अल्लाह) मजनुं समझते हैं और न इंकार की वजह यह है कि आप उनसे कोई बदला चाह रहे हैं। बल्की असल वजह तो यह है कि जो दीन आप लेकर आए हैं वह उनकी ख़्वाहिशात के खिलाफ़ है। इसलिए झुठलाने के मुख़्तलिफ़ बहाने बना रहे हैं। (68 से 74)

(vii) अल्लाह को संसार का ख़ालिक़ तो मानते हैं मगर तस्दीक़ नहीं करते

कुफ़्रार से अगर पूछा जाय कि ज़मीन और ज़मीन में जो कुछ है वह किसका है? सात आसमानों, और अर्श अज़ीम (महा सिंहासन) का स्वामी कौन है? तमाम चीज़ों का अधिकार किसके हाथ में है और कौन है जो शरण देता है और उसके मुक़ाबले में कोई शरण नहीं दे सकता, तो उनका जवाब यही होगा कि "वह तो अल्लाह ही है" (84 से 89)

(viii) अंबिया पर तमाम क़ौमों के एक ही जैसे इल्ज़ाम

- इंसान नबी नहीं हो सकता,
- वह भी तुम्हारे जैसा खाता पीता है,
- थोड़ा पाग़लपन का शिकार है,
- अल्लाह के नाम पर झूठ बोल रहा है,
- इसकी बातें तो पिछलों की मनघड़ंत कहानियां हैं।
- क्या हम मर कर मिट्टी और हड्डी रह जाएंगे तो दोबारा उठाये जाएंगे।

(33 से 38, 45)

(ix) क़यामत का तज़क़िरा

क़यामत के दिन इंसान के आमाल वज़न किये जायेंगे, जिसके आमाल का पलड़ा वज़नी होगा वही कामयाब है और जिसके आमाल का पलड़ा हल्का होगा वह फ़ेल होगा। (102 से 105)

(2) सूरह (024) अन नूर मुकम्मल

(i) अहकाम व आदाब

(1) अहकाम

• ज़ानी और ज़ानिया की सज़ा

ज़ानी और ज़ानिया की सज़ा सौ कोड़े है (यह ग़ैर शादी शुदा के लिए है) सज़ा देने के मामले कोई नरमी न बरती जाय और एक समूह के बीच (public place) पर सज़ा दी जाय ताकि उसे देखकर दूसरे ज़िना के मुतअल्लिक दिल में ख़याल भी न लाएं। (1 से 3)

शादीशुदा के लिए रजम (पत्थर मारने की जब तक कि मृत्यु न हो जाए) सज़ा है जैसा कि बहुत सी अहादीस से साबित है।

"अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया " किसी मुसलमान का ख़ून सिर्फ़ तीन सूरतों में हलाल है। एक "शादीशुदा ज़ानी उसे रजम किया जाएगा" दूसरे "किसी को जान बूझ कर क़त्ल किया हो उसे क़त्ल किया जाएगा" तीसरे "जो मुर्तद हो (इस्लाम से फिर) जाए और अल्लाह और उसके रसूल से लड़े उसे क़त्ल कर दिया जाय या सूली दी जाय या जिलावतन कर (देश से निकाल) दिया जायेगा" (सुनन निसाई हदीस नंबर 4053/ तहरीमुद दम, सही बुखारी 6878/ किताबद दियात)

• ज़िना का इल्ज़ाम लगाने पर चार गवाह पेश करना ज़रूरी

किसी पर ज़िना का इल्ज़ाम लगाने पर चार गवाह पेश करना ज़रूरी है जिनके बयान में आपस में कोई तज़ाद (विरोधाभास) न हो वरना झूठे गवाहों को 80 कोड़े लगाए जाएंगे। (4)

● लेआन

अगर बीवी को बदकारी करते शौहर देख ले तो वह किसी सूरत में चार गवाह नहीं ला सकता। ऐसी स्थिति में दोनों के लिए "लेआन" (لعان) का हुक्म है यानी शौहर और बीवी दोनों चार बार अल्लाह की क़सम खा कर सफ़ाई दें और पांचवी बार यह कहते हुए क़सम खाएं कि अगर वह झूठे हों तो उनपर अल्लाह की लानत हो। (6 से 9)

● उम्मुल मोमेनीन आयशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा की पाकदामनी की गवाही

जब उम्मुल मोमेनीन आयशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा पर मुनाफ़ेक्कीन ने तोहमत लगाई, उसमें तीन मुख़्लिस मुसलमान (मिस्तह बिन उसासा, हस्सान बिन साबित और हमना बन्ते जहश) भी शरीक हो गए थे तो कुरआन में उम्मुल मोमेनीन की पक़दामनी पर 10 आयतें (11 से 20 तक) नाज़िल हुईं जिनमें मुनाफ़ेक्कीन की मुज़म्मत (निंदा) और मुसलमानों को तंबीह (चेतावनी) दी गई है कि कभी इस क़िस्म के बुहतान तराशी (आरोप लगाने) में हिस्सेदार न बनें बल्कि उन्हें तो पहले ही यह कह कर रद्द कर देना चाहिए था अल्लाह की पनाह, यह बहुत ही झूठा आरोप है। (11 से 20)

● इस्लाम में न तो बदकारी की इजाज़त है और न उसे फैलाने की

जो लोग बदकारी (अश्लीलता) फैलाने में किसी प्रकार का सहयोग करते हैं उनके लिए दुनिया और आख़िरत (परलोक) दोनों में दर्दनाक अज़ाब की धमकी दी गई है। इसी लिए यह भी कहा गया है कि

"बदकार मर्द बदकार औरतों के लिए और बदकार औरतें बदकार मर्दों के लिए और पाकदामन मर्द पाकदामन औरतों के लिए और पाकदामन औरतें पाकदामन मर्दों के लिए हैं। (26)

● भोली भाली और पाकदामन औरत पर तोहमत

भोली भाली और पाकदामन औरत पर तोहमत लगाने वाले दुनिया और आख़िरत दोनों में लानत के मुस्तहिक्क हैं। (23)

● मर्द व औरत का पर्दा

मोमिन मर्द अपनी निगाहों को नीची रखें और अपनी शर्मगाहों (गुप्तांग) की हिफ़ाज़त करें जबकि औरतें निगाह को नीची रखें, शर्मगाह की हिफ़ाज़त करें, अपने सीनों को ओढ़नी से छुपा कर रखें। किसी के सामने ज़ीनत (सौन्दर्य) का प्रदर्शन न करें, ज़मीन पर पांव मार कर न चलें कि किसी क़िस्म की आवाज़ आये। (30, 31)

● औरत किसके सामने ज़ीनत ज़ाहिर कर सकती है:

पति, पिता, पति का पिता (ससुर), अपने पुत्र, पति के (दूसरी पत्नी से) पुत्र, भाई, भतीजे, भांजे, मेल जोल की औरतें, दास और और उनके अधीन पुरुष जो कुछ इच्छा नहीं रखते, ऐसे लड़के जो महिलाओं के परदे की बातों से अभी वाकिफ़ न हुए हों। (31)

(2) आदाब

- किसी के घर में बिना इजाज़त दाखिल न हों, इजाज़त से पहले सलाम ज़रूर करें। (61)
(यदि अनुमति देने के बजाय लौटने के लिए कहा जाय तो ख़ुशी ख़ुशी लौट जाएं)
- जो लोग निकाह के क़ाबिल हैं वह जल्द निकाह करें और जिनको मौक़ा न मिल पा रहा हो वह सोसाइटी को ग़ंदा न करें बल्कि पाकीज़गी इख़्तियार करें और जब अल्लाह अपने फ़ज़ल से नवाज़ दे तो शादी कर लें। (32, 33)
- जो गुलाम या बांदी (दासी) मुकातिबत (कुछ रक़म के बदले आज़ादी हासिल) करना चाहते हों उनके साथ मुआहिदा (अनुबंध) किया जाय। (33)
- बांदियों (दासियों) को उजरत के बदले बदकारी पर मजबूर न किया जाय। (33)
- जब किसी अहम मामले में बैठक हो तो इजाज़त के बेग़ैर इज्तेमाई मजलिस से उठना मुनासिब नहीं। (62)
- अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ऐसे न पुकारें जैसे आपस में एक दूसरे को पुकारते हैं। (63)

(3) घर के आदाब

- घर में दाखिल हों तो घर वालों को सलाम करें इसमें अल्लाह की तरफ़ से ख़ैर और बरकत है। (61)
- तीन औकात (फ़जर की नमाज़ से पहले, दोपहर में कैलूले के वक़्त, ईशा की नमाज़ के बाद) छोटे बड़े बच्चे, बालिग़ और घर में रहने वाले गुलाम और बांदियां इजाज़त ले कर कमरे में दाखिल हों। (58, 59)
- वह औरतें जो बहुत बूढ़ी हों जाएं और निकाह की उम्र से गुज़र जाएं और बनाव सिंगार ज़ाहिर करने वाली न हों अगर वह पर्दे के ज़ाहिरी कपड़े उतार दें तो कोई हर्ज नहीं लेकिन अगर वह न उतारें तो बेहतर है। (60)

● इस्लाम में संयुक्त परिवार (joint family) का कोई तस्वूर नहीं क्योंकि एक तो पर्दा नहीं हो सकता दूसरे आयत 61 "أَنْ تَأْكُلُوا مِنْ بُيُوتِكُمْ أَوْ بُيُوتِ آبَائِكُمْ" अपने बाप दादा के घरों से खाओ" से भी यही बात साबित होती है।

(ii) अल्लाह के नूर के तलबगार कौन हैं?

अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखते और इताअत करते हैं, ● तिजारत अल्लाह के ज़िक्र से गाफ़िल नहीं करती, ● नमाज़ कायम करते हैं, ● ज़कात अदा करते हैं, ● क़यामत के दिन से डरते हैं जिस दिन आंखें फटी की फटी रह जाएंगी। (36, 37)

(iii) अहले हक़ और अहले बातिल की तीन मिसालें

मिसाल [1]

اللَّهُ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ مِثْلُ نُورِهِ كَمِشْكَاةٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ ۚ الْمِصْبَاحُ فِي زُجَاجَةٍ ۚ الزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُوقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُبَارَكَةٍ زَيْتُونَةٍ لَا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ يَكَادُ زَيْتُهَا يُضِيءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ۖ نُورٌ عَلَى نُورٍ ۚ يَهْدِي اللَّهُ لِنُورِهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَيَضْرِبُ اللَّهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ ۖ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ

अल्लाह तो आसमान और ज़मीन का नूर है उसके नूर की मिसल ऐसी है जैसे एक ताक़ हो जिसमें एक रौशन चिराग़ हो और चिराग़ एक शीशे की क़न्दील (दिल) में हो और क़न्दील (अपनी तड़प में) गोया एक जगमगाता हुआ रौशन सितारा (वह चिराग़) ज़ैतून के मुबारक दरख़्त (के तेल) से रौशन किया जाए जो न पूरब की तरफ़ हो और न पश्चिम की तरफ़। उसका तेल (ऐसा) शफ़फ़ हो कि अगरचे आग़ उसे छुए भी नहीं फिर भी ऐसा मालूम हो कि आप ही आप रौशन हो जाएगा (गरज़ एक नूर नहीं बल्कि) नूर आला नूर (नूर की नूर पर जोत पड़ रही है) अल्लाह अपने नूर से जिसे चाहता है हिदायत देता है और अल्लाह तो हर चीज़ से खूब वाकिफ़ है। (आयत 35)

मिसाल [2]

وَالَّذِينَ كَفَرُوا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ بِقِيعَةٍ يَحْسَبُهُ الظَّمْآنُ مَاءً حَتَّىٰ إِذَا جَاءَهُ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَوَجَدَ اللَّهَ عِنْدَهُ فَوَفَّاهُ حِسَابَهُ ۗ وَاللَّهُ سَرِيعُ الْحِسَابِ

और जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तियार किया उनकी कारस्तानियाँ (ऐसी है) जैसे एक चटियल मैदान की चमकती हुई रेत हो कि प्यासा उस को दूर से देखे तो पानी ख़याल करता है यहाँ तक कि जब उसके पास पहुंचता है तो उसको कुछ भी नहीं मिलता (और प्यास से तड़प कर मर जाता है) और अल्लाह को अपने पास मौजूद पाया तो उसने उसका हिसाब (किताब) पूरा पूरा चुका दिया और अल्लाह तो बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है। (आयत 39)

मिसाल [3]

كَظُلُمَاتٍ فِي بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَغْشَاهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهِ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهِ سَحَابٌ ۚ ظُلُمَاتٌ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ إِذَا أَخْرَجَ يَدَهُ لَمْ يَكْذِبْ رَاهَا ۚ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللَّهُ لَهُ نُورًا فَمَا لَهُ مِن نُّورٍ

(काफ़िरों के आमाल की मिसाल) उस बड़े गहरे दरिया की अंधेरे की सी है जैसे एक लहर उसके ऊपर दूसरी लहर उसके ऊपर अब्र (तह ब तह) ढाँके हुए हो (गरज़) अंधेरा है कि एक के ऊपर एक (उमड़ा) चला आता हैं (इसी तरह से) कि अगर कोई शख्स अपना हाथ निकाले तो (घनघोर अंधेरे के कारण) उसे देख न सके और जिसे अल्लाह ही ने (हिदायत की) रौशनी न दी हो तो उसके लिए कहीं कोई रौशनी नहीं। (आयत 40)

(iv) मोमिन और मुनाफ़िक़ में फ़र्क़

जब अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ बुलाया जाता है कि रसूल फ़ैसला करे तो मुनाफ़िक़ मुंह मोड़ लेते हैं लेकिन जब यह एहसास होता है कि फ़ैसला उनके हक़ में होगा तो दौड़े चले आते हैं जबकि मोमिन अपने तमाम मामलात में अल्लाह और रसूल को ही हक़म मानते हैं। (47 से 52)

(v) घरों में इकट्ठे या अलग-अलग खाने की इजाज़त

अपने बाप दादा, माँ-नानी, भाई, बहन, चाचा, फूफी, मामू, खाला, दोस्त, वह घर जिनकी कुंजियाँ तुम्हारे हवाले हों। (61)

(3) सूरह (025) अल फ़ुरक़ान इब्तेदाई हिस्सा

(i) तौहीद

ज़मीन व आसमान का मालिक अल्लाह ही है। उसका न कोई बेटा है न कोई साझी, उसने हर चीज़ को पैदा करके उसे एक नपा तुला अंदाज़ अता किया है जबकि अल्लाह के इलावा जिन माबूदों को घड़ लिया गया है उनका हाल तो यह कि वह खुद बनाये गए हैं, अपने लिए लाभ हानि का कोई इस्तिहार नहीं रखते। भला वह दूसरे की ज़िंदगी, मौत और फिर दोबारा ज़िन्दगी के मालिक कैसे हो सकते हैं। (1 से 3)

(ii) कुरआन की हक्कानियत

कुरआन के सिलसिले में कुफ़्रार दो तरह के इल्ज़ाम लगाते थे: 1, यह मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का अपना घड़ा हुआ कलाम है जिसमें कुछ लोगों ने उनकी मदद की है। 2, यह पिछली क़ौमों के किस्से कहानियां हैं जो सुबह शाम लिखवाता है। (4 से 5)

(iii) रिसालत

कुफ़्रार कहते थे भला यह कैसा इंसान है जो खाता पीता और बाजारों में चलता फिरता है। क्यों न कोई फ़रिश्ता नाज़िल किया गया और अगर इंसान को ही रसूल बनाया जाना था तो क्या इस ग़रीब और यतीम के बजाए दुनयावी लिहाज़ से खुशहाल लोग मौजूद न थे। कुफ़्रार के इस बातिल नज़रियात को वाज़ेह दलाएल से रद्द किया गया है। (7 से 9)

(iv) क़यामत

क़यामत के दिन के काफ़िरों के झूठे माबूदों से अल्लाह सवाल करेगा कि "क्या तुम ने मेरे बन्दों को बहकाया था या यह खुद भटक गए थे? तो वह अपने पुजारियों को झूठा साबित कर देंगे और अर्ज़ करेंगे, सुबहान अल्लाह (हम तो खुद तेरे बन्दे थे) हमारे लिए किसी तरह भी तरह मुनासिब न था कि हम तुझे छोड़कर दूसरे को अपना सरपरस्त बनाते। मगर इन्होंने तुझे भुला दिया। हक़ीक़त में ये खुद बर्बाद होने वाले लोग थे। फिर काफ़िरों को जहन्नम में झोंक दिया जाएगा। (17 से 19)

पारा (19) व क़ालल लज़ीन

इस पारे में तीन हिस्से हैं-

- (1) सूरह अल फुरक़ान का बाक़ी हिस्सा
- (2) सूरह अश शुअरा मुकम्मल
- (3) सूरह अन नमल का इब्तेदाई हिस्सा

(1) सूरह (025) अल फुरक़ान का बाक़ी हिस्सा

(i) क़यामत

क़यामत के दिन ज़ालिम सिवाए अफ़सोस कुछ न कर सकेंगे वह गुस्से में अपने हाथों को काटेंगे और कहेंगे काश हमने रसुल की बात मान ली होती, फुलां और फुलां को दोस्त न बनाते, नसीहत आ जाने के बाद भी हमें शैतान ने बहका कर अपमानित कर दिया। (26 से 29)

(ii) रसुल की गवाही

जिन लोगों ने कुरआन को पढ़ना, समझना, उसपर अमल करना और उसे लोगों तक पहुंचाने का दायित्व छोड़ रखा है उनके ख़िलाफ़ रसुल ख़ुद गवाही देंगे

وَقَالَ الرَّسُولُ يَرْبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوا هَذَا الْقُرْآنَ مَهْجُورًا

और रसूल (अल्लाह के दरबार में) अर्ज़ करेंगे कि "ऐ मेरे परवरदिगार मेरी क़ौम ने तो इस कुरआन को छोड़ ही दिया था। (30)

(आज उम्मत कुरआन से कितना दूरी इख़्तियार कर चुकी है। इस हवाले से ख़ुद को तब्दील करने की ज़रूरत है)

(iii) अल्लाह की कुदरत के दलाएल

छाया (shadow) का फैलना और सिमटना, सूरज का निकलना, ऊंचा होना, और डूबना, रात को लिबास, नींद को सुकून, दिन में फिर ज़िंदा करके उठाना, हवा का चलना, बादल

का आना, आसमान से साफ़ पानी बरसना, बारिश से मुर्दा पड़ी ज़मीन का ज़िंदा होना, इंसानों और जानवरों के पीने का इंतज़ाम, दो समुन्द्रों का आपस में मिलने के बावजूद एक रुकावट होना और एक तरफ़ पानी का मीठा व स्वादिष्ट तथा दूसरी तरफ़ का कड़वा तथा खारा होना, पानी से इंसान की तखलीक़ और नसब व ससुराल दो अलग अलग सिलसिले, आसमान, ज़मीन और उन दोनों के दरमियान तमाम चीज़ों की छह दिनों में तखलीक़, आसमान के बुरुज, और एक चिराग़ (सूरज) और चमकता चांद, और दिन रात का एक दूसरे के पीछे आना। (45 से 49, 53, 54, 59 से 61)

(iv) अल्लाह के नेक बंदों की पहचान

- 1, ज़मीन पर नरम चाल चलते हैं।
- 2, जाहिलों से बहस करने के बजाए सलाम करके गुज़र जाते हैं।
- 3, रातों को तन्हाई में सज्दा और क़याम करते हैं।
- 4, यह दुआ करते हैं कि

رَبَّنَا أَصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا

(ऐ हमारे रब हमसे जहन्नम के अज़ाब को दूर रख क्योंकि जहन्नम का अज़ाब तो चिमट जाने वाली चीज़ है) 5, न तो कंजूसी करते हैं और न फ़िज़ूल खर्ची बल्कि बीच का रास्ता इस्तिथार करते हैं। 6, शिर्क के करीब भी नहीं फटकते। 7, किसी को नाहक़ क़त्ल नहीं करते। 8, ज़िना नहीं करते। 9, झूठी गवाही नहीं देते। 10, बेहूदा बात नहीं करते। 11, जब अल्लाह की आयात सुनाई जाती है तो अंधे बहरे बनकर नहीं गिर पड़ते बल्कि कुरआन का असर कुबूल करते हैं और अक़ले सलीम के साथ उसकी पैरवी करते हैं 12, और यह दुआ करते हैं

رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا

(हमारे रब हमारी बीबियों और औलादों को हमारी आँखों की ठन्डक बना दे और हमको परहेज़गारों का इमाम बना) (63 से 74)

(2) सूरह (026) अश शुअरा मुकम्मल

(i) आठ नबियों के वाकिआत

मूसा और हारुन अलैहिस्सलाम का आयत 10 से 67 तक, इब्राहिम अलैहिस्सलाम का 69 से 86 तक, नूह अलैहिस्सलाम का 105 से 121 तक, हूद अलैहिस्सलाम का 124 से 139 तक, सालेह अलैहिस्सलाम का 141 से 158 तक, लूत अलैहिस्सलाम का 160 से 174 तक, शूएब अलैहिस्सलाम का 176 से 190 तक,

(ii) मुख्तलिफ़ क़ौमों की ख़ास ख़ास बुराईयां

शिरक, आख़िरत का इंकार, ज़मीन में फ़साद फैलाना, कुकर्म (लूत अलैहिस्सलाम की क़ौम की ख़ास बुराई), नाप तौल में कमी, अमानत में ख़यानत, (क़ौमे शूएब की ख़ास बुराई)

(iii) अंबिया की दावत में कुछ ख़ास बातें

- मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल बन कर आया हूँ।
- अल्लाह से डरो और मेरी दावत कुबूल कर लो।
- आख़िरत को याद रखो।
- मैं इस दावत के बदले कुछ नहीं मांगता।

وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى رَبِّ الْعَالَمِينَ

"मेरी उजरत तो अल्लाह के पास है जो सारे संसार का पालनहार है" (107 से 109)

(iv) इब्राहीम अलैहिस्सलाम की सुंदर अंदाज़ में दावत

मेरा रब तो वह है :

- जिसने मुझे पैदा किया और हिदायत दी।
- जो मुझे खिलाता और पिलाता है।
- जब मैं बीमार हो जाता हूँ तो मुझे शिफ़ा देता है।
- जो मुझे मौत देगा फिर एक दिन ज़िंदा करेगा।

- जिस से मुझे उम्मीद है कि आखिरत के दिन मेरे गुनाहों को बख्श देगा।

(78 से 82)

(v) कुरआन की हक्कानियत

1, यह कुरआन रब्बुल आलमीन का नाज़िल किया हुआ है जिसको रूहुल अमीन (जिब्रील अलैहिस्सलाम) के ज़रिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ल्ब (दिल) पर उतारा जाता है।

2, यह स्पष्ट अरबी भाषा में है।

3, लोगों को डराने और चेतावनी देने के लिए।

4, इसका तज़क़िरा पिछली किताबों में भी है।

5, यह बात तो बनी इस्राईल के (यहूदी) उलेमा भी भली भांति जानते हैं।

6, शैतान का इस से कोई संबंध नहीं है, यह उनके बस की बात नहीं है, वह तो इसको सुनने से भी दूर रखे गए हैं। शैतान तो झूठे होते हैं, वह सुनी सुनाई बातें कानों में फूंकते हैं और मक्कार व बदकार पर उतरते हैं।

(192 से 213)

(vi) नबी के लिए आदेश

(एक दावत देने वाले के अंदर इन सिफ़ात का होना ज़रूरी है)

- क़रीबी रिश्तेदारों को डराए।

- ईमान लाने वालों के साथ आजिज़ी और नरमी से पेश आए।

- अगर कोई नाफ़रमानी (अवहेलना) करे तो साफ़ कह दें कि तुम्हारे इस बुरे अमल से मेरा कोई संबंध नहीं।

- अल्लाह पर ही भरोसा रखें जो उन्हें उठते बैठते और सज्दा करते देख रहा है। (214 से 220)

(vii) शायरों की मुज़म्मत (निंदा)

शायरों के पीछे तो बस भटके हुए लोग ही चलते हैं। यह मुख्तलिफ़ ख़्याली वादियों में भटकते रहते हैं। ऐसी बातें कहते हैं जो करते नहीं हैं। अलबत्ता वह अलग हैं जो ईमान लाएं, नेक अमल करें और अल्लाह को कसरत से याद करने वाले हों। (224 से 226)

(viii) कुछ अहम बातें

- समलैंगिकता एक भयानक जुर्म है जो शरीर व समाज के लिए नासूर भी है और अल्लाह को नाराज़ करने कारण भी। लूत अलैहिस्सलाम की क्रौम से पहले यह बुराई मौजूद नहीं थी। (165, 166)
- नाप तौल में कमी बेईमानी की निशानी और अल्लाह को नाराज़ करने वाला अमल है। (181 से 183)
- कोई बस्ती उस वक़्त तक तबाह नहीं की जाती जबतक कि उसमें डराने वाले न भेजे गए हों। (208)

(3) सूरह (027) अन नमल का इब्तेदाई हिस्सा

(i) कुरआन हिदायत व बशारत है

- जो मोमिन हों
- नमाज़ कायम करते हैं
- ज़कात अदा करते हैं
- आख़िरत (परलोक) में विश्वास रखते हैं।

कुरआन अल्लाह की जानिब से नाज़िल की गई खुली और वाज़ेह किताब है। (आयत 1 से 3)

(ii) पांच अंबिया का ज़िक्र

मूसा अलैहिस्सलाम (आयत 7 से 14),

दाऊद अलैहिस्सलाम (15),

सुलैमान अलैहिस्सलाम (16 से 44),

सालेह अलैहिस्सलाम (45 से 53),

लूत अलैहिस्सलाम (54 से 58)

(iii) मूसा अलैहिस्सलाम को दी गई नौ निशानियां (आयत 12)

- 1 लाठी जो अज़दहा बन जाती थी।
- 2, हाथ जो बगल से सूरज की तरह चमकता हुआ निकलता था।
- 3, जादूगरों की शिकस्त (सब के सामने)।
- 4, मूसा अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी के मुताबिक पूरे मुल्क में अकाल (क्रहत)।
- 5, तूफ़ान।
- 6, टिड्डियों का झुंड।
- 7, तमाम गल्ले के ज़खीरे में सुरसुरियाँ और इंसान व हैवान में जुएं।
- 8, मेंढकों का तूफ़ान,
- 9, खून (तमाम नहर, कुएं, तालाब, और हौज़ का पानी खून में तब्दील हो गया। मछलियां मर गईं हर जगह पानी के ज़खीरों में बदबू पैदा हो गई। एक हफ़्ते तक मिस्र के लोग पानी को तरस गए)।

(iv) सुलैमान अलैहिस्सलाम का मुअजेज़ा

- परिंदों की बोलियां सिखाई गई थीं और हर चीज़ से नवाज़ा गया था।
- जिन और इंसानों के लश्कर उनके लिए जमा कर दिए गए थे।
- जिन, इंसान, परिंदे और तमाम लोग पूरी डिसिप्लिन के साथ रहते थे। (16, 17)

(v) नमल (चींटी) का वाकिआ

एक बार सुलैमान अलैहिस्सलाम का अपनी फ़ौज के साथ (जो इंसानों, जित्नों और परिंदों पर मुश्तमिल थी) एक घाटी से गुज़र हुआ तो चींटियों की सरदार ने कहा ऐ चींटियो! अपनी अपनी बिलों में चली जाओ ऐसा न हो कि सुलैमान का लश्कर अनजाने में तुम्हें कुचल डाले। सुलैमान अलैहिस्सलाम ने जब चींटी की यह बात सुनी तो मुस्कुराए और अपने रब का शुक्र अदा किया। (18, 19)

(vi) मलका सबा का वाकिआ

यमन की राजधानी सनआ से 55 किलोमीटर दूर मआरिब एक मुक़ाम था जो मलका सबा की राजधानी थी, यह लोग सूरज की पूजा करते थे। एक दिन हुदहुद ने सुलैमान अलैहिस्सलाम को उसके बारे में ख़बर दी। सुलैमान अलैहिस्सलाम ने मलका सबा के नाम एक ख़त लिखा और तौहीद की दावत दी। मलका ने वह ख़त पढ़ कर सुनाया और कहा "यह पत्र सुलैमान की जानिब से है और बिस्मिल्लाहिर राहमानिर रहीम से शुरू किया गया है"। मलका सबा ने दरबारियों से मशविरा करने के बाद पहले हदया (गिफ़्ट) भेजा जिसे सुलैमान अलैहिस्सलाम ने यह कह कर वापस कर दिया कि मुझे अल्लाह ने उस से कहीं ज़्यादा अता किया है और धमकी भी दी कि " हम ऐसी फ़ौज के साथ आ रहे हैं जिसका सामना नहीं किया जा सकता और हम वहां से निकाल बाहर करेंगे" इसका नतीजा यह हुआ कि उसने पैग़ाम भेजा कि वह ख़ुद मुलाक़ात करने आ रही है। सुलैमान अलैहिस्सलाम ने दरबार में मौजूद लोगों से पूछा कौन है जो उसके आने से पहले पहले उसका तख़्त यहां ला दे। एक भारी भरकम जित्न कहने लगा आपके इस जगह से उठने से पहले पहले। तभी एक (ग़ालिबन फ़रिश्ता) ने (जिसको अल्लाह ने किताब का इल्म दिया था) कहा आप की पलक झपकने से पहले पहले। फिर क्या था पलक झपकते ही तख़्त सुलैमान अलैहिस्सलाम के सामने मौजूद था। जब मलका सबा पहुंची तो अपने तख़्त को वहां मौजूद देख कर हैरान रह गई और फिर उसने सुलैमान अलैहिस्सलाम का महल और शान व शौकत देखी तो पुकार उठी।

رَبِّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي وَأَسْلَمْتُ مَعَ سُلَيْمَانَ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

"मेरे रब मैंने सूरज की पूजा कर के यक्कीनन अपने ऊपर जुल्म किया, और अब मैं सुलेमान के साथ तमाम जहाँ के पालनहार अल्लाह पर ईमान लाती हूँ। (22 से 44)

पारा (20) अम्मन खलक़

इस पारे में तीन हिस्से हैं-

- (1) सूरह अन नमल (बाक़ी हिस्सा)
- (2) सूरह अल क़सस मुकम्मल
- (3) सूरह अल अंकबूत का इब्तेदाई हिस्सा

(1) सूरह (027) अन नमल बाक़ी हिस्सा

(i) तौहीद की दावत और मुशरेकीन से कुछ ऐसे सवाल जो उनको लाजवाब कर दें

- कौन है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, आसमान से पानी बरसाया फिर उसके ज़रिए से लुभावने बाग़ उगाए जो तुम्हारे बस में न था?
- कौन है जिसने ज़मीन को ठहरने की जगह बनाया, उसके अन्दर नदियाँ बहाई, पहाड़ों की खूँटियाँ गाड़ दीं, पानी के दो ज़ख़ीरों के बीच परदे डाल दिये?
- कौन है जो बेक्रार की पुकार सुनता है जबकि वह उसे पुकारे और कौन उसकी तकलीफ़ दूर करता है? और (कौन है जो तुम्हें ज़मीन का ख़लीफ़ा बनाता है?)
- कौन है जो जल और थल के अंधियारों में तुमको रास्ता दिखाता है और कौन अपनी रहमत के आगे हवाओं को ख़ुशख़बरी देकर भेजता है?
- कौन है जो पैदाइश की शुरूआत करता है और फिर उसे दोहराता है? कौन है जो तुमको आसमान और ज़मीन से रोज़ी देता है? (60 से 64)

(ii) ज़मीन का जानवर (الدَّابَّة)

- क़यामत के करीब एक जानवर ज़मीन से निकलेगा (जैसे सालेह अलैहिस्सलाम की ऊंटनी पहाड़ से निकली थी) और इंसानी जुबान में बात करेगा।
- यह क़यामत की दस निशानियों में से एक है (मुस्लिम 7285)

- क़यामत की पहली निशानी सूरज का पूरब के बजाय पश्चिम से निकलना है फिर एक दिन यह जानवर दिन दहाड़े लोगों के सामने निकल आएगा (मुस्लिम 7383)
- जब ज़मीन पर भलाई का हुक्म देने वाला और बुराई से रोकने वाला कोई बाक़ी नहीं रहेगा तो यह जानवर आख़िरी हुज्जत के तौर पर आएगा।
- यह मक्का से बल्कि मस्जिदे हराम से निकलेगा (मुस्तदरक हाकिम 8490)।
- एक रिवायत के मुताबिक़ उस जानवर के पास मूसा अलैहिस्सलाम की लाठी और सुलैमान अलैहिस्सलाम को अंगूठी होगी। अंगूठी से वह काफ़िर की नाक पर काफ़िर और लाठी से मोमिन के चेहरे पर मोमिन की लिख देगा। (इब्ने माजा 4066)

(iii) क़यामत

जिस दिन सूर (शंख) में फूंक मारी जाएगी तो आसमान और ज़मीन के तमाम लोग कान दबाए रब के सामने मौजूद होंगे उस दिन पहाड़ जो आज जमे हुए दिखाई देते हैं बादलों की तरह उड़ते हुए नज़र आएंगे। (87, 88)

तमाम उम्मत में से उन लोगों को घेर कर लाया जाएगा जो अल्लाह की आयात को झुठलाते थे, फिर उनका वर्गीकरण (classification) किया जाएगा। और पूछा जाएगा कि तुमने हमारी आयात को ज्ञान न होने के बावजूद झुठलाया तो उनके पास जवाब न होगा। (83 से 85)

(2) सूरह (028) अल क़सस मुकम्मल

(i) मूसा अलैहिस्सलाम का वाक़िआ (तफ़सील से)

आयत 3 से 48 तक मुसलसल मूसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र है। बनी इस्राईल के लड़कों को फ़िरऔन चुन चुन कर क़त्ल करा दिया करता था, ऐसे हालात में मूसा का पैदा होना, मां के ज़रिए दरया में डाला जाना, फ़िरऔन के दरबारियों का ताबूत को निकालना, क़त्ल की कोशिश लेकिन फ़िरऔन की बीवी का बीच में पड़ कर बचाना और उनकी परवरिश करना, मां का बेटे से मिलना और उजरत पर दूध पिलाना, बालिश होना, बनी इस्राईल के एक शख्स की मदद के चक्कर में अनजाने में एक क़िबती का हिलाक हो जाना, अल्लाह से माफ़ी तलब करना, क़त्ल का राज़ खुलने पर मिस्र से भागना, मदयन पहुंचना, वहां एक बुजुर्ग और नेक शख्स शूऐब की पनाह में आना, वहां एक लड़की से शादी, दस साल शूऐब

की खिदमत, बीवी के साथ घर वापसी, रास्ते में आग की तलाश में निकलना, और रसूल बनाया जाना, सिफ़ारिश पर बड़े भाई हारून का भी नबी बनाया जाना, मोअजिज़ा अता होना, फ़िरऔन के पास जाना, इस्लाम की दावत, जादूगरों से मुक़ाबला और उनका ईमान लाना, फ़िरऔन का घमंड और सरकशी और उसका दरिया में डुबोया जाना, बनी इस्राईल की ख़लासी वग़ैरह।

(ii) दोहरा सवाब

जो अल्लाह और उसकी किताब पर ईमान लाए, सब्र करे, बुराई के मुक़ाबले में भलाई करे, अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करे, फ़िज़ूल बातों से बचता रहे यह कहते हुए कि तुम्हारा अमल तुम्हारे साथ है और हमारा अमल हमारे साथ। (52 से 54)

(iii) क़ारून का वाकिआ

क़ारून बनी इस्राईल का ही एक व्यक्ति था, जिसने बग़ावत की। उसे अल्लाह ने इतना ख़ज़ाना और दौलत दे रखा था कि ताक़तवर इंसानों का एक समूह मुश्किल से ही उठा सकता था। लेकिन वह अल्लाह का शुक्र अदा करने के बजाए घमंड में पड़ गया। मूसा अलैहिस्सलाम ने उसे समझाने की पूरी कोशिश की और उसे नसीहत की *أَحْسِنَ كَمَا أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ* "लोगों के साथ भलाई करो जैसा कि अल्लाह ने तेरे साथ किया है" लेकिन उसने घमंड में मूसा अलैहिस्सलाम की बात न मानी जिसकी वजह से उसे दौलत समेत ज़मीन में धंसा दिया गया। (76 से 81, मुस्तदरक हाकिम 3536)

(iv) कुफ़्रार के सवाल का जवाब

अगर अल्लाह हमेशा के लिए दिन बना देता तो लोग रात का सुकून कैसे हासिल करते और अगर हमेशा के लिए रात बना देता तो यह रोज़ी कैसे तलाश करते? (71, 72)

(v) हिदायत अल्लाह के हाथ में है

नबी का काम सिर्फ़ अल्लाह के दिए हुए पैग़ाम को उसके दूसरे बन्दों तक पहुंचाना है अब जिसकी मर्ज़ी हो ईमान लाए या न लाए, नबी का काम हिदायत देना नहीं है। दरअसल यह आयत अबु तालिब के सिलसिले में नाज़िल हुई जैसा कि सही मुस्लिम हदीस नंबर 132 किताबुल ईमान के तहत हदीस मज़कूर है कि

إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِينَ

"बेशक तुम जिसे चाहो हिदायत नहीं दे सकते बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है और वह हिदायत पाने वालों के बारे में खूब जानता है" (56)

(vi) कुरआन को अल्लाह के बंदों तक पहुंचाने की ज़िम्मेदारी

कुरआन को अल्लाह के बंदों तक पहुंचाने, उसकी की तालीम देने और उसकी हिदायत के मुताबिक दुनिया की इस्लाह (सुधार) करने की ज़िम्मेदारी नबी पर और अब उनके उम्मतियों पर डाली गई है यह कुरआन लोगों को आखिरत के अंजाम से डराता है। (85)

(3) सूरह (029) अल अंकबूत का इब्तेदाई हिस्सा

(i) मोमिनों की आजमाइश

जो ईमान लाने का दावा करते हैं उन्हें ज़रूर आजमाया जाएगा ताकि पता चल सके कि कौन अपने दावे में सच्चा है और कौन झूठा। (03)

(ii) रिसालत

नूह अलैहिस्सलाम की साढ़े नौ सौ वर्ष दावत फिर भी बहुत कम लोग ईमान लाए और अल्लाह के अज़ाब के शिकार हुए, इब्राहीम अलैहिस्सलाम की अपने कबीले में दावत सिर्फ़ लूत अलैहिस्सलाम और उनकी पत्नी सारा रज़ियल्लाहु अन्हा ईमान लाए, ऐसे ही लूत, और शुऐब अलैहिमुस्सलाम की अपनी क़ौम को दावत और क़ौम का इंकार और अज़ाब में पड़ना, आद व समूद की हिलाकत। इन वाकिआत के ज़रिए एक तरफ़ तो नबी को तसल्ली दी गई है तो दूसरी तरफ़ कुफ़्रार व मुशरेकीन को डराया भी गया है कि उन्हीं क़ौमों जैसा तुम्हारा भी अंजाम हो सकता है। (14 से 38)

(iii) घमंड का अंजाम

फ़िरऔन, हामान, और क़ारून ने घमंड किया और अपना अंजाम चख लिया, आखिरत में उनका अंजाम और भी बुरा होगा। (39)

(iv) शिर्क की मिसाल मकड़ी से

जिन लोगों ने अल्लाह को छोड़कर दूसरे को अपना सरपरस्त बना रखा उनकी मिसाल मकड़ी की सी जो अपना एक घर बनाती है और सबसे कमज़ोर घर मकड़ी का ही होता है काश यह लोग इल्म रखते। (41)

सभी जानते हैं कि मकड़ी का घर कितना कमज़ोर होता है लेकिन आधुनिक विज्ञान ने एक रिसर्च में यह साबित किया है कि मकड़ी sex के बाद मकड़े को जान से मार डालती है फिर जब बच्चे बड़े होते हैं तो वह मां को मार डालते हैं।

पारा (21) उतलु मा ऊहिय

इस पारे में पांच हिस्से हैं-

- (1) सूरह अल अंकबूत बाक़ी हिस्सा
- (2) सूरह अर रूम मुकम्मल
- (3) सूरह लुक़मान मुकम्मल
- (4) सूरह अस सज्दा मुकम्मल
- (5) सूरह अल अहज़ाब इब्तेदाई हिस्सा

(1) सूरह (029) अल अंकबूत बाक़ी हिस्सा

(i) नमाज़ बेहयाई और बुरे कामों से रोकती है

यानी अगर एक इंसान नमाज़ भी पाबंदी से पढ़ता है और बुरे व गन्दे कामों में भी पड़ा हुआ है तो इसका मतलब यह कि वह नमाज़ सही ढंग से अदा नहीं करता। वह सिर्फ़ दुनिया

वालों की नज़र में नमाज़ी है। उसे अपने पेट में गए लुक़मे से कपड़े व दीगर चीज़ों का जायज़ा लेना चाहिए। (45)

(ii) नबी के उम्मी होने (लिखना पढ़ना न जानने) की दलील

(ऐ नबी) तुम इस कुरआन से पहले कोई किताब नहीं पढ़ते थे और न कुछ अपने हाथ से लिख सकते थे। अगर ऐसा होता तो असत्य को पूजने वाले लोग सन्देह में पड़ सकते थे। (48)

(iii) हर जान को मौत का मज़ा चखना है

मौत से बच कर कोई भाग नहीं सकता। और यह भी तय है कि मौत के बाद भी दूसरी ज़िन्दगी (परलोक) है जहां इस दुनिया में किये गए कामों का हिसाब देना है। (57)

(iv) कुफ़्रार की हठधर्मी

कुफ़्रार को इस बात का ख़ूब ख़ूब यक़ीन है कि दुनिया और दुनिया की हर छोटी बड़ी चीज़ को अल्लाह ने ही बनाया है। यही वजह है कि जब उनसे पूछा जाता है "आसमान और ज़मीन को पैदा करने वाला, सूरज व चांद को कंट्रोल वाला, आसमान से बारिश बरसाने वाला, और मुर्दा पड़ी हुई ज़मीन को हरा भरा करने वाला कौन है? और जब कश्तियाँ भंवर में फंस कर हचकोले खाने लगती हैं तो तुम किसे पुकारते हो तो वह फ़ौरन जवाब देते हैं "अल्लाह" लेकिन इसके बावजूद ईमान नहीं लाते। (61 से 63)

(v) दुनिया की ज़िंदगी तो बस खेल तमाशा है

असल ज़िंदगी तो आखिरत की है इसलिए उसकी तैयारी हर वक़्त करते रहना चाहिए। (64)

(2) सूरह (030) अर रूम

(i) दो भविष्यवाणीयां

615 ईसवी में ईरान के बादशाह खुसरो परवेज़ ने रोम की ईंट से ईंट बजा दी और एक बड़ी सल्तनत का तक्ररीबन खात्मा कर दिया, कैसर को भाग कर कर्ताजिन्ना Carthage (जो अब तूनिस Tunisia देश है) में पनाह लेनी पड़ी। यही वह साल था जब हिजरत हब्शा हुई। चूंकि रूमी अहले किताब थे इसलिए मुसलमानों की उम्मीदें उनके साथ थीं दूसरी तरफ़ कुफ़्रारे मक्का ईरान की जीत सुनकर मुसलमानों को यह धमकी दे रहे थे कि जिस तरह ईरानियों ने रूमियों का खात्मा कर दिया है उसी तरह हम भी तुम्हें मिटा देंगे। इन हालात में सूरह रूम नाज़िल हुई जिसमें एक के बजाय दो भविष्यवाणी थी। "अगरचा रूमी परास्त हो गए हैं लेकिन चंद वर्षों के अंदर वह ग़ालिब हो जाएंगे और उस दिन मुसलमान भी खुशियां मना रहे होंगे। (आयत 02 से 05) चुनाँचे 624 ईसवी में जब कैसर ने आज़रबाईजान में घुसकर ज़रतुस्त (Zoroaster) के मुक़ाम पैदाइश अरमिया (Clorumia) को तबाह कर दिया। यही वह साल है जिसमें मुसलमानों को बद्र के मुक़ाम पर ज़बरदस्त फ़तह नसीब हुई। और जब कैसर ने पूरे ईरान पर क़ब्ज़ा कर लिया और खुसरो परवेज़ अपने ही घर में अपने बेटों के हाथ क़त्ल हुआ उसी साल मक्का फ़तह हुआ।

(ii) तौहीद के संदर्भ में अल्लाह की अज़मत की दस निशानियां

- अल्लाह ही ज़िन्दा को मुर्दा से और मुर्दे को ज़िन्दा से निकालता है, मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा करता है और आखिरत के दिन इस ज़मीन से तुम्हें निकाल खड़ा करेगा। (19)
- उस की निशानियों में ये भी है कि उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर तुम आदमी बनकर चलने फिरने लगे। (20)
- उस की निशानियों में से एक यह है कि उसने तुम्हारे वास्ते तुम्हारी ही जिन्स की बीवियाँ पैदा की ताकि तुम उनके साथ रहकर चैन करो और तुम लोगों के दरमियान प्यार और उलफ़त पैदा कर दी। (21)
- उस की निशानियों में आसमानों और ज़मीन का पैदा करना और तुम्हारी ज़बानों और रंगों का एख़तेलाफ़ भी है। (22)
- रात को तुम्हारे लिए नींद और दिन को अपने फ़ज़ल व करम (रोज़ी) की तलाश के लिए बनाया। (23)

- उस की निशानियों में से यह भी है कि वह तुमको डराने और उम्मीद दिलाने के वास्ते बिजली दिखाता है और आसमान से पानी बरसाता है और उसके ज़रिए से ज़मीन को उसके परती (मुर्दा) होने के बाद आबाद करता है। (24)
- उस की निशानियों में से एक यह भी है कि आसमान और ज़मीन उसके हुक्म से क़ायम हैं फिर (मरने के बाद) जिस वक़्त तुमको एक बार बुलाएगा तो तुम सबके सब ज़मीन से (ज़िन्दा हो होकर) निकल पड़ोगे। (25)
- अल्लाह ही है जिसका रिज़क़ चाहता है बढ़ा देता है और जिसका चाहता है तंग कर देता है। (37)
- उसकी निशानियों में से एक यह भी है कि वह हवाओं को (बारिश) की खुशख़बरी के वास्ते भेज दिया करता है ताकि तुम्हें अपनी रहमत की लज्ज़त चखाये और इसलिए भी कि कश्तियां उसके हुक्म से चल खड़ी हों ताकि तुम उसके फज़ल व करम से (अपनी रोज़ी) की तलाश करो। (आयत 46)
- अल्लाह ही है जिसने तुमको कमज़ोर (दुर्बल) पैदा किया फिर ताक़त बख़्शी। और फिर ताक़त के बाद दुर्बल और बुढ़ापे की हालत में पहुँका देता है। वह जो चाहता है पैदा करता है। (54)

(3) सूरह (031) लुक़मान मकम्मल

(i) तैहीद (अल्लाह की कुदरत के दलाएल)

- बग़ैर pillars का आसमान
- मज़बूत और भारी भरकम पहाड़।
- चौपाए और रेंगने वाले कीड़े
- आसमान से बारिश और ज़मीन पर हर तरह के हसीन जोड़े

(ii) लुक़मान हकीम की बेटे को वसीयत

- शिर्क कभी मत करना

● अगर राई के दाने के बराबर भी कुछ हो और फिर वह किसी सख्त पत्थर के अन्दर या आसमान में या ज़मीन में (छुपी हुई) हो तो भी अल्लाह उसे (आखिरत के दिन) हाज़िर कर देगा।

● नमाज़ क़ायम करो, भलाई का हुक्म दो, बुराई से रोको और इस रास्ते में जो भी तकलीफ़ पहुंचे उसपर सब्र करो।

● लोगों से मुंह बिगाड़ कर बात न कर और न ज़मीन पर अकड़ कर चलो।

● अपनी चाल दरमियानी और अपनी आवाज़ को पस्त रखो, क्योंकि नापसंदीदा आवाज़ गधे की आवाज़ है।

लुक्मान की नसीहत के साथ अल्लाह ने वालिदैन की इताअत को और शामिल किया है कि अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी के इलावा तमाम मामलात में उनकी इताअत ज़रूरी है। (13 से 19)

(iii) अल्लाह के एहसान अनगिनत हैं

धरती में जो पेड़ हैं अगर वह सब कलम बन जायें और समुद्र, सात अन्य समुद्रों के साथ स्याही बन जायें, तब भी अल्लाह की बातें समाप्त न हों। निस्सन्देह अल्लाह सर्वशक्तिमान और विवेकवाला (हलीम) है। (27)

(iv) पांच चीजों का इल्म सिर्फ़ अल्लाह तआला को है

● क़यामत कब आएगी।

● बारिश कब कहाँ और कितनी होगी।

● मां के पेट में क्या (लड़की या लड़का, गोरा या काला, सही सालिम या विकलांग) परवरिश पाएगा।

● इंसान कल क्या करेगा या कल क्या कमायेगा।

● मौत कब और कहाँ आएगी। (34)

(4) सूरह (032) अस सज्दा मकम्मल

(i) कुरआन की अज़मत

कुरआन तमाम दुनिया के पालनहार की जानिब से नाज़िल की गई किताब है जिसमें शक की कोई गुंजाइश नहीं, और यही तेरे रब की जानिब से हक़ है। (2, 3)

(ii) तैहीद

- आसमान व ज़मीन और उसके दरमियान मौजूद तमाम चीज़ों का ख़ालिक अल्लाह ही है और ग़ैब व हाज़िर का मालिक भी।
- हर काम की तदबीर वही करता है।
- इंसान की तख़लीक़ पहले मिट्टी से फिर पानी के एक हक़ीर क़तरे (वीर्य) से की, उसको परवान चढ़ाया, रूह फूँकी, और कान आंख और दिल देकर उसे इन्तेहाई आकर्षक सूरत और मुनासिब क़द व क़ामत वाला बनाया। (4 से 9)

(iii) क़यामत

मुजरिम उस दिन सिर झुकाए खड़े होंगे, उनपर ज़िल्लत छाई हुई होगी। वह दुनिया में वापस आने की तमन्ना करेंगे और मोमिन जो दुनिया में अल्लाह के लिए अपने आराम को कुर्बान करते हैं अल्लाह के पास उनके लिए ऐसी नेअमते हैं जिसका तस्व्वुर भी दुनिया में लोग नहीं कर सकते। (12)

(iv) मोमिन कौन?

- जब अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है तो सज्दे में गिर पड़ते हैं।
- अपने रब की हम्द व सना (तारीफ़) बयान करते हैं।
- घमंड नहीं करते
- जिनके पहलू बिस्तर से दूर रहते हैं और दुआ करते हैं और अपने रब को ख़ौफ़ व उम्मीद के दरमियान पुकारते हैं।
- अल्लाह ने जो माल उन्हें दिया है उसमें से खर्च करते हैं। (15, 16)

(5) सूरह 033 अल अहज़ाब (इब्तेदाई हिस्सा)

(i) ज़माना जाहिलियत के तीन ग़लत ख़्यालात की तरदीद

- उनका ख़्याल था कि कुछ लोगों के पास दो दिल होते हैं। यहां बताया गया कि दिल तो बस एक ही होता है उसमें या तो ईमान होगा या कुफ़्र।
- "ज़िहार" के अल्फ़ाज़ जैसे *أنت علي كظهر أمي، أو كبطن أختي، أو كفخذ بنتي ونحو ذلك* (तू मुझपर मेरी माँ की पीठ की तरह हराम है। या मेरी बहन के पेट की तरह हराम है। या मेरी बेटी के रान की तरह हराम है) कहने से बीवी हराम नहीं हो जाती लेकिन उसका कफ़़ारा देना पड़ेगा।
- जिसको चाहते थे मुंह बोला बेटा बना लेते थे फिर उसे हक़ीक़ी बेटे के सभी हुक्क़ दिए जाते थे यहां बताया गया कि मुंह बोला कभी हक़ीक़ी बेटे की तरह नहीं हो सकता। उसे विरासत में हिस्सा भी नहीं मिलेगा और उससे अपना नसब जोड़ना भी हराम है। (4, 5)

(ii) ग़ज़वा खंदक़ (ग़ज़वा अहज़ाब) का ज़िक़्र

ग़ज़वा खंदक़ के मौक़ा पर मुसलमान खंदक़ के अंदर थे और बाहर दुश्मनों ने हर तरफ़ से घेर रखा था। भूखे रहने की नौबत आ गयी। यहूदी क़बीले भी मुसलमानों के दुश्मन हो गए थे। वह मक्का के काफ़िरों से भी ज़्यादा ख़तरनाक हो रहे थे ऐसे हालात का नक़्शा खींचा गया है। "जब वह ऊपर से और नीचे से तुमपर चढ़ आए। जब डर के मारे आँखें पथरा गईं, कलेजे मुँह को आने लगे और तुम लोग अल्लाह के बारे में तरह-तरह के गुमान करने लगे। उस वक़्त ईमान लाने वाले ख़ूब आज़माए गए और बुरी तरह हिला मारे गए। (10, 11)

(iii) मुनाफ़ेक़ीन की पहचान

- ◆ हर मौक़ा पर पीठ दिखाते हैं,
- ◆ जब मुसीबत और परेशानी का सामना या ख़ौफ़ का माहौल होता है उनपर मारे डर के मौत छाने लगती है। और जब शांतिपूर्ण माहौल हो जाता है तो उनकी ज़बानें कैची से भी तेज़ चलने लगती हैं।
- ◆ ग़ज़वा खंदक़ में मुनाफ़ेक़ीन न केवल यह कि मैदान से भागना चाहते थे बल्कि लोगों को मशविरा भी देते फिर रहे थे। (12 से 20)

पारा (22) व मन यक़नुत

इस पारे में चार हिस्से हैं-

- (1) सूरह अल अहज़ाब (बाक़ी हिस्सा)
- (2) सूरह सबा मुकम्मल
- (3) सूरह फ़ातिर मुकम्मल
- (4) सूरह यासीन (इब्तेदाई हिस्सा)

(1) सूरह (033) अल अहज़ाब (बाक़ी हिस्सा)

(i) उम्माहातुल मोमेनीन के लिए सात अहकाम

लेकिन इसके मुखातिब सभी औरतें हैं यह आम (general) हुक्म भी है।

- नज़ाकत (नरमी) के साथ बात न करें।
- बिना अति आवश्यक ज़रूरत के घर से बाहर न निकलें।
- ज़माना जाहिलियत की औरतों की तरह बनाव सिंगार और अपने सतर को ज़ाहिर करते हुए बाहर न निकलें।
- नमाज़ की पाबंदी करें
- ज़कात अदा करें
- अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करें
- कुरआन की तिलावत किया करें। (34)

(ii) जिस के अंदर यह दस सिफ़ात हों उसके लिए जन्नत की खुशख़बरी

- 1, मुस्लिम होना
- 2, मोमिन होना
- 3, फ़रमाबरदारी

- 4, सच्चाई
 - 5, अल्लाह का खौफ़
 - 6, सदक़ा करना
 - 7, सत्यवादी (रास्तबाज़ी)
 - 8, सब्र
 - 9, शर्मगाह (secret parts) की हिफ़ाज़त
 - 10, अल्लाह का ज़िक्र
- (35)

(iii) नबी के फ़ैसले के बाद किसी को कोई इख़्तियार नहीं

किसी मोमिन मर्द या किसी मोमिन औरत के लिए जाएज़ हो नहीं है कि जब अल्लाह और उसके रसूल कोई फ़ैसला कर दें तो उनको अपने उस काम (के करने न करने) का इख़्तियार हो। और जिसने भी अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी की वह यक़ीनन खुली हुई गुमराही में जा पड़ा। (आयत 36)

(iv) ज़ैनब बinte जहश का निकाह

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक जाहिली क़ौमी घमंड को उस वक्त तोड़ा था जब आपने अपनी फुफ़ीज़ाद बहन ज़ैनब बinte जहश का निकाह अपने आज़ाद किये हुए गुलाम ज़ैद बिन हारिसा से करा दिया। लेकिन दोनों में निबाह न हो सका और उनके दरमियान जुदाई हो गई। अब जाहिली दस्तूर के मुताबिक़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उनका निकाह नहीं हो सकता था क्योंकि वह मुंह बोले बेटे की बीवी बन चुकी थीं। चुनाँचे इस जाहिली तस्वूर को भी तोड़ा गया और अल्लाह ने आप को निकाह का हुक्म दिया और आप ने उनसे निकाह कर लिया। (37)

कशफ़ुल महजूब (शैख़ अली हुजैरी) और क़ससुल अंबिया (गुलाम नबी बिन इनायतुल्लाह) में लिखा हुआ है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार ज़ैनब को देख लिया और आप के मन में ख़याल आया जब ज़ैद को यह पता चला तो उन्होंने ने ज़ैनब को तलाक़ दे दिया। और आपने शादी कर ली (نكحها) यह एक इल्ज़ाम है ऐसी बातों से हम अल्लाह की पनाह चाहते हैं) यह मालूम होना चाहिए कि ज़ैनब बinte जहश कोई और नहीं

थीं बल्कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की फूफी उमैमा बिनते अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हा की बेटी थीं, उनकी पूरी ज़िंदगी आप के सामने गुज़री थी। इसलिए देख कर आशिक़ होने का सवाल ही पैदा नहीं होता।

(v) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आखिरी नबी हैं

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا

मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं बल्कि वह अल्लाह के रसूल और आखिरी नबी हैं और अल्लाह को तमाम चीज़ों का इल्म है। (40) (अब जो भी अपने नबी होने का दावा करे वह झूठा होगा)

(vi) नबी की तारीफ़

- अल्लाह खुद नबी पर दरूद (रहमत) भेजता है
- फ़रिश्ते रहमत की दुआ करते हैं
- ईमान की रौशनी
- गवाह और खुशख़बरी सुनाने वाला
- अल्लाह के अज़ाब से डराने वाला।
- दावत देने वाला और रौशन चिराग़ बनाकर भेजा है। (43 से 47)

(vii) नबी पर दरूद व सलाम का हुक्म

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا

बेशक अल्लाह और उसके फरिश्ते नबी पर दरूद भेजते हैं तो ऐ ईमान वालो तुम भी दरूद व सलाम भेजते रहो। (आयत 56)

(viii) इंसान बड़ा ज़ालिम, जाहिल है

إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا

बेशक हमने (रोज़े अज़ल) अपनी अमानत को आसमान, ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश किया तो उन्होंने उसका बोझ उठाने से इंकार किया और डर गए और इंसान ने उसे उठा लिया बेशक इंसान (अपने हक़ में) बड़ा ज़ालिम और नादान है। (72)

(ix) कुछ अहम बातें

- ले पालक को अपना नसब देना हराम है। (4, 5)
- नबी मोमिनों पर उनकी जान से ज़्यादा अज़ीज़ हैं और उनकी बीवियां मोमिनों की माएं हैं। (6)
- अल्लाह के रसूल की ज़िंदगी ही लोगों के लिए उसवा ए हसना (role model) है। (21)
- हमबिस्तरि से पहले तलाक़ देने पर कोई इद्दत नहीं है। (49)
- चाचा की बेटी, फूफी की बेटी, मामू की बेटी और ख़ाला की बेटी से शादी कर सकते हैं। (50)
- पिता के घर, बेटों के घर, भाइयों के घर, भतीजों के घर, भांजों के घर और अपनी ससुराल में जाने की इजाज़त दी गई है। (55)
- जो अल्लाह और रसूल को तकलीफ़ या दुख पहुंचाए उनपर दुनिया और आखिरत दोनों में अल्लाह की लानत और अपमान करने वाला अज़ाब है। (57,58)

(2) सूरह (034) सबा मुकम्मल

(i) तौहीद

आसमान, ज़मीन और तमाम चीज़ों का मालिक अल्लाह है, ज़मीन के अंदर क्या दाख़िल होता है, और उसमें से क्या निकलता है, आसमान से क्या उतरता है या उसपर चढ़ता है। सरसों के दाने से भी छोटी चीज़ हो या बड़ी सब अल्लाह के इल्म में है और किताब में दर्ज है। (1 से 3).

(ii) दाऊद और सुलैमान अलैहिस्सलाम का वाकिआ

दाऊद अलैहिस्सलाम के लिए अल्लाह ने लोहे को मोम की तरह नरम कर दिया था और हुक्म दिया कि वह कुशादा ज़िरह बनाएं और उसकी कड़ियों को मुनासिब अंदाज़ से लगाएं और साथ में ज़िक्र व तस्बीह भी करते रहें। अल्लाह ने उन्हें ऐसी दिलकश आवाज़ अता की थी कि पहाड़ और परिंदे भी अल्लाह के हुक्म से उनके साथ तस्बीह बयान करते थे।

अल्लाह ने हवा को सुलैमान अलैहिस्सलाम के अधीन कर दिया। उसकी सुबह की रफ़्तार एक महीने की होती थी और शाम की एक महीने की। तांबे को पिघला कर चश्मा जारी कर दिया। जिनों को उनके अधीन कर दिया था कि सुलैमान अलैहिस्सलाम को जो बनवाना मंज़ूर होता (जैसे) मस्जिदें, महल, क़िले और तस्वीरें और हौज़ों के बराबर प्याले या (एक जगह) गड़ी हुई (बड़ी बड़ी) देरों वगैरह, यह जिन्नात उनके लिए बनाते थे। (10 से 13).

(iii) जिन्नात को ग़ैब का इल्म नहीं

कुछ लोगों का ख़्याल है कि जिन्नात ग़ैब का इल्म जानते हैं तो कुरआन ने उसका खंडन करते हुए कहा "जब सुलैमान की मौत हो गई तो किसी को उनकी मौत का पता न चला। ज़मीन की दीमक सुलैमान की लाठी को खाती रही। फिर लाठी जब खोखली होकर टूट गई तो सुलैमान की लाश गिर पड़ी तब जिन्नों को सुलैमान अलैहिस्सलाम की मौत का पता चला। अगर वह लोग ग़ैबदां (ग़ैब के जानने वाले) होते तो फिर उनकी मौत से इतने लंबे समय तक बे ख़बर न रहते। (14)

(iv) क्रौमे सबा की तबाही

क्रौमे सबा को अल्लाह ने बड़ी नेअमतों से नवाज़ा था। उन के दोनों जानिब पहाड़ थे जहां से नहरें और चश्मे बह बह कर उनके शहरों में आते थे, उसी तरह नाले और दरया भी इधर उधर से आते थे। यमन की राजधानी सना से तीन मंज़िल दूर मआरिब में एक दीवार थी जो सददे मआरिब के नाम से मशहूर थी। पानी की कसरत और उपजाऊ ज़मीन होने की वजह से यह इलाक़ा बहुत हरा भरा रहता था। बाग़ों की इतनी कसरत थी कि क़तादह के ब क्रौल कोई औरत टोकरा सिर पर रख कर निकलती तो कुछ दूर जाने के बाद टोकरा फलों से भर जाता था। दरख़्तों से इतने फल गिरते थे कि हाथ से तोड़ने की ज़रूरत नहीं पड़ती थी लेकिन जब वहां के लोग अल्लाह के हुक्म की खुली नाफ़रमानी करने लगे तो बांध टूट के सैलाब आ गया। सारी नेअमतें ख़त्म हो गईं, पूरा इलाक़ा वीरान हो गया और झाड़ झनकार और कुछ बेरी के पेड़ के इलावा कुछ नहीं बचा। (15 से 18).

(3) सूरह (035) फ़ातिर मुकम्मल

(i) तौहीद के दलाएल

- ज़मीन व आसमान की तखलीक (creation), फ़रिश्तों की तख़ीक़ और उनके अक्सांम (दो दो, तीन तीन, चार चार और उस से भी ज़्यादा बाजुओं वाले), जिसके लिए रहमत के दरवाज़े खोल दे कोई बंद नहीं कर सकता और जिसका रोक ले कोई खोल नहीं सकता (1 से 3)
- इंसान की तखलीक़ और ज़िन्दगी के मुख्तलिफ़ मराहिल, (11)
- जो लोग अल्लाह के साथ किसी को शरीक करते हैं तो वह शरीक खुजूर की गुठली की झिल्ली के बराबर भी इख्तियार नहीं रखते। (13)
- हक़ीक़त में अल्लाह ही आसमान और ज़मीन को थामे हुए है कि कहीं वह झूल ही न जाएं और अगर यह अपनी जगह से झूल जाएं तो फिर उसके सिवा कौन है जो उसे थाम सके। बेशक अल्लाह बड़ा बुर्दबार (और) बड़ा बख़्शने वाला है। (आयत 41)

(ii) रिसालत

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली दी गयी है कि आप काफ़िरों के इंकार से घबराएं नहीं क्योंकि आप से पहले जितने रसूल आये हैं वह भी झुठलाए जा चुके हैं। इसलिए आप अपना काम जारी रखिये और रंजीदा मत हों। (4)

(iii) कभी एक जैसे नहीं हो सकते

जिस तरह मीठा और खारा पानी, अंधे और देखने वाले, अंधेरे और उजाले, धूप और छाया, ज़िन्दा और मुर्दा बराबर नहीं हो सकते ऐसे ही ईमान और कुफ़्र का बराबर होना भी कभी संभव नहीं। (12, 19 से 21)

(iv) अल्लाह की निशानियां

हवा, बारिश, मुर्दा ज़मीन को ज़िन्दा करना, समुद्र में मीठे और खारे पानी को मिलाने के बावजूद अलग अलग रखना, ताज़ा गोشت और ज़ेवर का हुसूल, रात को दिन में और दिन को रात में दाखिल करना, सूरज और चांद को एक दायरे में कंट्रोल में रखना, वगैरह (12, 19, 21)

(v) उलेमा कौन हैं

- जो अल्लाह से डरते हैं।
- अपने नफ़्स का तज़किया करते (पाक साफ़ रखते) हैं।
- अल्लाह की किताब की तिलावत (कुरआन को पढ़ते, समझते, उसे लोगों में फैलाते और उसी के अनुसार फ़ैसला) करते हैं।
- नमाज़ क़ायम करते हैं।
- अल्लाह ने जो कुछ दिया है उसमें से अल्लाह के रास्ते में खुले और छुपे तौर पर ख़र्च करते हैं। (18, 28, 29)

(4) सूरह (036) यासीन, इब्तेदाई हिस्सा

सूरह के इब्तेदाई हिस्से का ज़िक्र भी अगले पारे में बाक़ी हिस्से के तहत होगा।

पारा (23) व माली

इस पारे में चार हिस्से हैं-

- (1) सूरह यासीन
- (2) सूरह अस साफ़फ़ात मकम्मल
- (3) सूरह साद मकम्मल
- (4) सूरह अज़ जुमर इब्तेदाई हिस्सा

(1) सूरह (036) यासीन

(i) हबीब नज्जार का वाकिआ

एक बस्ती वालों ने अपने तीन रसूलों को झुठलाया और क़त्ल के दरपे हुए तो उनकी क़ौम के एक शख्स हबीब नज्जार ने उन्हें समझाने की कोशिश की और दो बातें रखीं "इन रसूलों की पैरवी कर लो जो तुमसे बदले में कुछ नहीं मांगते" और "हिदायत पर भी हैं" लेकिन क़ौम ने समझने के बजाय उस शख्स को ही शहीद कर डाला। जन्नत में भी जाकर भी उसकी तमन्ना यही थी कि يَلَيِّتْ قَوْمِي يَعْلَمُونَ "काश मेरी क़ौम जानती" कि मुझे कैसी कैसी नेअमतेँ अता की गई हैं। (20 से 27)

(ii) अल्लाह की कुदरत के दलाएल

- मुर्दा ज़मीन का बारिश से ज़िंदा हो कर पौधे और दाने निकालना, दुनिया में हर चीज़ का जोड़े जोड़े होना। (33 से 36)
- दिन के उजाले को रात के अंधेरे में तब्दील कर देना, सूरज का अपनी axis पर घूमना और चांद की एक हद (limit) मुक़र्रर करना कि वह अपनी मंज़िल (limit) पर पहुंच कर पुरानी चाल पर लौट आए। फ़लक में हर चीज़ का गरदिश करना और कश्ती का समुद्र में चलना। (37 से 43)
- बड़े बड़े जानवरों को इंसान के कंट्रोल में देना, कुछ पर सवारी तो कुछ को ख़ोराक के लिए मख्सूस करना वगैरह। (71, 72)

(iii) आखिरत

हश्र के दिन की हौलनाकियां, सूर फूँके जाने का आदेश, नेक व बद को अलग अलग करने का आदेश, मोमिनों के लिए जन्नत और उसकी नेअमतों की खुशखबरी, मुजरिमों के मुंह पर मुहर लगा कर उनके हाथ पैर और मुखलिफ़ अंगों की गवाही और उनका इबरत्ताक अंजाम। आयत 51 से 67 तक आखिरत का ऐसा मंज़र खींचा गया है कि पढ़ते हुए अपनी आंख के सामने सीन चलता हुआ महसूस होता है।

(iv) अल्लाह की शान (कुन फ़ यकून)

इंसान को इस बात पर तअज्जुब क्यों है कि उसके मरने के बाद पुरानी हड्डियों में पुनः जान कैसे डाली जाएगी? वह ख़ालिक के लिए तो मिसालें बयान करता है और अपनी पैदाइश के मरहले को भूल जाता है, वह आसमान और ज़मीन की तख़लीक़ पर ग़ौर क्यों नहीं करता? क्या उसे नहीं पता कि हरे भरे दरख़्तों से आग कैसे पैदा होती है जिसे वह अपने घर में जलाता है। अल्लाह तो ज़बरदस्त ख़ालिक़ है उसके लिए कोई काम सिरे से मुश्किल ही नहीं है। बल्कि अल्लाह की शान तो यह है कि जब किसी चीज़ को पैदा करना चाहता है तो वह कह देता है कि "हो जा" तो (फ़ौरन) हो जाती है। (77 से 82)

(2) सूरह (037) अस साफ़़ात मुकम्मल

(i) तौहीद और अल्लाह की कुदरत

तुम्हारा रब एक है, ज़मीन, आसमान, और उन दोनों के दरमियान जो कुछ भी है सब का रब भी एक ही है, उसी ने दुनिया के आसमान को तारों से सजाया है और इंसान को चिपचिपाती मिट्टी से पैदा किया (04 से 06)

(ii) शैतान ग़ैब का हाल नहीं जानते

जब कोई शैतान शुन गन लेने के लिए आसमान की तरफ़ जाना चाहता है तो शहाबे साक्रिब (burning flame) उसका पीछा करता है। (07 से 10)

(iii) नौ अंबिया के वाक़ये

नूह, इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़, मूसा, हारून, लूत, इलियास, यूनस अलैहिमुस्सलाम, इलियास अलैहिस्सलाम को (शाम की तरफ़ एक ऐसी क़ौम के पास नबी बना कर भेजा गया था जो बअल (بعل) नाम के बुत की पूजा करती थी), (123 से 130) यूनस अलैहिस्सलाम के मछली के पेट में जाने का वाक़िआ भी तफ़सील से बयान किया गया है। वह लाखों लोगों की तरफ़ रसूल बना कर भेजे गए थे (139 से 148)

(iv) इब्राहीम अलैहिस्सलाम का वाक़िआ

इब्राहीम अलैहिस्सलाम का वाक़िआ दो हिस्सों में है:

1, तौहीद की दावत

उन्होंने अपनी क़ौम को समझाने की संभवतः कोशिश की। अंत में एक दिन मौक़ा पाकर छोटी छोटी मूर्तियां तोड़कर कुल्हाड़ी बड़ी वाली मूर्ति के गले में लटका दी लेकिन क़ौम किसी तरह भी मानने को राज़ी नहीं हुई बल्कि उल्टे उनकी दुश्मन हो गई और उन्हें वतन छोड़ने पर विवश होना पड़ा। (83 से 99)

2, बेटे की कुरबानी

यह उस अज़ीम तारीख़ की बुनियाद है जिसके हवाले से हर साल ईदुल अज़हा में कुरबानी की जाती है। इब्राहीम अलैहिस्सलाम के यहां एक लंबी मुद्दत के बाद इस्माईल अलैहिस्सलाम की शक़ल में औलाद हुई। जब वह दौड़ने लगे तो इब्राहीम को ख़्वाब में दिखाया गया कि वह अपने बेटे को ज़बह करें। इब्राहीम ने अपना ख़्वाब इस्माईल से बयान किया और जब इस्माईल को राज़ी पाया तो माथे के बल लिटा दिया और छुरी चला दी लेकिन अल्लाह ने एक टुंबा भेज कर इस्माईल के बदले में कुरबानी का हुक्म दिया और इब्राहीम अलैहिस्सलाम की इस कुरबानी को रहती दुनिया तक के लिए यादगार बना दिया। (100 से 113)

(v) जहन्नमियों का एक दुसरे पर लान तान और जन्नतियों की खुशगवार बातचीत

(vi) ज़क़कूम का पेड़

ज़क़कूम का वृक्ष नरक के तल से निकलता है। उसका फल ऐसा है जैसे शैतान का सिर। यह अत्याचारियों (जहन्नमियों) का खाना होगा और उसी से वह पेट भरेंगे (62 से 66)

(3) सूरह (038) "साद" मुकम्मल

(i) तौहीद

तमाम इंसान व जिन्नात और ज़िंदगी व मौत के पूरे निज़ाम के लिए बस एक ही अल्लाह काफ़ी है।

(ii) रिसालत

इसके तहत नौ नबियों और पांच क्रौमों का ज़िक्र किया है।

इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़, याकूब, अय्यूब, दाऊद, सुलैमान, अल यसअ, जुल किफ़ल कुछ लोगों का अनुमान है कि कपिल को अरबी में किफ़ल कर दिया गया है इसलिए जुल किफ़ल का मतलब हुआ किफ़ल वाला यानी कपिल वाला यानी गौतम बुद्ध हैं जिनका जन्म कपिलवस्तु में हुआ था उनके मानने वालों ने किताबों में तहरीफ़ करके उनकी तालीमात को बिल्कुल ही बदल डाला क्योंकि आज के बौद्ध धर्म में खुदा का कोई तस्व्वुर ही नहीं है।

क्रौमे नूह, क्रौमे आद, क्रौमे समूद, क्रौमे लूत असहाबुल ऐका

नबियों (खास तौर पर दाऊद व सुलैमान अलैहिमस्सलाम की शुक्र गुज़ारी और अय्यूब अलैहिस्सलाम के सब्र) का ज़िक्र कर के जहां एक तरफ़ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तसल्ली दी गई है तो दूसरी तरफ़ क्रौमों के वाकिआत बयान कर के कुफ़्रार कुरैश को भयानक अंजाम से डराया गया है।)

(iii) आज़माइश किसी भी इंसान की हो सकती है

आज़माइश के दौर से किसी को भी गुज़रना पड़ सकता है बल्कि जो नेक बंदे होते हैं उनकी आज़माइश ज़्यादा सख़्त होती है। जैसे कि दाऊद अलैहिस्सलाम का 1 और 99 भेड़ों के मुक्कद्दमे के ज़रिए, सुलैमान अलैहिस्सलाम का कुर्सी पर एक अधूरा जिस्म डाल कर और अय्यूब अलैहिस्सलाम का भयानक बीमारी में मुब्तिला कर के आज़माइश की गई हालांकि उन्हें अल्लाह ने बड़ी नेअमतों और मुअजि

ज़ात से नवाज़ा था लेकिन तीनों सब्र व शुक्र में पूरे उतरे। (17 से 26, 30 से 40, 41 से 44)

(iv) आदम व इब्लीस का वाकिआ

इंसान की तखलीक के समय रब ने तमाम फ़रिश्तों से कहा मैं मिट्टी से एक इंसान बनाने वाला हूँ, जब मैं उसे ठीक कर लूँ और उसमें रूह फूँक दूँ तो उसके लिए सज्दे में गिर जाना। तमाम फ़रिश्तों ने सज्दा किया मगर इब्लीस ने यह कहकर इंकार कर दिया कि मैं उस मिट्टी के बने हुए इंसान से बेहतर हूँ, उस दिन से वह लानती ठहरा। फिर उसने क़यामत के दिन तक मोहलत मांगी जो उसे दी गई, फिर उसने कहा तेरी इज्जत की क़सम कुछ मुख़्लिस इंसानों को छोड़कर सभी को बहका दूंगा, रब ने फ़रमाया सच्ची बात तो यह है कि फिर मैं जहन्नम को तुझसे और तेरे मानने वालों से भर दूंगा। (71 से 85)

(v) कुछ अहम बातें

- ◆ हुकूमत का काम अल्लाह के क़ानून को लागू करना और ज़मीन पर न्याय करना है। (26)
- ◆ ज़मीन, आसमान और दुनिया की तमाम चीज़ें बेमक़सद नहीं बनाई गई हैं। (27)

(4) सूरह (039) अज़ जुमर (इब्तेदाई हिस्सा)

(i) कुरआन की अज़मत

यह एक बेहतरीन कलाम है। इसके तमाम हिस्से आपस में मिलते जुलते हैं, बार बार बातें दुहराई गई हैं। इसमें कोई विरोधाभास या अंतर नहीं है। पूरी किताब, आरम्भ से अंत तक, एक ही विषय, एक ही अक़ीदा, एक ही विचार और कर्म की प्रणाली को प्रस्तुत करती है। उसका प्रत्येक भाग दूसरे भाग और हर मज़मून दूसरे मज़मून की पुष्टि और व्याख्या करता है। इसे सुनकर लोगों के रोंगटें खड़े हो जाते हैं लेकिन मोमिनों के दिल नरम होकर अल्लाह के ज़िक्र में मशगूल हो जाते हैं। इसमें कोई ऐसी जटिल बात नहीं है कि आम आदमी को समझने में कोई मुश्किल पेश आए बल्कि साफ़ साफ़ और सरल बात कही गयी है जिसे प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि यह किताब किस चीज़ को ग़लत कहती है और क्यों, किस चीज़ को सही कहती तो किस वजह से, क्या स्वीकार कराना चाहती है और किस चीज़ का इंकार, किन कामों का आदेश देती है और किन कामों से रोकती है। (आयत 01 से 03 और 23, 28)

(ii) तौहीद

- 1, इंसान केवल और केवल अल्लाह की इबादत करे और किसी दुसरे को साझी ठहरा कर तौहीद को गंदा न करे।
- 2, अल्लाह के इलावा किसी को कारसाज़ (काम बनाने वाला) न बनाये वह हरगिज़ अल्लाह से क़रीब नहीं कर सकते।
- 3, अल्लाह तआला ने इंसान को मां के पेट मे तीन अंधेरो के अंदर पैदा किया।
- 4, मुशरिक की मिसाल उस गुलाम की तरह है जिसके कई मालिक हों और तौहीद के मानने वाली की मिसाल उस गुलाम की तरह है जिसका एक ही मालिक हो। (आयत 02, 06, 29)

(iii) रब के सिवा कौन कर सकता है

अल्लाह एक है जो सबको कंट्रोल किए हुए हैं ज़मीन और आसमान की तखलीक, दिन और रात को एक दूसरे पर लपेटना, सूरज और चांद पर कंट्रोल, प्रत्येक चीज़ का नियमित समय तक चलते रहना, तमाम इंसानों को एक जान से पैदा करना और उसी से जोड़ा बनाना, जानवरों के आठ जोड़ें, मां के पेट में 3 अंधेरे परदों के अंदर एक के बाद एक शकल देना। यह सब एक रब के सिवा कौन कर सकता है। (06)

(iv) इंसान का कुफ़्र

इंसान को जब कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो अपने रब को पुकारता है फिर जब अल्लाह अपनी नेअमत अता कर देता है तो उसे भूल जाता है और शरीक मुक़र्रर करने लगता है। या यह कहता है कि यह चीज़ें तो मेरे इल्म की बुनियाद पर मुझे दी गई हैं यह नहीं समझता कि यह तो एक आजमाईश है। (आयत 8, 49)

(v) अल्लाह की ज़मीन बहुत बड़ी है

अगर अल्लाह की बंदगी के लिए एक जगह तंग हो तो उसकी ज़मीन बहुत लंबी चौड़ी है अपना दीन बचाने के लिए किसी और तरफ़ निकल खड़े हों। (10)

पारा (24) फ़मन अज़लमु

इस पारे में तीन हिस्से है-

- (1) सूरह अज़ जुमर बाक़ी हिस्सा
- (2) सूरह अल मोमिन मुकम्मल
- (3) सूरह फ़ुससिलत (हाम मीम अस सज्दा)

(1) सूरह (039) अज़ जुमर बाक़ी हिस्सा

(i) सबसे बड़ा ज़ालिम

उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ (बुहतान) बाँधे और जब उसके पास सच्ची बात आए तो उसको झुठला दे। जहन्नम ही काफ़िरों का ठिकाना है। (आयत 32)

(ii) अल्लाह के रब होने का बयान

आसमान और ज़मीन का ख़ालिक सिर्फ़ अल्लाह ही है (इस को तमाम इंसान तस्लीम करते हैं)। अल्लाह जिसे हिदायत देना चाहे उसे कोई भटका नहीं सकता और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत नहीं दे सकता। उसने सबकी ज़िंदगी का एक वक़्त मुक़र्रर कर रखा है। (37)

(iii) काफ़िरों के दिल

जब एक अल्लाह का ज़िक्र होता है तो काफ़िरों के दिल डूबने लगते हैं और जब अल्लाह के इलावा किसी बनाए हुए माबूदों का ज़िक्र होने लगे तो फिर वही चेहरे खिल उठते हैं जो लोग ऐसा करेंगे तो वह कितना भी तावान (जुर्माना) देने की कोशिश कर लें अज़ाब से बच नहीं सकेंगे। (45)

(iv) अल्लाह की अपार रहमत का बयान

لَا تَقْنُطُوا مِنْ رَحْمَةِ اللَّهِ

अल्लाह की रहमत से कभी मायूस नहीं होना चाहिए अपनी निजी ज़िन्दगी में भी और सामाजिक जीवन में भी, खास तौर पर जो लोग अल्लाह के दीन की दावत लोगों तक पहुंचा रहे हों। (53)

(v) जहन्नमियों के जहन्नम में दाखिल होने की कैफ़ियत का बयान

काफ़िरों के गोल के गोल जहन्नम की तरफ़ हँकाए जाएँगे यहाँ तक की जब वह जहन्नम के पास पहुँचेंगे तो उसके दरवाज़े खोल दिए जाएँगे और उसका दरोगा उनसे पूछेगा कि क्या तुम्हारे पास खुद तुम्हीं में से कोई रसूल नहीं आया था जो तुमको तुम्हारे रब की आयतें पढ़कर सुनाता और तुमको इस बुरे दिन के पेश आने से डराता वह लोग जवाब देंगे क्यों नहीं! रसूल तो आए थे मगर हमने न माना, और अज़ाब का हुक्म काफ़िरों पर पूरा हो कर रहेगा। तब उनसे कहा जाएगा कि जहन्नम के दरवाज़ों में दाखिल हो जाओ और हमेशा इसी में रहो। जान लो कि तकब्बुर (घमंड) करने वालों के लिये कितना बुरा ठिकाना है। (आयत 71, 72)

(vi) जन्नतियों के जन्नत में दाखिल होने की कैफ़ियत का बयान

जो लोग अपने रब से डरते थे वह गिरोह दर गिरोह जन्नत की तरफ़ ले जाये जाएँगे यहाँ तक कि जब वह उसके पास पहुँचेंगे तो जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाएँगे और उसका दारोगा उन से कहेगा सलामती हो तुम पर खुश रहो। हमेशा के लिए जन्नत में दाखिल हो जाओ। मोमिन कहेंगे अल्लाह का शुक्र है जिसने अपना वायदा सच्चा कर दिखाया और हमें जन्नत का वारिस बनाया कि हम जन्नत में जहाँ चाहें रहें। क्या खूब बदला है अमल करने वालों के लिए। (आयत 73,74)

(2) सूरह (040) अल मोमिन मुकम्मल

(i) अल्लाह के सिफ़ाती नाम

अल अज़ीज़, अल अलीम, ग़ाफ़िरिज़ ज़न्ब, क़ाबिलित तौब, शदीदुल इक़ाब, ज़ित तौल, रफ़ीउद दरजात, जुल अर्श, अल हकीम, अल अली, अल कबीर, अल क़ह्हार, अस समीअ, अल बसीर, अल ग़ाफ़़ार, (2, 3, 15, 16, 20)

(ii) दो मौत और दो ज़िंदगी

इंसान बेजान था, अल्लाह ने उसे ज़िंदगी दी, फिर मौत देगा और फिर दोबारा ज़िंदा करेगा। काफ़िर इनमें से पहली तीन हालतों का इंकार नहीं करते क्योंकि observation में आती हैं मगर आखिरी हालत यानी दोबारा ज़िंदगी का इंकार करते हैं। क्योंकि वह उनके observation में नहीं आई है इसकी ख़बर सिर्फ़ अंबिया अलैहिमुस्सलाम ने दी है। क़यामत के दिन यह चौथी हालत भी मुशाहिदे में आ जायेगी तब यह काफ़िर उसकी तस्दीक़ करेंगे। (11)

(iii) आज के दिन किसका राज पाट है?

क़यामत के दिन जबकि सब लोग बेपर्दा होंगे, अल्लाह से उनकी कोई बात भी छुपी हुई न होगी। पूछा जाएगा “बताओ आज के दिन का मालिक कौन है?” (सारा जहाँ पुकार उठेगा) “अकेला अल्लाह जो सबपर हावी है।” (16)

(iv) मोमिन ज़ालिम के दरमियान रहते हुए भी मोमिन ही रहता है

जब फ़िरऔन के दरबार में मूसा अलैहिस्सलाम के क़त्ल की साज़िश हो रही थी तो एक मोमिन जो अपने ईमान को छुपाए हुए था उस ने कहा **أَتَقْتُلُونَ رَجُلًا أَنْ يَقُولَ رَبِّيَ اللَّهُ** क्या तुम ऐसे इंसान को क़त्ल करोगे जो कहता है मेरा रब अल्लाह है। उसने फ़िरऔन और उसके दरबारियों को डराया कि अगर तुम लोगों ने मूसा को क़त्ल किया तो अंजाम बहुत भयानक होगा। (28)

(v) फ़िरऔन का घमंड

फ़िरऔन ने अल्लाह तआला को देखने की नापाक ज़सारात करते हुए अपने वज़ीर हामान को एक महल तामीर कराने का हुक्म दिया। (37)

(vi) फ़िरऔन का अंजाम और क़ब्र के अज़ाब का सुबूत

फ़िरऔन को रोज़ाना सुबह और शाम आग के सामने पेश किया जाता है और आखिरत के दिन इन्तेहाई सख़्त अज़ाब में दाख़िल किया जाएगा। (46)

(vii) अल्लाह के हुक्म की नाफ़रमानी का अंजाम जहन्नम है

जो लोग घमंड में आकर मेरी इबादत से मुंह मोड़ते हैं वह ज़रूर ज़लील व ख़्वार हो कर जल्द ही जहन्नम में जाएंगे। (आयत 60)

(viii) इंसान की तखलीक़ का बयान

इंसान कभी मिट्टी था फिर नुफ़ा बना फिर अल्ला बना फिर जवान हुआ फिर बूढ़ा हुआ फिर मौत उसका मुक़द्दर है। (67)

(ix) अल्लाह की निशानियां

रात को सुकून, दिन को रौशन, ज़मीन को बिछौना और आसमान की छत बनाई, इंसान की बेहतरीन तस्वीर गरी की और उम्दा रिज़क़ दिया। (64)

(x) कुछ अहम बातें

- ◆ अल्लाह की आयत के मुक़ाबले में बग़ैर दलील के गुफ़्तगू करना अल्लाह की नाराज़गी का सबब बनता है। (35)
- ◆ दुनिया की ज़िंदगी तो गिनती की है हमेशा रहने की जगह तो आखिरत ही है। (39)
- ◆ मोमिन के तीन काम सब्र, इस्तेग़फ़ार, और सुबह शाम तस्बीह (55))

(3) सूरह (041) फ़ुससिलत (हाम मीम अस सज्दा)

(i) कुरआन का इंकार अल्लाह का इंकार है

कुफ़्रारे मक्का अक्सर यह रट लगाए रहते थे कि यह कुरआन मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) खुद घड़ कर लाते हैं तो उन्हें जान लेना चाहिए कि यह कलाम अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल हो रहा है, अगर किसी को यह कलाम सुन कर गुस्सा आता है तो मालूम होना चाहिए यह गुस्सा नबी के खिलाफ़ नहीं बल्कि अल्लाह के खिलाफ़ है अगर इस का इंकार करते हो तो अल्लाह की बात का इंकार करते हो, अगर इस से बेरूख़ी दिखाते हो तो अल्लाह के खिलाफ़ मुंह मोड़ते हो। (2 से 4)

(ii) नबी भी इंसान है

अल्लाह के रसूल भी तमाम इंसानों की तरह एक इंसान हैं फ़र्क़ यह है कि उनके पास अल्लाह की जानिब से वही आती है। उस वही का निचोड़ यह है कि अल्लाह एक और सिर्फ़ एक है। (06)

(iii) काएनात की तखलीक के छः दिन

अल्लाह ने दो दिन में ज़मीन, दो दिन में पहाड़ जमाया और ज़मीन के अंदर तमाम चीजें और दो दिन में सात आसमान बनाया और सजाया। यह आयत 9 से 12 तक मुतशाबेहात (unspecific) में से है।

(iv) निहारिका (nebula)

फिर उस ने आकाश की ओर रुख किया, जबकि वह मात्र धुआँ था। (आयत 11)

"धुएं से मुराद माद्दे की वह इब्तेदाई सूरत है जिसमें वह काएनात के वजूद में आने से पहले एक बे शक्ल बिखरे हुए गुबार की तरह फ़िज़ा में फैला हुआ था। इस युग के वैज्ञानिक इसी को Nebula का नाम देते हैं"

(v) इंसान के विरुद्ध गवाही

क़यामत के दिन इंसान के शरीर के अनेक भाग जैसे कान, आंख और खालें उसके खिलाफ़ गवाही देंगे, इंसान आश्चर्यचकित होकर खालों से पूछेगा तुमने हमारे खिलाफ़ कैसे गवाही दी तो उनका जवाब होगा हमें उसने बोलने की ताक़त दी है जिसने हर चीज़ को बोलना सिखाया है। (19 से 21)

(vi) कुफ़्रार की शरारत

जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुरआन मजीद की तिलावत करते तो काफ़िर लोगों को सुनने से मना करते और इतना शोर मचाते कि लोग तिलावत न सुन सकें। (26)

(vii) बेहतरीन बात

उस शख्स से बेहतर किसकी बात हो सकती है जो लोगों को अल्लाह की तरफ़ बुलाए, नेक अमल करे और कहे कि मैं मुसलमान हूँ। (33)

(viii) शैतान का वसवसा

जब शैतान वसवसा डाले (बहकाने की कोशिश करे) तो तत्काल अऊज़ुबिल्लाहि मिनस शैतानिर रजीम पढ़ना चाहिए। (36)

(ix) अल्लाह की निशानियां

रात और दिन, सूरज और चांद अल्लाह की बनाई हुई चीज़ें हैं इसलिए सूर्य, चन्द्रमा और अन्य वस्तुओं के बजाय अल्लाह की ही पूजा करनी चाहिए। वही मुर्दा पड़ी हुई ज़मीन को बारिश के ज़रिए नरम करता है। (37 से 39)

(x) ग़ैब का इल्म केवल अल्लाह के पास है

- 1, क़यामत का इल्म
- 2, ग़िलाफ़ों, (ख़ोल) में से फल का निकलना
- 3, मां के पेट में क्या होगा?
- 4, बच्चा कब और कैसे पैदा होगा? (47)

(xi) कुरआन रहती दुनिया तक मुअजिज़ा (चमत्कार) है

سُرِّيهِمْ آيَاتِنَا فِي الْأَفَاقِ وَفِي أَنْفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ ۖ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ

हम शीघ्र ही अपनी कुदरत की निशानियाँ अतराफ़ आलम में (दुनिया में हर तरफ़) और खुद उनके अंदर भी दिखाएंगे यहाँ तक कि उन पर ज़ाहिर हो जाएगा कि यक़ीनन यही हक़ है क्या तुम्हारा परवरदिगार हर चीज़ पर क़ाबू रखने के लिए काफ़ी है। (53)

पारा (25) इलैहि युरददो

इसमें कुल पांच हिस्से हैं-

- (1) फुस्सिलत (हाम मीम अस सज्दा) बाक़ी हिस्सा
- (2) सूरह अश शूरा मुकम्मल
- (3) सूरह अज़ जुखरूफ़ मुकम्मल
- (4) सूरह अद दुखान मुकम्मल
- (5) सूरह अल जासिया मुकम्मल

(1) सूरह (041) फुस्सिलत (हाम मीम अस सज्दा) बाक़ी हिस्सा

इसका बयान पारा 24 में इसी सूरह के तहत गुज़र चुका है।

(2) सूरह (042) अश शूरा मुकम्मल

(i) शिर्क बड़ा ही घोर पाप है

किसी मखलूक का सम्बंध अल्लाह से जोड़कर उसको अपना हिमायती और मददगार समझना इतना बड़ा जुर्म है कि करीब है कि आसमान उनके ऊपर फट पड़े और फ़रिश्ते शर्म के कारण कान पर हाथ रखकर यह सोचने लगते हैं कि जिसे अल्लाह ने अपनी इबादत के लिए पैदा किया था उस मखलूक ने अल्लाह की धरती पर क्या कोहराम मचा रखा है? भला किसकी हैसियत है कि संसार के पालनहार की खुदाई में किसी प्रकार भी शरीक हो सके। (5)

(ii) तमाम खज़ानों का मालिक अल्लाह ही है

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَن يَشَاءُ وَيَقْدِرُ

आसमानों और ज़मीन के खज़ानों की कुंजियाँ अल्लाह के पास हैं वह जिसे चाहता है छप्पर फाड़ कर देता है और जिसे चाहता है नपा तुला देता है। (12)

(iii) दीन को क़ायम करने और फ़िरकों में तक़्सीम न होने की नसीहत

अल्लाह ने नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के लिए वही तरीक़ा (दीन इस्लाम) मुक़र्रर किया है जिसका हुक्म नूह, इब्राहीम, मूसा और ईसा को इस ताकीद के साथ दिया जा चुका है कि **أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ** दीन को क़ायम करो और फ़िरकों में तक़्सीम न हो। (13)

(iv) अल्लाह की कुदरत

- ◆ बारिश का नाज़िल होना,
- ◆ रिज़क़ का इंतेज़ाम,
- ◆ आसमान और ज़मीन की तखलीक़,
- ◆ जानवरों की पैदाइश,
- ◆ जानवरों को एक जगह अनेक परिस्थितियों में इकट्ठा कर देना,
- ◆ समुद्र में हवा के सहारे कश्ती का चलना, हर चीज़ के जोड़े जोड़े,

(11, 27, 28, 29, 32, 33)

(v) मोमिन का काम

- ◆ अल्लाह के दीन की दावत,
- ◆ इस्तेक़ामत (दीन पर मज़बूती से क़ायम रहना)
- ◆ स्वार्थी इच्छाओं से ख़ुद को बचाये रखना,
- ◆ अल्लाह की नाज़िल की हुई तमाम किताबों पर ईमान,
- ◆ अदल व इंसाफ़ क़ायम करना,
- ◆ अल्लाह की ज़ात पर ही भरोसा रखना,
- ◆ गुनाहे कबीरा (बड़े गुनाह) और गंदे कामों से बचना,

- ◆ गुस्से को पी जाना,
- ◆ किसी भी मामले को आपस में मशविरे से तय करना,
- ◆ नमाज़ क़ायम करना,
- ◆ अल्लाह के रास्ते में खर्च करना

(आयत 13, 15, 36,37,38)

(vi) औलाद देना सिर्फ़ अल्लाह के इख़्तियार में है

आसमान व ज़मीन की हुकूमत ख़ास अल्लाह ही की है जो चाहता है पैदा करता है। जिसे चाहता है केवल बेटियाँ देता है और जिसे चाहता है सिर्फ़ बेटा अता करता है। जिसे चाहता है बेटे बेटियाँ दोनों इनायत करता है और जिसे चाहता है बांझ बना देता है बेशक वह बड़ा वाकिफ़कार (असली पहचान रखने वाला) और क़ादिर है। (49, 50)

(vii) कलामे इलाही की तीन सूरतें

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُكَلِّمَهُ اللَّهُ إِلَّا وَحْيًا أَوْ مِنْ وَرَاءِ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُولًا فَيُوحِيَ بِإِذْنِهِ مَا يَشَاءُ إِنَّهُ عَلَىٰ حَكِيمٍ

किसी आदमी के लिए ये मुमकिन नहीं कि अल्लाह उससे बात करे मगर वही (وحی) के ज़रिए या परदे के पीछे से या कोई फ़रिश्ता भेज दे। गरज़ वह अपने इख़्तियार से जो चाहता है पैग़ाम भेज देता है बेशक वह आलीशान हिकमत वाला है। (आयत 51)

(3) सूरह (043) अज़ जुखरूफ़ मुकम्मल

(i) उम्मुल किताब क्या है?

वास्तविक किताब, वह किताब जिसमें तमाम अंबिया पर नाज़िल होने वाली किताबें मुकम्मल तौर पर महफूज़ हैं, इसे सूरह 56 अल वाकिआ में "किताबे मकनून" (छुपी हुई और सुरक्षित) और सूरह 85 अल बुरूज में "लौहे महफूज़" (सुरक्षित तख्ती) कहा गया है। जिसमें लिखी हुई बातें किसी भी प्रकार मिट नहीं सकतीं, वह हर प्रकार से सुरक्षित है। (4)

(ii) अल्लाह की कुदरत

◆ आसमान और ज़मीन की तखलीक, ◆ ज़मीन को इंसान की गोद, ◆ ज़मीन और उसमें मुख़लिफ़ रास्ते, ◆ आसमान से एक मिक्कदार में बारिश, ◆ मुर्दा ज़मीन को दोबारा ज़िंदगी देना, ◆ तमाम मख़लूक के जोड़े, ◆ कश्ती, ◆ सवारी के जानवर वगैरह (09 से 12)

(iii) सफ़र की दुआ

سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ

पाक है वह जिसने इसको हमारे कंट्रोल में किया जबकि उस पर क़ाबू पाना हमारे बस में न था। और हमको तो यक़ीनन अपने रब की तरफ़ ही पलट कर जाना है। (13,14) (सही, मुस्लिम हदीस नंबर 1342/ किताबुल हज्ज)

(iv) लड़कियों को अपने लिए ज़िल्लत समझना

कुफ़ारे मक्का को जब लड़की की पैदाइश की खुशख़बरी सुनाई जाती है तो उनके चेहरे काले पड़ जाते हैं और वह ग़म से पागल होने लगता है। हालांकि यही फ़रिश्तों पर खुदा की बेटी होने का इल्ज़ाम लगाते हैं। (16 से 20)

(भारत में भी लड़की के जन्म को अपने हक़ में ज़िल्लत समझा जाता है यही वजह है कि गर्भपात का अनुपात दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है)

(v) बाप दादा और बुजुर्गों की अंधी तक़लीद

कुफ़ारे मक्का नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत का इंकार यही कहते हुए करते थे और जितनी क़ौमों पहले गुज़र चुकी हैं वह भी यही कहती थीं कि إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَرِهِمْ مُّقْتَدُونَ

"हमने बाप दादा को इसी रास्ते पर पाया है। हम तो उन्हीं के नक्श क़दम पर चलेंगे"(23)

(v) कुफ़ार की आपत्तियां

यह जादूगर है, क्या कुरआन के नुज़ूल के लिए यह यतीम ही मिला था, क्यों न दो बड़े शहरों (मक्का और तायफ़) के दो बड़े बड़े आदमियों पर यह कलाम नाज़िल हुआ। (30, 31)

(vi) काफ़िरों का ऐश व आराम देख कर मोमिन को दुनिया तलब नहीं करना चाहिए

"अगर यह बात न होती कि सब लोग एक ही तरीके के हो जाएँगे तो हम कुफ़रार के घरों की छतें, सीढ़ियाँ, दरवाज़े और गाऊ तकिया तक सोने चांदी का बना देते। नेक लोगों के लिए तो आखिरत में उनके रब के पास ऐश व आराम होगा। (33 से 35)

(vii) जिगरी दोस्त भी एक दूसरे के दुश्मन

दुनिया में एक दूसरे से कितना ही घनिष्ठ मित्रता क्यों न हो परन्तु क़यामत के दिन शत्रु नज़र आएंगे

الْأَخْلَاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ إِلَّا الْمُتَّقِينَ

जिगरी दोस्त क़यामत के दिन एक दूसरे के दुश्मन होंगे अलबत्ता नेक लोगों के दोस्त आपस में दोस्त रहेंगे। (आयत 67)

(4) सूरह (044) अद दुखान मुकम्मल

(i) कुरआन के नुज़ूल शबे क़द्र में हुआ

- ◆ कुरआन वाज़ेह (स्पष्ट) किताब है,
- ◆ यह मुबारक रात यानी शबे क़द्र में नाज़िल किया गया,
- ◆ शबे क़द्र में तमाम मज़बूत मामलों का फ़ैसला किया जाता है। (3 से 5)

(ii) हिकमत और रहमत का तक्राज़ा

एक किताब देकर एक रसूल भेजना न केवल हिकमत का तक्राज़ा था बल्कि अल्लाह की रहमत का तक्राज़ा भी था। क्योंकि इंसान के पालन पोषण के साथ उसके लिए हिदायत भी अत्यंत ज़रूरी थी। (5, 6)

(iii) आसमान धुआं हो जाएगा

आसमान अपने वजूद से पहले भी धुंआ था और जब क़यामत क़ायम होगी तब भी आसमान धुंआ हो जाएगा। (10)

(iv) अहले मक्का की हठधर्मी

नबूवत की निशानी देखने बाद भी अहले मक्का अपने कुफ़्र पर अड़े रहे और रसूल के बारे में कहा कि यह तो ट्रेनिंग लिया हुआ पागल है। (14)

(v) कोई वस्तु बे मक़सद नहीं

काएनात की कोई वस्तु खिलवाड़ के लिए नहीं बनाई गई हैं बल्कि अल्लाह ने उन्हें हक़ के साथ बनाया है। (39)

(vi) ज़क्रूम का दरख़्त जहन्नमियों की खोराक खोराक

إِنَّ شَجَرَتَ الرَّقُّومِ طَعَامُ الْأَثِيمِ كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ كَغَلِي الْحَمِيمِ

बेशक थोहड़ (ज़क्रूम) का दरख़्त गुनहगारों का खाना होगा पिघले हुए तांबे की तरह जो पेटों में इस तरह उबाल खाएगा जैसे तेल की तलछट की तरह खौलता हुआ पानी। (आयत 43 से 46)

(5) सूरह (045) अल जासिया मुकम्मल

(i) अल्लाह की निशानियां

- ◆ मानव और अन्य जानवरों की पैदाइश,
- ◆ रात और दिन का एक दूसरे के पीछे आना,
- ◆ आसमान से रिज़क़,
- ◆ मुर्दा ज़मीन की दोबारा ज़िंदगी,
- ◆ हवाओं का उलट फेर,

- ◆ व्यापार में कश्ती का महत्व,
 - ◆ समुद्र और आसमान व ज़मीन के दरमियान की तमाम चीज़ों पर कंट्रोल,
- (2 से 6, 12, 13, 22)

(ii) तबाही व बर्बादी है

- ◆ जो अल्लाह की आयत के मुक़ाबले में घमंड करते हैं,
- ◆ अल्लाह की आयात का मज़ाक बनाते हैं,
- ◆ शिर्क करते हैं,
- ◆ आयात और आखिरत का इंकार करते हैं।

(8 से 11 और 24, 32)

(iii) अपनी ख़्वाहिशात के पीछे चलने वालों का अंजाम

भला तुमने उस शख्स के हाल पर ग़ौर किया जिसने अपनी नफ़सानी ख़्वाहिशात को खुदा बना लिया और अल्लाह ने उसे इल्म के बावजूद गुमराही में फेंक दिया और उसके कान और दिल पर मुहर लगा दी, आँखों पर पर्दा डाल दिया। अब अल्लाह के इलावा कौन है जो उसे हिदायत दे?। (आयत 23)

(iv) हर गिरोह घुटनों के बल खड़ा होगा

क़यामत के दिन हर गिरोह घुटनों के बल खड़ा होगा। उसको पुकारा जाएगा कि अपना आमाल नामा (कर्मपत्र) देखे, आज सब को उनके कर्म का बदला दिया जाएगा। और कहा जायेगा "यह हमारा तैयार कराया हुआ आमाल नामा है जो तुम्हारे बारे में बिल्कुल सटीक गवाही दे रहा है। जो कुछ भी तुम दुनिया में करते थे हम उसे लिखवाते जा रहे थे। (आयत 28, 29)

(v) अल्लाह की आयात का मज़ाक उड़ाने वालों का अंजाम

क़यामत के दिन अल्लाह की आयात का मज़ाक उड़ाने वाले उसी तरह भुला दिए जाएंगे जैसे उन्होंने क़यामत के दिन को भुला रखा था। उनका ठिकाना जहन्नम होगा और कोई उनकी मदद करने वाला नहीं होगा। (34)

पारा (26) हाम मीम

इस पारे में छः हिस्से है-

इस पारे में कुल छह हिस्से हैं

- (1) सूरह अल अहक्काफ़ मुकम्मल
- (2) सूरह मुहम्मद मुकम्मल
- (3) सूरह अल फ़तह मुकम्मल
- (4) सूरह अल हुजरात मुकम्मल
- (5) सूरह क़ाफ़ मुकम्मल
- (6) सूरह अज़ ज़ारियात इब्तेदाई हिस्सा

(1) सूरह (046) अल अहक्काफ़ मुकम्मल

(i) कायनात की तखलीक़ बे मक़सद नहीं

अल्लाह ने कायनात को बेमक़सद (खिलौना) नहीं बनाया है बल्कि यह एक बामक़सद हकीमाना निज़ाम है जिसमें अवश्य नेक व बद और ज़ालिम व मज़लूम का फ़ैसला इंसान के साथ होना है और कायनात का यह मौजूदा निज़ाम हमेशा हमेश के लिए नहीं है बल्कि उसकी एक उमर मुक़र्रर है जिसकी समाप्ति पर उसे दरहम बरहम हो जाना है और अल्लाह की अदालत में भी एक वक़्त तय है जिसके आने पर वह ज़रूर क़ायम होगी। (03)

(ii) ज़्यादा गुमराह कौन?

जो अल्लाह को छोड़कर उन्हें पुकारे जो क़यामत तक जवाब नहीं दे सकते बल्कि वह पुकार ही कब सुनते हैं? उन्होंने ज़मीन व आसमान में पैदा ही क्या किया है? यह शरीक तो क़यामत के दिन उनके दुश्मन हो जाएंगे। (4, 5)

(iii) रसूल को इल्म ग़ैब नहीं होता

“मैं कोई निराला रसूल तो नहीं हूँ, मैं नहीं जानता कि कल तुम्हारे साथ क्या होना है और मेरे साथ क्या, मैं तो सिर्फ़ उस वही (ईश्वरीय आदेश) की पैरवी करता हूँ जो मेरे पास भेजी जाती है और मैं एक साफ़-साफ़ ख़बरदार करनेवाले के सिवा और कुछ नहीं हूँ।” (09)

(iv) जन्नत के हक़दार कौन?

जिन्होंने ने यह ऐलान किया कि हमारा रब अल्लाह है और फिर उसपर जमे रहे। क़यामत के दिन न उन्हें कोई ख़ौफ़ होगा और न कोई तकलीफ़। (13)

(v) हमल (गर्भ) और दूध पिलाने की उम्र

हमल और दूध पिलाने की मुद्दत तीस महीने यानी ढाई वर्ष है, इसमें दूध पिलाने की अधिकतम मुद्दत दो वर्ष और गर्भ की न्यूनतम मुद्दत छः महीने रखी गई है यानी अगर किसी के यहां शादी के छः महीने बाद औलाद होती है तो उसका नसब पिता से ही होगा। औरत पर इसकी वजह से इल्ज़ाम नहीं लगाया जा सकता। (15)

नोट:- अलबत्ता आजकल के वैज्ञानिक अविष्कार ने इस समस्या का बहुत हद तक समाधान कर दिया है, यदि किसी को शक हो तो वह सोनोग्राफी के ज़रिए पता लगा सकता है।

(vi) जिन्नात के कुरआन सुनने का बयान

यह वाक़िआ वादी (घाटी) नख़ला में पेश आया था जहां नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तायफ़ से मक्का वापस होते हुए रास्ते में ठहरे थे। वहां इशा, फ़ज्र, या तहज्जुद की नमाज़ में आप कुरआन की तिलावत फ़रमा रहे थे कि जिन्नात के एक गिरोह का उधर से गुज़र हुआ, वह आप की क़िरात सुनने के लिए ठहर गया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जिन्नो की आमद से बेख़बर थे। बाद में अल्लाह ने वही وحی के ज़रिए आप को ख़बर दी। जिन्न ईमान लाये और अपनी क़ौम में जाकर उन्होंने तीन बातें रखीं

◆ हमने मूसा के बाद ऐसा कलाम सुना है जो उसकी तस्दीक़ भी करता है और सिराते मुस्तक़ीम की तरफ़ रहनुमाई भी।

- ◆ अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले की दावत कुबूल कर लो, ईमान लाओ, अल्लाह तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा।
- ◆ जो ईमान न लाए वह और उसके बनाये हुए देवी देवता अल्लाह को हर्गिज़ आज़िज़ नहीं कर सकते (29, से 31)

(vii) अल्लाह को थकान नहीं लगती

यहूदी कहते थे कि अल्लाह ने छह दिनों में कायनात बनाई और सातवें दिन आराम किया। उसका जवाब देते हुए कहा गया कि अल्लाह ने कायनात बनाई और कोई थकावट नहीं आई। (33)

(2) सूरह (047) मुहम्मद मुकम्मल

(i) नेक अमल कब बर्बाद हो जाते हैं?

- ◆ जब इंसान कुफ़र करे और अल्लाह के रास्ते से लोगों को रोके,
- ◆ अल्लाह की नाज़िल की हुई चीज़ से नफ़रत (घृणा), करे
- ◆ वह काम करे जो अल्लाह को नापसंद हों या उसको नाराज़ करने वाले हों,
- ◆ जब अपनी मनमानी की जाय,
- ◆ जब रसूल के फ़ैसले को कुबूल न किया जाय

(1, 9, 16 28, 32)

(ii) मुसलमानों को तसल्ली

अल्लाह की मदद और रहनुमाई का यक़ीन, अल्लाह के रास्ते में कुरबानी देने पर बेहतरीन बदले की उम्मीद, और हक़ के रास्ते में की गई कोशिशों का दुनिया से आख़िरत तक अच्छा नतीजा और इनआम, जन्नत का वादा। (7, 12)

(iii) जन्नत की मिसाल

जन्नत में ऐसी नहरें हैं जिसका पानी भूरा (गदला) नहीं होता, दूध की नहर जिसका मज़ा (test) तब्दील नहीं होता, शराब की नहर जो पीने में बहुत ही स्वादिष्ट, खालिस शहद की नहर और तमाम किस्म के फल और मेवे और सबसे बढ़ कर रब की बख्शिश। (15)

(iv) कुरआन ग़ौर व फ़िक्र की दावत देता है

मौजूदा दौर में कुरआन एक ऐसी मज़लूम किताब हो कर रह गई है कि सबसे ज़्यादा पढ़ी जाती है ख़ास तौर से भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में जहाँ कुरआन को महज़ सवाब की ख़ातिर पढ़ने से ज़्यादा अहमियत नहीं दी जाती। लोग रमज़ान में 5, 5 और 6, 6 बार मुकम्मल पढ़ जाते हैं लेकिन उसके असल मक़सद से नावाक़िफ़ हैं। अफ़सोस तो इसपर है कि समाज में यह मशहूर कर दिया गया है कुरआन पढ़ोगे तो गुमराह हो जाओगे।

अमेरिका, लंदन और दूसरे देशों में तो non muslim कुरआन को समझ कर इस्लाम कुबूल कर रहे हैं और यह उम्मत जो इस कुरआन की तरफ़ बुलाने वाली और बेहतरीन उम्मत है वह कुरआन समझ के गुमराह हो जाएगी। दूसरी तरफ़ अल्लाह कुरआन को किताबे हिदायत, هُدًى لِلنَّاسِ और الْهُدًى وَالْفُرْقَان कहता है और यहाँ आयत 24 में

أَفَلَا يَتَذَكَّرُونَ الْقُرْآنَ أَمْ عَلَىٰ قُلُوبٍ أَقْفَالُهَا

तो क्या लोग कुरआन में (ज़रा भी) ग़ौर नहीं करते या उनके दिलों पर ताले लगे हुए हैं। (24)

(v) आमाल की बर्बादी

अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुखालिफ़त हक़ीक़त में अपने आमाल की बर्बादी है। (25 से 28, 33)

(3) सूरह (048) अल फ़तह मुकम्मल

(i) फ़तह ए मुबीन

जिसको फ़तह ए मुबीन करार दिया गया है उससे मुराद सुलह हुदैबिया है। इसमें कुफ़्रार की तरफ़ से जितनी भी शर्ते रखी गई थीं सभी अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

ने मंजूर कर लीं। बज़ाहिर ऐसा महसूस हो रहा था कि मुसलमानों को बहुत ज़्यादा दबाया गया है बल्कि इन शर्तों को मानने के लिए वह दिल से तैयार न थे लेकिन इताअते रसूल के आगे बेबस थे वह चार शर्तें यह थीं

◆ दस साल तक जंग बंद रहेगी, एक दूसरे के खिलाफ़ खुली छुपी कोई कार्यवाही नहीं होगी।

◆ कुरैश का जो भी आदमी भागकर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जाएगा उसे वापस कर दिया जाएगा लेकिन आप के साथियों में से जो कुरैश के पास चला जायेगा उसे वापस नहीं किया जायेगा।

◆ अरब के क़बीलों में से जो क़बीला भी किसी एक का सहयोगी बन कर इस संधि में शामिल होना चाहेगा उसे इख़्तियार होगा।

◆ अगले साल उमरे के लिए आकर तीन दिन मक्के में इस शर्त पर ठहरेंगे कि परतलों में सिर्फ़ एक तलवार हो, वापसी में किसी को भी अपने साथ न ले जा सकेंगे।

ज़ाहिर सी बात है ऐसी शर्तों पर कौन खुश हो सकता था लेकिन अल्लाह ने इसे फ़तहे मुबीन करार दिया और हालात ऐसे पैदा कर दिए कि सिर्फ़ दो साल बाद मक्का मुसलमानों के क़ब्ज़े में था और कुफ़्रारे मक्का उनके रहम व करम पर थे। (आयत 01)

(ii) मोमिन के चार काम

- ◆ अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान
- ◆ उनका साथ देना।
- ◆ अल्लाह की बड़ाई और रसूल की इज़्ज़त करना।
- ◆ तस्बीह बयान करना। (8, 9)

(iii) बैअते रिज़वां

हुदैबिया पर पड़ाव डालकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस्मान रज़ी अल्लाहु अन्हु को मक्का में अपना दूत बनाकर भेजा ताकि कुरैश के सरदारों को पैग़ाम दें कि हम जंग के लिए नहीं बल्कि उमरे के मक़सद से कुरबानी के जानवरों के साथ आये हैं, मगर वह लोग न माने और उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को रोक लिया। इसी बीच उनके क़त्ल की ख़बर उड़ गई और उनके वापस न आने से मुसलमानों को यक़ीन हो गया तो तमाम 1400 मुसलमानों

ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हाथ पर बैअत की कि "हम उस्मान के खून का बदला लेंगे या फिर यहीं जामे शहादत नोश करेंगे"। अल्लाह तआला को यह बात बहुत पसंद आई और सभी को अपनी रज़ा की सर्टिफ़िकेट इनायत कर दिया: "जिस वक़्त मोमिनीन तुमसे दरख़्त के नीचे की बैअत कर रहे थे तो अल्लाह उनसे इस बात पर ज़रूर खुश हुआ गरज़ जो कुछ उनके दिलों में था अल्लाह ने उसे देख लिया फिर उन पर तस्सली नाज़िल फ़रमाई और उन्हें उसके बदले में बहुत जल्द फ़तह इनायत की। (आयत18)

(iv) सहाबा की तारीफ़

- ◆ आपस में रहीम और कुफ़र पर सख़्त।
- ◆ रुकूअ, सज्दा, और अल्लाह के फ़ज़ल व रज़ा की ख़्वाहिश,
- ◆ पेशानी पर सज्दों के निशान उनकी पहचान (29)

(4) सूरह (049) अल हुजरात मुकम्मल

(i) अल्लाह और उसके रसूल का अदब

अल्लाह और उसके रसूल (कुरआन व हदीस) से आगे न बढ़ें, न अपनी आवाज़ को उनकी आवाज़ से बुलंद की जाय, रसूलुल्लाह के पास अपनी आवाज़ को पस्त रखो (कुरआन व हदीस की कोई बात आए तो उस के भी सामने आवाज़ पस्त रखा जाय, सिर्फ़ उसी को तस्लीम किया जाय और उसके मुक़ाबले में हर बात को ठुकरा दिया जाय) (1, 2)

(ii) तहक़ीक़ ज़रूरी है

अगर कोई फ़ासिक़ ख़बर लाये तो कोई क़दम उठाने से पहले उसकी तहक़ीक़ ज़रूर की जाए वरना कहीं ऐसा नुक़सान हो सकता है कि शर्मिंदगी उठानी पड़े। (6)

(iii) सुलह कराना

जब मुसलमानों के दो गिरोह लड़ पड़ें तो उनके दरमियान सुलह की कोशिश की जाय लेकिन अगर बारी गिरोह न माने तो उसके खिलाफ़ जंग की जाए यहाँ तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ़ पलट आए, सुलह कराते समय अदल व इंसाफ़ का पूरा ख़याल रहे। (9)

(iv) वह बुराइयां जो इंसान की निजी और इज्तेमाई (सामुहिक) ज़िंदगी में बिगाड़ को जन्म देती हैं

- ◆ एक दूसरे का मज़ाक़ उड़ाना,
- ◆ किसी पर ऐब लगाना,
- ◆ बुरे नामों से पुकारना,
- ◆ किसी के बारे में बुरा गुमान,
- ◆ किसी की जासूसी (टोह में लगाना), ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई), ग़ीबत करना अपने मरे हुए भाई के मांस खाने के समान है। (11, 12)

(v) फ़ज़ीलत का मानक केवल तक़्वा है

अल्लाह ने इंसान की तख़लीक़ एक मर्द और एक औरत से की और फिर पहचान की खातिर क़ौमें और बिरादरियां बना दीं वरना अल्लाह के नज़दीक़ सबसे बेहतर (श्रेष्ठतम) वह है जो सबसे ज़्यादा अल्लाह से मुहब्बत करने वाले हो। (13)

(vi) ईमान और इस्लाम मे फ़र्क़

अगरचे इस्लाम और ईमान एक दूसरे के पर्यायवाची हैं परंतु कहीं जब इस्लाम बोला जाता है तो उसका संबंध इंसान के ज़ाहिरी अमल से होता है, दुनिया में यही मानक बनता है जबकि ईमान का संबंध इंसान के बातिनी (अंतरात्मा) से होता है। आखिरत में फ़ैसला ईमान की ही बुनियाद पर होगा। (14)

(vii) ईमान लाना अल्लाह पर एहसान नहीं

ईमान लाकर कोई अल्लाह पर एहसान नहीं करता बल्कि यह तो अल्लाह का एहसान है कि उसने हिदायत से नवाज़ा। (16, 17)

(5) सूरह (050) क़ाफ़ मकम्मल

(i) सूरह का मौज़ूअ (शीर्षक) आखिरत है

कुफ़्फ़ार को सबसे ज़्यादा हैरत इसी बात पर थी कि जब इंसान मर कर मिट्टी में मिल जाएगा, हड्डियां पुरानी हो जाएंगी तो क्या वह दोबारा उठाया जाएगा उसका जवाब देते हुए छोटी छोटी आयतों में आखिरत को खोल खोल कर बयान किया गया है और मुख्तलिफ़ निशानियों के ज़रिए सवाल का मुस्कित (खामोश कर देने वाला) जवाब दिया गया है। (1 से 3)

(ii) अल्लाह की कुदरत की करिशमे

बग़ैर किसी सूराख के आसमान की बनावट और सजावट, ज़मीन को फैलाना और उसमें सुंदर सुंदर पेड़ पौधे, आसमान से रहमत की बारिश, बारिश द्वारा बाग़ और खेतों की हरियाली, खुजूर के पेड़, इंसानों के लिए भिन्न भिन्न प्रकार के रिज़क़, मुर्दा पड़ी हुई ज़मीन का पुनः उपजाऊ हो जाना। (06 से 11)

(iii) आठ क़ौमों का ज़िक़्र

क़ौमे नूह, क़ौमे समूद, असहाबुर रस, क़ौमे आद, फ़िरऔन और क़ौमे लूत, असहाबुल ऐका, और क़ौमे तुब्बा, जिन्होंने अल्लाह की आयात और क़यामत को झुठलाया और दुनिया से उनका नाम व निशान मिट गया। (12,13)

(असहाबुर रस से मुराद कुछ लोगों ने "मोहन जोदड़ो" भी लिया है क्योंकि यहां कुएं अत्यधिक थे और खेती बाड़ी का प्रबंध उसी से चलता था)

(iv) नबी को नसीहत

सब्र करें, तस्बीह बयान करें, सूरज निकलने से पहले तथा सूरज डूबने के बाद (फ़ज़्र और मग़रिब) अल्लाह की हम्द बयान करें, आप का काम लोगों पर ज़बरदस्ती करना नहीं है बल्कि केवल कुरआन सुना कर लोगों को नसीहत करना है। (39, 40, 45)

(iv) कुछ अहम बातें

- ◆ अल्लाह इंसान की गरदन की नस (Aorta) से भी क़रीब है।
- ◆ जो कुछ इंसान की ज़बान से निकलता है उसे फ़रिश्ता लिख लेता है।
- ◆ अल्लाह बन्दों पर जुल्म नहीं करता बल्कि इंसान खुद अपने ऊपर जुल्म करता है।
- ◆ आसमान ज़मीन और उनके दरमियान की तमाम चीज़ों को अल्लाह तआला में 6 दिनों में बग़ैर किसी थकान के बनाया है। (16, 18, 29, 38)

(6) सूरह (051) अज़ ज़ारियात (इब्तेदाई हिस्सा)

(i) आखिरत

क्रयामत कायम होगी, हिसाब किताब हो कर रहेगा, उस से कोई भाग नहीं सकेगा। जो लोग अल्लाह और आखिरत के मुनकिर हैं उन्हें आग पर तपाया जाएगा जबकि नेक लोग जन्नत में ऐश कर रहे होंगे। (5, 6 और 11 से 16)

(ii) नेक लोगों की सिफ़ात

- ◆ रात को कम ही सोते हैं,
- ◆ सहर के वक़्त तहज्जुद में माफ़ी मांगते हैं,
- ◆ अपने माल में मांगने वालों और ग़रीब मजबूर का हिस्सा रखते हैं। (17 से 19)

(iii) इब्राहीम अलैहिस्सलाम और मेहमान

इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास कुछ फ़रिश्ते इंसानों की शक़ल में आए, उन्होंने ने उनके लिए एक भुना हुआ बछड़ा पेश किया जब फ़रिश्तों ने हाथ नहीं लगाया तो इब्राहीम अलैहिस्सलाम को डर लगा फ़रिश्तों ने कहा डरो नहीं हम तुम्हे एक बच्चे की खुशख़बरी देने आए हैं यह सुन कर उनकी बीवी सारा ने हैरत से अपना चेहरा पीट लिया और कहा मैं तो बुढ़िया भी हूँ और बांझ भी, फ़रिश्तों ने कहा यह तो तेरे रब का फ़ैसला है जो हकीम भी है और अलीम भी। (24 से 30)

पारा (27) फ़र्मा ख़तबुकुम

इस पारे में सात हिस्से हैं-

- (1) सूरह (051) अज़ ज़ारियात (बाक़ी हिस्सा)
- (2) सूरह (052) अत तूर मुकम्मल
- (3) सूरह (053) अन नज्म मुकम्मल
- (4) सूरह (054) अल क़मर मुकम्मल
- (5) सूरह (055) अर रहमान मुकम्मल
- (6) सूरह (056) अल वाक़या मुकम्मल
- (7) सूरह (057) अल हदीद मुकम्मल

(1) सूरह (051) अज़ ज़ारियात (बाक़ी हिस्सा)

(i) पिछली क़ौमों पर अज़ाब

क़ौमे लूत, फ़िरऔन, उसके दरबारी और उसका दरया में डूबना, क़ौमे आद और उनपर आंधी का अज़ाब, क़ौमे समूद और उन पर बिजली और कड़क का अज़ाब, क़ौमे नूह की गुमराही, (32 से 46)

(ii) कुछ अहम बातें

- ◆ अल्लाह की तरफ़ दौड़ पड़ो और शिर्क से बचो, (50, 51)
- ◆ एक दूसरे को नसीहत करते रहना चाहिए इस से मोमिन बंदों को फ़ायदा पहुंचता है, (55)
- ◆ इंसान और ज़िन्नात की तख़लीक़ का मक़सद अल्लाह की इबादत है न कि माल समेटना, अल्लाह किसी का मोहताज नहीं है, वह तो ख़ुद लोगों को रिज़क़ देने वाला है। (56 से 58)

(2) सूरह (052) अत तूर मुकम्मल

(i) आखिरत

आखिरत की शहादत देने वाले कुछ तथ्यों (हक्काएक व आसार) की कसम खा कर पूरे ज़ोर के साथ यह यक़ीन दिलाया गया है क़यामत आ कर रहेगी और जब पेश आयेगी तो झूठलाने वालों का अंजाम जहन्नम होगा और तक्वा इस्तियार करने वाले जन्नत के हक़दार होंगे। (1 से 20)

(ii) बैतूल मामूर (आबाद घर)

इस से मुराद दुनिया का ख़ाना ए काबा भी है जो हज्ज, उमरा और ज़यारत करने वालों से आबाद रहता है। और सातवें आसमान का वह काबा भी है जिस से मेअराज में अल्लाह के रसूल सल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इब्राहीम अलैहिस्सलाम को टेक लगाए हुए देखा था, उस की शान यह है कि प्रतिदिन सत्तर हजार फ़रिश्ते तवाफ़ के लिए दाख़िल होते हैं फिर कभी उनका नंबर दोबारा नहीं आता। (आयत 4, सहीह मुस्लिम 411)

(iii) कुरैश का रवैया और नबी को तसल्ली व नसीहत

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कुरैश कभी काहिन, कभी मजनूँ और कभी शायर कह कर लोगों को आप के खिलाफ़ भड़काते थे। और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बिन बुलाई आफ़त समझते थे चुनाँचे उनको जवाब देते हुए फ़रमाया गया कि आप अपने रब के फ़ज़ल से काहिन, मजनूँ और शायर नहीं हैं, आप तो उनकी बातों पर सब्र करें और सुबह-शाम और रात में अल्लाह की प्रशंसा करते रहें। (29, 30 व 48, 49)

(iv) कुफ़्रार को चैलेंज

काफ़िर कहते थे कि इस कुरआन को आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खुद ही घड़ लिया है तो कुरआन ने चैलेंज किया कि

فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِنْ كَانُوا صَادِقِينَ

"अगर वह अपनी बात में सच्चे हैं ज़रा वह भी ऐसा ही कोई कलाम बना लाएं" (35)

(3) सूरह (053) अन नज्म मुकम्मल

(i) क्या नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मेअराज में अल्लाह को देखा

उम्मुल मोमेनीन आएशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा ने फ़रमाया: जो शख्स यह दावा करता है कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने रब को देखा था वह अल्लाह पर झूठ मंसूब करता है। मसरूक कहते हैं यह बात सुन कर में उठ बैठा और पूछा, उम्मुल मोमेनीन जल्दी न कीजिए। क्या अल्लाह ने यह नहीं फ़रमाया ? وَلَقَدْ رَآهُ بِالْأُفُقِ الْمُبِينِ

"उसने उसे रौशन उफ़क़ (क्षितिज) पर देखा" और وَلَقَدْ رَآهُ نَزْلَةً أُخْرَىٰ

"उसने दूसरी बार नाज़िल होते देखा" उम्मुल मोमेनीन ने जवाब दिया इस उम्मत में सबसे पहले मैंने ही अल्लाह के रसूल से सवाल किया था तो उन्होंने फ़रमाया कि वह तो जिब्रील थे। मैंने उनको उनकी असल सूरत में दो बार (नबूवत के इब्तेदाई ज़माने में और मेअराज में सिदरतुल मुंतहा के पास) देखा जिसपर अल्लाह ने उनको पैदा किया है। मैंने उनको आसमान से उतरते हुए देखा कि उनकी अज़ीम हस्ती ज़मीन व आसमान के दरमियान तमाम फ़िज़ा पर छाई हुई थी। उन दो मौक़े के इलावा कभी असली सूरत में नहीं देखा। (ब हवाला सही मुस्लिम हदीस नंबर 439/किताबुल ईमान, आयत 6 से 18)

(ii) कुफ़्रार के दीन की बुनियाद केवल मफ़रूज़े (परिकल्पना=hypothesis) पर क़ायम और अन्यायिक बंटवारा है

इंसान भी क्या अजीब मख़लूक है कि अपने लिए तो बेटे पसंद करता है और फ़रिश्तों को अल्लाह की बेटियां कहता है। मुशरेकीन ने तीन बड़ी मूर्तियां लात, उज़्ज़ा, और मनात के नाम से बना रखी थीं और उन्हें वह खुदा तक पहुंचने का वसीला समझते थे। (18 से 23)

(iii) जैसी कोशिश वैसा फल

इंसान इस दुनिया में जैसा भी अमल करेगा अल्लाह के यहां पूरा पूरा बदला मिलेगा (39)

(iv) अल्लाह ही तमाम कायनात (universe) का मालिक व मुख्तार है

आखिरी मंज़िल रब की जानिब ही है, अल्लाह ही हंसाता और रुलाता है, मौत और ज़िंदगी देता है, मर्द व औरत के नुफ़े को मिलाकर इंसान की तखलीक करता है, मालदार बनाता और दौलत अता करता है, वही शेअरा (Dog Star) का रब है।

[शेअरा Dog Star एक सितारा है जो सूरज से 23 गुना ज़्यादा रौशन है अहले अरब का अक़ीदा था कि यह लोगों की क़िस्मत पर प्रभाव डालता है इसलिए उन्होंने इसे भी अपने माबूदों में शामिल कर लिया था] (49)

(4) सूरह (054) अल क़मर मुकम्मल

(i) चांद के दो टुकड़े होने का बयान

शक्कुल क़मर (चांद के दो टुकड़े होना) आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के नबी होने की निशानी और खुला हुआ मुअजिज़ा था। यह हैरत अंगेज़ वाक़िआ इस बात का प्रमाण था कि वह क़यामत जिसके आने की ख़बर आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दे रहे थे वह वास्तव में होकर रहेगी और उसका वक़्त क़रीब ही है। हिजरत से पांच साल पहले चांद के महीने की चैदहवीं तारीख़ थी, चांद अभी निकला ही था यह महाविराट वृत्त (Sphere) उनकी आंखों के सामने फटा और उसके दोनों टुकड़े अलग अलग होकर एक दूसरे से इतनी दूर चले गए थे कि एक टुकड़ा मिना पहाड़ के एक तरफ़ और दूसरा दूसरी तरफ़ नज़र आया था। फिर वह दोनों टुकड़े कुछ समय बाद आपस में मिल भी गए थे।

इस हवाले से अवाम में एक बात मशहूर कर दी गई है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उंगली के इशारे से चांद दो टुकड़े हो गया था, और यह भी कि चांद का एक टुकड़ा आप के दामन में दाख़िल हो कर आस्तीन से निकल गया। यह बेबुनियाद बात है किसी विश्वसनीय (authentic) तारीख़ या रिवायत में ऐसा कहीं कोई ज़िक्र नहीं है। (1, 2)

(ii) कुरआन आसान है नसीहत हासिल करने वालों के लिए

कुरआन को अल्लाह ने आसान बनाया है और हमारे दरमियान यह मशहूर कर दिया गया है कि कुरआन आम इंसानों के लिए नहीं बल्कि सिर्फ़ उलेमा के लिए है। नतीजा यह हुआ कि लोगों ने कुरआन को किताबे हिदायत व नसीहत के बजाय सिर्फ़ सवाब और तावीज़ गंडों की किताब तक महदूद कर दिया। उसे ख़ूब चूमा गया, फ़ातिहा ख़ानी की गई, जुज़दान रेशमी और क़ीमती बनाये गए लेकिन उसका हक़ अदा नहीं किया गया जबकि कुरआन में आयत 17, 22, 32 और 40 में एक ही आयत दुहराई गई है

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَكِّرٍ

हमने कुरआन को नसीहत के लिए आसान बना दिया है। है कोई नसीहत हासिल करने वाला।

(iii) कुछ अहम बातें

◆ जब इंसान ज़ालिमों के दरमियान घिरा हुआ हो तो नूह अलैहिस्सलाम की तरह दुआ करे

رَبِّ اِنِّى مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ

(मेरे रब मैं विवश हूं तू मेरी मदद कर और उनसे बदला ले। (10)

◆ प्रत्येक वस्तु एक तक्रदीर के साथ क़ायम की गई है। (49)

◆ अल्लाह का हर आदेश पलक झपकने में ही लागू हो जाता है। (50)

◆ पांच क़ौमों (क़ौमे नूह, क़ौमे आद, क़ौमे समूद, क़ौमे लूत और फ़िरऔन) के करतूत और उनपर आने वाले दुनियावी अज़ाब का बयान इब्रत के लिए हुआ है कि अगर किसी और ने भी वही करतूत किए तो उनका अंजाम भी उन्हीं क़ौमों जैसा होगा (51)

◆ आखिरत में बुरे लोगों के लिए जहन्नम और अज़ाब होगा जब कि नेक लोगों के लिए जन्नत और नेअमते होंगी। (47,48 व 54,55)

(5) सूरह (055) अर रहमान मुकम्मल

(i) अल्लाह की कुदरत, उसकी नेअमते और करिशमे (दुनिया में)

मखलूक पर सदैव रहम, कुरआन की तालीम, सूखी मिट्टी से इंसान की और आग के शोले से जिन्नात की तखलीक, इंसान को बयान की कुदरत, सूरज और चांद की तस्बीहात, सितारों और दरख्तों का सज्दा करना, आसमान की बुलंदी, मखलूक की आरामगाह ज़मीन, ज़मीन से मेवे और खुजूर, दाना और ग़ल्ला की पैदावार, पूरब और पश्चिम, आपस में मिले हुए दो समुद्र फिर भी दोनों के बीच एक रुकावट, समुद्र में मोती और मूंगे, उसमें चलने वाली ऊंची ऊंची कश्तियाँ, आसमान और ज़मीन की तमाम मखलूक़ात की मुहताजी वगैरह। (1 से 29 तक)

(ii) अल्लाह की कुदरत और उसकी नेअमतें और करिशमे (आखिरत में)

हरे भरे घने बागात, हर फल की दो किस्में (variety), मेवे, खुजूर और अनार, बागों में फ़व्वारों की तरह उबलते हुए चश्मे, रेशम के असतर वाले फ़र्श, शर्मीली निगाहों वाली हूरें जिन्हें किसी इंसान या जिन्न ने पहले हाथ भी न लगाया होगा, हीरे और मोती, (46 से 77)

(iii) मीज़ान (न्याय का तराजू)

इंसान जिस सन्तुलित (balanced) काएनात में रहता है उसका पूरा सिस्टम अदल (न्याय) पर क़ायम है इसलिए इंसान को भी न्याय पर क़ायम रहना चाहिए। इस कायेनात की फ़ितरत जुल्म व बे इंसान्फ़ी को कुबूल नहीं करती, यहां एक बड़ा जुल्म तो दूर की बात है तराजू में डंडी मार कर किसी ग्राहक के हिस्से की एक ग्राम की चीज़ भी मार लेना मीज़ान में ख़लल पैदा कर देता है। (7 से 9)

(iv) दुनिया की तमाम मख़लूक़ फ़ना (ख़त्म) होने वाली है

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ وَيَبْقَىٰ وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

जो (मख़लूक) ज़मीन पर है सब फ़ना होने वाली है। और केवल परवरदिगार की ज़ात जो अज़मत और करामत वाली है बाक़ी रहेगी। (26, 27)

(v) तुम अपने रब की किन किन नेअमतों को झुठलाओगे (فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ)

अल्लाह ने इस दुनिया में इंसान को अनगिनत नेअमतें अता की हैं जिसमें कुछ का तज़क़िरा यहां हुआ है और आखिरत में भी बेशुमार नेअमतें अता करेगा जिसके सामने दुनिया के नेअमतों की कोई हैसियत नहीं होगी, आखिरत की उन नेअमतों में से कुछ का ही तज़क़िरा किया गया है लेकिन जिन नेअमतों का भी ज़िक्र किया है उसके बाद बार बार इस आयत "तुम अपने रब की किन किन नेअमतों, करिशमों, कुदरत के अजायब, और कमालात को झुठलाओगे (فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبَانِ)" दुहराया गया है ताकि इंसान ग़ौर करे कि इन नेअमतों को एक अल्लाह के इलावा भला कौन अता कर सकता है। चुनाँचे इस 78 आयत की सूरह में कुल 31 बार यह आयत दुहराई गई है।

(6) सूरह (056) अल वाक़या मुकम्मल

(i) क़यामत

क़यामत कैसे क़ायम होगी उसकी हल्की सी झलक दिखाई गई है जैसे ज़मीन अचानक हिला दी जाएगी, पहाड़ चूर चूर कर दिए जाएंगे वह धूल की तरह उड़ने लगेंगे, सब कुछ समाप्त हो जाएगा। (1 से 6)

(ii) आख़िरत के दिन तीन गिरोह और उनका अंजाम

- 【1】 अस साबेकून (जन्नत का अपर क्लास)
- 【2】 असहाबुल यमीन (जन्नत का लोवर क्लास)
- 【3】 असहाबुश शिमाल (जहन्नमी लोग) (7 से 48)

(iii) सबका मालिक कौन?

- ◆ जो वीर्य तुम टपकाते हो उससे बच्चा बनाने वाले तुम हो या हम हैं।
- ◆ वह बीज जो तुम बोते हो उनसे खेतिया उगाने वाले तुम हो या हम हैं।
- ◆ यह पानी जिसे से तुम अपनी प्यास बुझाते हो उसको आसमान से नाज़िल करने वाले तुम हो या हम हैं।
- ◆ यह आग जिसे तुम सुलगाते हो उसका पेड़ पैदा करने वाले तुम हो या हम हैं। (59, 64, 69, 72)

(iv) कुरआन को पाक लोगों के इलावा कोई छू नहीं सकता

إِنَّهُ لَقُرْءَانٌ كَرِيمٌ فِي كِتَابٍ مَّكْنُونٍ لَا يَمَسُّهُ إِلَّا الْمُطَهَّرُونَ تَنْزِيلٌ مِّن رَّبِّ الْعَالَمِينَ

बेशक यह कुरआन बहुत इज़्ज़त वाला है। एक महफूज़ किताब (लौहे महफूज़) है। इसे पाक लोगों के इलावा कोई छू नहीं सकता। तमाम संसार के परवरदिगार की जानिब से नाज़िल किया हुआ है। (77 से 80)

यहां पाक लोगों से मुराद फ़रिश्ते हैं इंसान नहीं और किताबे मकनून से मुराद लौहे महफूज़ है।

(v) मौत के समय स्वागत

अगर मरने वाला मुकर्रेबीन में हो तो उसके लिए खुशी, सर्वश्रेष्ठ रिज़क और नेअमत भरी जन्नत है, अगर मरने वाला असहाबुल यमीन में से हो तो उसका स्वागत यूं होता है " सलाम है तुझे, तुम असहाबुल यमीन में से हो" और अगर मरने वाला झुठलाने वालों गुमराह लोगों में से हो तो उसके स्वागत के लिए खौलता हुआ पानी और जहन्नम की आग है। (88 से 94)

(7) सूरह (057) अल हदीद मुकम्मल

(i) अल्लाह की सिफ़ात का बयान

अल अज़ीज़, अल हकीम, अल क़दीर, अल अव्वल, अल आख़िर, अज़ ज़ाहिर, अल बातिन, अल अलीम, अल बसीर, अर रऊफ़, अर रहीम, अल ख़बीर, अल अज़ीम, अल ग़नी, अल हमीद, अल क़वी, अल ग़फ़ूर वग़ैरह। (1 से 4, 9, 10, 24, 25, 28)

(ii) अल्लाह हमारे साथ कहाँ कहाँ होता है?

अल्लाह तुम्हारे साथ होता है जहाँ कहीं भी तुम होते हो (4)

(iii) फ़तह ए मक्का से पहले और बाद में ईमान लाने वालों में फ़र्क़

फ़तह ए मक्का से पहले जिन्होंने अपना माल ख़र्च किया और जिहाद किया उनके बराबर वह नहीं हो सकते जिन्होंने बाद में ख़र्च किया और जिहाद किया। (आयत 10)

(iv) क़र्ज़ हसन

जो माल अल्लाह की राह, दीन की सुरक्षा और उसको संसार के तमाम इंसानों तक पहुंचाने हेतु ख़र्च किया जाय उसमें दिखावा या शहरत शामिल न हो, एहसान न जताया जाय केवल उद्देश्य अल्लाह रज़ा हो तो अल्लाह ऐसे क़र्ज़ को क़र्ज़ हसन करार देता है। क़यामत के दिन अल्लाह तआला उसे कई गुना बढ़ा कर वापस करेंगे और अपनी तरफ़ से और भी इनआम देंगे। (11)

(v) मोमिनों के लिए नूर

क़यामत के दिन मोमिनों को एक नूर दिया जाएगा जो उनके दाएं बायें और सामने दौड़ रहा होगा। इसकी रौशनी में वह चल रहे होंगे जबकि काफ़िर और मुनाफ़िक़ इस नूर से महरूम होंगे। (12)

(vi) दुनिया की ज़िंदगी एक धोखा है

जान रखो कि दुनिया की ज़िंदगी महज़ खेल और तमाशा और ज़ाहिरी ज़ीनत और आपस में एक दूसरे पर फ़ख़ करना और माल और औलाद की एक दूसरे से ज़्यादा की ख़्वाहिश है। दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल बारिश की सी है जिस की वजह से किसानों की खेती लहलहाती और उनको ख़ुश कर देती है फिर सूख जाती है तो उसको देखता है कि पीली पड़ गई है फिर चूर चूर हो जाती है और आख़िरत में (कुफ़्रार के लिए) सख़्त अज़ाब है और (मोमिनों के लिए) अल्लाह की तरफ़ से बख़्शिश और ख़ुशनूदी है और दुनियावी ज़िन्दगी तो बस धोखे का साज़ो सामान है। (आयत 20)

(vii) लोहे के फ़ायदे

लोहा से मुराद राजनीतिक और जंगी ताक़त है, इस के ज़रिए से अदल व इंसान क़ायम करना है। और हक़ व न्याय व्यवस्था से बगावत करने वालों को सज़ा देना है। (25)

(viii) रुहबानियत (monasticism)

रुहबानियत से मुराद किसी ख़ौफ़ की वजह से दुनिया छोड़कर किसी कुटी या जंगल की पनाह लेना, या दुनिया की ज़िंदगी के कष्ट से भाग कर जंगलों और पहाड़ों में पनाह लेना सबसे तअल्लुक़ तोड़कर किसी जगह तन्हा बैठ जाना। यह एक ग़ैर इस्लामी चीज़ है और यह कभी दीन हक़ में शामिल नहीं रही। (27)

पारा (28) क़द समेअ अल्लाहु

इस पारे में नौ हिस्से हैं-

- (1) सूरह (058) अल मुजादिला मुकम्मल
- (2) सूरह (059) अल हशर मुकम्मल
- (3) सूरह (060) अल मुमतहिना मुकम्मल
- (4) सूरह (061) अस सफ़्फ़ मुकम्मल
- (5) सूरह (062) अल जुमुआ मुकम्मल
- (6) सूरह (063) अल मुनाफ़िकून मुकम्मल
- (7) सूरह (064) अत तगाबुन मुकम्मल
- (8) सूरह (065) अत तलाक़ मुकम्मल
- (9) सूरह (066) अत तहरीम मुकम्मल

(1) सूरह (058) अल मुजादिला मुकम्मल

(i) ज़िहार और उसका बदला

क़बीला खज़रज की एक महिला ख़ौला बिनते सअलबा थीं जिनका विवाह क़बीला औस के सरदार उबादह बिन सामित के भाई औस बिन सामित से हुआ था। अरब में एक बुरा रिवाज यह था कि वह अपनी बीवी को "तुम मुझ पर मेरे मां की पीठ या पेट की तरह हो कह देते थे" जिसका मतलब यह था कि जिस तरह मां से संभोग हराम है उसी तरह उनकी बीवियां उनपर हराम हो गईं गोया कि यह तलाक़ से भी ज़्यादा सख़्त मामला था। चुनांचे औस बिन सामित ने भी ज़िहार कर लिया। ख़ौला बिनते सअलबा अल्लाह के रसूल के पास अपनी शिकायत लेकर पहुंचीं। पहले तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ामोश रहे। उन्होंने बच्चों का वास्ता दिया कि उनकी जिंदगी ख़राब होगी लेकिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यही जवाब दिया कि मेरा ख़याल है कि तुम अपने शौहर पर हराम हो गईं। यह सुनकर ख़ौला ने अल्लाह से शिकायत की और बार-बार शिकायत की। चुनांचे अल्लाह ने

उनकी शिकायत सुन ली और यह सूरह नाज़िल हुई जिसमें ज़िहार को एक झूठ और गंदा अमल करार दिया गया और उसके लिए कफ़र का ज़िक्र किया गया।

- ◆ गुलाम आज़ाद किया जाय
- ◆ या दो महीने लगातार रोज़ा रखा जाय,
- ◆ या साठ मिसकीनों को खाना खिलाया जाय। (1 से 6 तक)

(ii) आदाब

- ◆ अगर किसी मजलिस में हों तो कानाफूसी न की जाय यह शैतानी काम है।
- ◆ यहूदी और मुनाफ़ेक़ीन सलाम करते तो अस सामु अलैकुम (तुम को मौत आ जाए) कहते इसलिए अस्सलामु अलैकुम (तुमपर सलामती हो) कहा जाय।
- ◆ जब मजलिस में कुशादगी इस्तिथार करने को कहा जाय तो जगह कुशादह कर दिया जाय और जब रुख़सत होने को कहा जाय तो रुख़सत हो जाना चाहिए। (7, 8, 11)

(iii) शैतानी पार्टी

जिनके दिलों पर शैतान ने अपना कब्ज़ा जमा लिया है और अल्लाह की याद उनके दिल से भूला दी है इसीलिए यह लोग क़समें खा खा कर यक़ीन दिलाते हैं और अल्लाह व उसके रसूल से जंग करते हैं। दर हक़ीक़त यह शैतान की पार्टी के लोग हैं और शैतानी पार्टी ही नुक़सान में है। (19)

(iii) अल्लाह की पार्टी

जो लोग अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखते हैं वह अल्लाह और उसके रसूल के दुश्मनों से मुहब्बत नहीं करते चाहे वह उनके अपने बाप, भाई, बेटे, ख़ानदान ही क्यों न हो। यह अल्लाह की पार्टी वाले हैं। और अल्लाह की पार्टी वाले ही कामयाब हैं। (22)

(2) सूरह (059) अल हशर मुकम्मल

(i) बनी नज़ीर का निष्कासन

मदीने में यहूदियों के तीन क़बीले आबाद थे, बनी क़ैनकाअ, बनी नज़ीर और बनी कुरैज़ा, बनी क़ैनकाअ का निष्कासन 2 हिजरी में जंगें बदर में मुआहिदे तोड़ने के कारण हो चुका था, अब बनी नज़ीर ने सिर उठाना शुरू किया और नबी अलैहिस्सलाम के क़त्ल की साज़िश करने लगे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनपर चढ़ाई की। कई दिनों की घेराबंदी के बाद वह लोग वहां से निकलने पर मजबूरन तैयार हुए चुनाँचे उन्हें निष्काषित कर दिया गया। यह पहली जिलावतनी थी वह ख़ैबर की तरफ़ गए। बाद में उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दौर में उन्हें शाम (सीरिया) की तरफ़ निकाल दिया गया। (2 से 3)

(ii) माले फ़ै

जंग में लड़ाई के दौरान दुश्मन का जो माल हाथ लगे उसे माले ग़नीमत, और जो बेग़ैर जंग लड़े हाथ आ जाये उसे "माले फ़ै" कहते हैं। माले फ़ै पर केवल अल्लाह, रसूल, रसूल के क़रीबी, यतीम, मिस्कीन, और मुसाफ़िर का हक़ है। (6, 7)

(iii) रसूल के हुक्म के विषय में

जो कुछ रसूल तुम को दें उसे ले लो और जिस से रोक दें उस से रुक जाओ। (7)

(iv) मुहाजिर और अंसार की तारीफ़

मुहाजिर जिन्होंने अल्लाह की रज़ा और उसकी खुशी के लिए घर बार छोड़ा और अंसार ने तंगदस्त होने के बावजूद मुहाजिरीन को अपने पर तरजीह दी। यह कामयाब लोग हैं। अबु तल्हा अंसारी ने अपने बीवी बच्चों को भूखा रख कर नबी अलैहिस्सलाम के एक मेहमान को खाना खिलाया उसपर यह आयत "वह खुद पर दूसरों को तरजीह देते हैं अगरचे तंगदस्त हैं" नाज़िल हुई क्योंकि ईसार (preference) का यह अमल अल्लाह को बहुत पसंद आया। (ब हवाला सही मुस्लिम 5359 से 5361) (8, 9)

(v) शैतान इंसान के लिए एक धोखा है

शैतान इंसान को कुफ़्र के लिए उभारता है लेकिन जब इंसान कुफ़्र कर बैठता है तो वही शैतान यह कह कर अलग हो जाता है कि मैं तो अल्लाह रब्बुल आलमीन से डरता हूँ। (16)

(vi) एहतेसाब (अपना जायज़ा लेना) ज़रूरी है

इंसान को हर समय अपने आमाल का जायज़ा लेते रहना चाहिए कि उसने आने वाले कल यानी आखिरत के लिए क्या सामान किया है। (17)

(vii) कुरआन कोई मामूली किताब नहीं है

इंसान कुरआन को मामूली किताब समझता है और उसके नुज़ूल के मक़सद से नावाक़िफ़ है। अल्लाह तआला तो फ़रमाता है कि कुरआन ऐसी अज़ीम किताब है कि अगर उसे हम किसी पहाड़ पर नाज़िल कर देते तो वह अल्लाह के डर से टुकड़े टुकड़े हो कर गिर पड़ता। (21)

(viii) अल्लाह की मुख़्तलिफ़ सिफ़ात का बयान

अल्लाह की 14 सिफ़ात यहां बयान की गई हैं-

- (i) अर रहमान,
- (ii) अर रहीम,
- (iii) अल मलिक,
- (iv) अलकुद्दूस,
- (v) अस्सलाम,
- (vi) अल मोमिन
- (vii) अल मुहैमिन,
- (viii) अल अज़ीज़,
- (ix) अल जब्बार,
- (x) अल मुतकब्बिर,
- (xi) अल ख़ालिक,
- (xii) अल बारी,

(xiii) अल मुसव्विर,

(xiv) अल हकीम

(22 से 24)

(3) सूरह (060) अल मुमतहिना मुकम्मल

(i) इस्लाम दुश्मनों को हमराज़ न बनाया जाय

उन ग़ैर मुस्लिमों को दोस्त बनाया जा सकता है जिन से तुम्हारी जंग न चल रही हो। पहली आयत हातिब बिन अबी बलतआ रज़ियल्लाहु अन्हु के सिलसिले में नाज़िल हुई जब उन्होंने मक्का पर हमले का राज़ ज़ाहिर कर दिया था लेकिन फ़ौरन आप अलैहिस्सलाम को अल्लाह ने बा ख़बर कर दिया। (1, 8)

(ii) सुलह हुदैबिया

सुलह हुदैबिया में एक शर्त यह थी कि अगर मक्का से कोई व्यक्ति ईमान ला कर मदीना जाय तो उसे कुफ़्रार को वापस कर दिया जाएगा। लेकिन जब उम्मे कुलसूम बन्ते उक़बा बिन मुईत पहुंची तो औरतों को इस शर्त से अलग रखा गया क्योंकि यह शर्त मर्दों के लिए खास थी। (10)

(iii) मोमिन औरतों से बैअत

मोमिन औरतों से निम्न शर्तों के साथ बैअत लेने का हुक्म दिया गया

- ◆ शिर्क नहीं करेंगी,
- ◆ चोरी नहीं करेंगी,
- ◆ ज़िना नहीं करेंगी,
- ◆ औलाद को क़त्ल नहीं करेंगी,
- ◆ न हाथ और पैरों के दरमियान से कोई बुहतान घड़ कर लाएंगी,

- ◆ भले कामों में नाफ़रमानी नहीं करेंगी। (12)

(iv) कुछ अहम बातें

- ◆ किसी मुशरिक के लिए मग़फ़िरत की दुआ नहीं की जा सकती। (4)
- ◆ जिसे अल्लाह और आख़िरत पर यक़ीन हो उसके लिए रसूल की जिंदगी ही बेहतरीन नमूना (model) है। (6)
- ◆ मोमिन औरतें कुफ़्रार के लिए हलाल नहीं है और न कुफ़्रार की औरतें मोमिनों के लिए हलाल है। (10)

(4) सूरह (061) अस सफ़्फ़ मुकम्मल

(i) क़ौल व अमल

क़ौल व अमल में तज़ाद (विरोधाभास) अल्लाह को सख़्त ना पसंद है। (2, 3)

(ii) अल्लाह किस से मुहब्बत करता है?

अल्लाह उनसे मुहब्बत करता है जो सीसा पिलाई हुई दीवार बन कर जद्दोज़हद करते हैं। (4)

(iii) मोमिन कैसा हो?

मोमिन अपने रसूल और दीन के साथ ऐसे न हों जैसे कि बनी इस्राईल मूसा अलैहिस्सलाम को तंग करते रहे और ईसा अलैहिस्सलाम को खुली निशानियां देखने के बावजूद झुठलाते रहे। (5, 6)

(iv) ज़ालिम कौन

बड़ा ज़ालिम वह है जिसको इस्लाम की दावत दी जाय और वह उसे झुठला दे। (7)

(v) फ़ूको से यह चिराग़ बुझाना

फूँको से यह चिराग़ बुझाया न जाएगा बल्कि अल्लाह अपने नूर को पूरा कर के रहेगा। (8)

(vi) अल्लाह ने रसूल को क्यों भेजा?

अल्लाह ने अपने रसूल को हिदायत और दीने हक़ के साथ भेजा है ताकि तमाम अदयान पर ग़ालिब करदे। (9)

(vii) सबसे अच्छी तिजारत जिसका बदला जन्नत और अल्लाह की रज़ा है

- ◆ अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान,
- ◆ जान व माल से अल्लाह की राह में संघर्ष करना। (11, 12)

(viii) अल्लाह की मदद का ऐलान

ईमान वाले अल्लाह की मदद का वैसे ही ऐलान करें जैसे ईसा अलैहिस्सलाम के हुवारियों ने ऐलान किया था कि "हम हैं अल्लाह के रास्ते में आप के मददगार" (14)

(5) सूरह (062) अल जुमुआ मुकम्मल

(i) रसूल भेजने का मक़सद

अल्लाह की आयात की तिलावत (पढ़ना और लोगों को सुनाना) तज़किया (पाक) करना, किताब व हिकमत की तालीम देना। (2)

(ii) रिसालत अल्लाह का फ़ज़ल है जिसे चाहता है देता है

यहूदी यह समझते थे कि नबूवत उनकी जागीर है, उनकी क़ौम के बाहर का जो व्यक्ति भी नबूवत का दावा करे वह झूठा है। उम्मियों में कोई रसूल नहीं हो सकता। उनका जवाब दिया गया है कि रिसालत किसी की जागीर नहीं बल्कि यह तो अल्लाह का फ़ज़ल है जिसे चाहता है देता है। (4)

(iii) बे अमल उलेमा की मिसाल

बे अमल उलेमा की मिसाल उस गधे जैसी है जिसपर किताबें तो खूब लदी होती हैं लेकिन उसे नहीं मालूम होता कि उसमें क्या है? (5)

(iv) जुमुआ की फ़ज़ीलत

एक बार नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खुल्बा दे रहे थे कि कुछ ताजिर आ गए उनके ढोल ताशे की आवाज़ सुन कर 12 लोगों के इलावा सभी क़ाफ़िले की तरफ़ दौड़ पड़े। इस पर यह दूसरा रुकूअ नाज़िल हुआ। जिसमें कहा गया कि जब जुमुआ की अज़ान हो जाय तो तमाम काम छोड़ कर अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ दौड़ पड़ो क्योंकि अल्लाह ही बेहतरीन राज़िक़ है। अलबत्ता जब नमाज़ मुकम्मल हो जाये तो रिज़क़ की तलाश में निकल सकते हो। (9 से 11)

(6) सूरह (063) अल मुनाफ़िकून मुकम्मल

(i) मुनाफ़ेक़ीन की सिफ़ात

ज़ाहिर और बातिन में फ़र्क़, ज़बान से इस्लाम का दावा और दिल में कुफ़्र, झूठी क़सम खाना, घमंड, लोगों को अल्लाह की राह में खर्च करने से रोकना, मौक़ा मिलते ही किसी की इज़्ज़ते नफ़्स पर हमला। (1 से 3, 7)

(ii) मुनाफ़ेक़ीन का अंजाम

अल्लाह मुनाफ़ेक़ीन की हरगिज़ मग़फ़िरत नहीं करेगा चाहे अल्लाह के रसूल ही क्यों न उनके लिए इस्तेग़फ़ार करें। (6) सूरह अत तौबा आयत 80 में है कि अगर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन के लिए सत्तर बार भी मग़फ़िरत की दुआ करेंगे तो भी अल्लाह उन्हें हरगिज़ माफ़ नहीं करेगा।

(iii) इज़्ज़त वाला ज़िल्लत वाले को निकाल बाहर करेगा

ग़ज़वा ए बनी मुस्तलिक़ से वापसी के मौक़ा पर मुनाफ़ेक़ीन के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबई ने कहा था कि मदीना पहुंचते ही हम में से इज़्ज़त वाला ज़िल्लत वाले को निकाल बाहर करेगा। उसका जवाब दिया है कि इज़्ज़त तो अल्लाह और उसके रसूल और मोमिनीन के लिए है। (8)

(iv) माल व औलाद आजमाइश हैं

माल व औलाद इंसान को अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल न कर दे जो ऐसा करेगा वह नुक़सान में होगा। (9)

(v) मौत से पहले मौत की तैयारी

मौत से पहले मौत की तैयारी करें क्योंकि जब मौत का वक़्त आ जायेगा तो फिर मुहलत नहीं मिलेगी। (11)

(7) सूरह (064) अत तगाबुन मुकम्मल

(i) चार वास्तविकताएँ

- ◆ यह ब्रह्माण्ड जिसमें मानव रहते हैं इसका एक ख़ुदा है और वह ऐसा है कि जिसके पूर्ण और बेऐब होने की गवाही इस कायनात की हर वस्तु दे रही है।
- ◆ यह कायनात बेकार और बग़ैर हिकमत के नहीं बनाई गई है अल्लाह ने इसे बरहक़ (सच) पैदा किया है।
- ◆ मानव को अल्लाह ने सर्वश्रेष्ठ सुरत दी है और कुफ़्र व ईमान के इख़्तियार की आज़ादी दी है इसका उद्देश्य यह है कि मानव अपने इख़्तियार को कैसे इस्तेमाल करता है।
- ◆ मानव इस धरती पर बे नकेल का ऊंट नहीं है। उसे अल्लाह की तरफ़ पलट कर जाना ही है। जो खुले छुपे तमाम कामों से भलीभांति वाकिफ़ है। (1 से 7)

(ii) कमी बेशी का दिन (يَوْمُ النَّعَابِ)

क़यामत के दिन का ज़िक्र मुख़्तलिफ़ नामों से हुआ है उसमें एक "यौमुत तगाबुन" भी है जो सबसे ज़्यादा भरपूर लफ़ज़ है कि वहां जाकर पता चलेगा कि कौन नुक़सान में है और किसने फ़ायदा उठाया, किसका हिस्सा किसे मिल गया और कौन अपने हिस्से से महरूम रह गया, धोखा किसने खाया और कौन होशियार निकला। (9)

(iii) बीवियां और औलाद तुम्हारे दुश्मन

तुम्हारी बीवियां और औलाद तुम्हारे दुश्मन हैं उन से बचो, यानी अल्लाह के हुक्म की अदायगी में यह रुकावट न बनें। माल व औलाद तो इंसान की आजमाइश के लिए है। (14)

(iv) कर्ज़ हसन

जो किसी ज़ाती गरज़ के बग़ैर ख़ालिस नियत के साथ दिया जाय, किसी क्रिस्म का दिखावा और शुहरत व नामवरी की तलब शामिल न हो, उसे दे कर किसी पर एहसान न जताया जाय, सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा के लिए हो उसके इलावा किसी और से अज़्र व खुशी की उम्मीद न की जाय। इस कर्ज़ के मुतअल्लिक अल्लाह के दो वादे हैं। 1, उस को कई गुना बढ़ा कर वापस करेगा, 2, अपनी तरफ़ से बेहतरीन अज़्र अता फ़रमाएगा। (18)

(v) कुछ अहम बातें

- ◆ हर मुसीबत अल्लाह के हुक्म से होती है इसलिए सब्र किया जाय।
- ◆ अल्लाह और उसके रसूल की इताअत शर्त है, रसूल पर तो केवल पैग़ाम पहुंचा देने की ज़िम्मेदारी है। (11, 12)

(8) सूरह (065) अत तलाक़ मुकम्मल

(i) तलाक़ के नियम

तलाक़ इद्त के लिए दी जाय, इद्त का हिसाब रखा जाय, इद्त के दौरान औरत को न घर से निकाला जाय और न वह खुद निकलें। जब इद्त पूरी होने के करीब हो तो शौहर चाहे तो बीवी को रोक ले और चाहे तो भले तरीक़े से अलग कर दे, उसपर गवाही क़ायम की जाय। इद्त के दौरान वहां रखे जहां शौहर खुद रहता हो। जुदाई के बाद भी अगर औरत को गर्भ है तो बच्चे के पैदा होने तक उसे खर्च दिया जाय, पैदाइश के बाद अगर औरत दूध पिलाये तो उसका खर्च शौहर पर देना अनिवार्य है। (1, 2, 6)

(ii) इद्त पांच तरह से है

- ◆ वह औरतें जिन्हें तलाक़ दी गई हो उन की इद्दत तीन मासिक धर्म (हैज़) है। (अल बक्ररह आयत 228)
- ◆ बेवा की इद्दत चार महीने दस दिन है। (अल बक्ररह आयत 234)
- ◆ वह तलाक़ शुदा औरतें जिन को मासिक धर्म (हैज़) आना बंद हो गया हो उनकी इद्दत तीन महीने है।
- ◆ वह तलाक़ शुदा औरतें जिन को मासिक धर्म (हैज़) आया ही न हो उनकी इद्दत भी तीन महीने है।
- ◆ तलाक़ शुदा हो या बेवा औरतें अगर उसे हमल (pregnancy) है तो उनकी इद्दत बच्चे के पैदा होने तक है। (4)

(iii) रब की नाफ़रमानी का अंजाम

जब कोई क़ौम अपने रब की नाफ़रमानी में मुब्तिला हो जाती है तो उसपर अल्लाह का अज़ाब नाज़िल होता है। (8, 9)

(iv) सात आसमान और सात ज़मीन

अल्लाह ही है जिसने सात आसमान बनाये और उसी के समान ज़मीन बनाई। (12)

(9) सूरह (066) अत तहरीम मुकम्मल

(i) नबी का इख़्तियार

अल्लाह की हराम व हलाल की हुई चीज़ों में नबी को भी कोई इख़्तियार नहीं है। (1)

(ii) अज़वाज ए मुतहहरात को तंबीह

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उम्मुल मोमेनीन ज़ैनब बिनते जहश रज़ि अल्लाहु अन्हा के पास कुछ देर ठहरते और वहां शहद पीते थे, उम्मुल मोमेनीन आएशा और हफ़सा रज़ियल्लाहु अन्हुमा ने वहां ज़्यादा देर ठहरने से रोकने के लिए एक योजना बनाई कि उनमें से जिस के पास भी अल्लाह के रसूल आए तो कहे कि आप के मूंह से मगाफ़ीर की बू आती

है (मगाफ़ीर एक क्रिस्म का फूल होता है जिसमें कुछ महक होती है और अगर शहद की मक्खी उस से शहद हासिल कर ले तो उसके अन्दर भी वह महक आने लगती है) चुनाँचे उन्होंने ऐसा ही किया। आपने जवाब में फ़रमाया, मैंने तो ज़ैनब के यहां सिर्फ़ शहद पिया है अब मैं क़सम खाता हूँ कि कभी शहद नहीं पियूँगा लेकिन यह बात किसी को मत बताना। मगर यह बात एक ने दूसरे से बता दी उसपर अल्लाह ने तंबीह की कि तुम दोनों तौबा करो नहीं तो हो सकता है कि रसूल तुम्हें तलाक़ दे दे और अल्लाह तुम्हारे बदले मोमिन, फ़रमाबरदार, तौबा करने वाली, इबादत गुज़ार, रोज़ादार, बेवा और कुंवारी बीवियां अता कर दे। (3 से 5, सही बुखारी 4912, 6691)

(iii) सच्ची तौबा

मोमिन को ऐसी तौबा करना चाहिए कि उसके बाद गुनाह के क़रीब न फटके। ऐसी तौबा का बदला जन्नत है। (4)

हदीस में है, जिसने तन्हाई में अल्लाह को याद किया और आंखों से आंसू जारी हो गए वह क़यामत के दिन अल्लाह के साये में होगा। (सही बुखारी 660)

(iv) जहन्नम की आग

लोगों पर वाजिब है कि खुद को और अपने बीवी बच्चों को जहन्नम की आग से बचाने की फ़िक्र करें। (6)

(v) इस्लाम किसी की जागीर नहीं

नूह और लूत अलैहिमस्सलाम की बीवियां काफ़िर थीं जबकि फ़िरऔन की बीवी आसिया मुस्लिम और जन्नत में औरतों की सरदार होंगी। ऐसे ही मरयम अलैहस्सलाम की पाकीज़गी की गवाही दी गई है। (10 से 12)

पारा (29) तबारकल लज़ी

इस पारे में ग्यारह हिस्से हैं-

- (1) सूरह (067) अल मुल्क मुकम्मल
- (2) सूरह (068) अल क़लम मुकम्मल
- (3) सूरह (069) अल हाक्का मुकम्मल
- (4) सूरह (070) अल मआरिज मुकम्मल
- (5) सूरह (071) नूह मुकम्मल
- (6) सूरह (072) अल जिन्न मुकम्मल
- (7) सूरह (073) अल मुज़म्मिल मुकम्मल
- (8) सूरह (074) अल मुद्स्सिर मुकम्मल
- (9) सूरह (075) अल क़यामह मुकम्मल
- (10) सूरह (076) अद दहर (अल इंसान) मुकम्मल
- (11) सूरह (077) अल मुरसिलात मुकम्मल

(1) सूरह (067) अल मुल्क मुकम्मल

(i) मौत और ज़िंदगी का मक़सद

मौत और ज़िंदगी का मक़सद इंसान की आजमाइश है कि कौन अच्छे अमल करने वाला है। (2)

(ii) सोचने व ग़ौर करने की दावत

सात आसमान की अनोखी तखलीक़, उसको सितारों से सजाना, शैतान की पहुंच से दूर रखना, ज़मीन को वश में करना, पक्षियों का पर फैला कर उड़ना और उन्हें समेट लेना, इंसान की पैदाइश और उसके कान, आँख और दिल जैसे अहम पार्ट। (3, 15, 19, 23)

(iii) जहन्नम के दारोगा का सवाल

जब कोई गिरोह जहन्नम में डाला जाएगा तो दारोगा उस से पूछेगा कि तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया फिर वह खुद अपने खिलाफ़ गवाही देंगे। (8)

(iv) कौन है जो समस्याओं का समाधान कर सके

अगर अल्लाह तुम्हारे साथ ज़मीन को धंसा दे, आसमान से पत्थर बरसा दे, रिज़क़ को रोक ले, पानी को ज़मीन की सतह से गायब कर दे तो फिर कौन है जो इन समस्याओं का समाधान कर सके। (16, 17, 21, 30)

(2) सूरह (068) अल क़लम मुकम्मल

(i) नबी के अख़लाक़ की गवाही

ऐ नबी! आप अपने रब के फ़ज़ल से मजनून नहीं हैं, आपके लिए तो न ख़त्म होने वाला अज़्र है, आप तो अख़लाक़ की अज़ीम बुलंदी पर विराजमान हैं। (2 से 4)

(ii) वलीद बिन मुगीरह की दस सिफ़ात

1. झूठा
2. बहुत ज़्यादा क़समें खाने वाला
3. कमीन
4. ताने देने वाला
5. चुगलखोर
6. भलाई से रोकने वाला

7. जुल्म व ज़्यादती में हद से आगे बढ़ जाने वाला
8. बुरे अमल करने वाला
9. बहुत ज़्यादा मॉल व औलाद वाला,
10. बद असल (हरामी)

(8 से 15)

जब यह आयत नाज़िल हुई तो वलीद बिन मुगीरह ने अपनी माँ से जाकर कहा कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने मेरे बारे में दस बातें बताई हैं। नौ को मैं जानता हूँ कि मुझ में मौजूद हैं लेकिन दसवीं बात बदअस्ल (हरामी) होने की, इसका हाल मुझे मालूम नहीं। अब तू या तो मुझे सच सच बता दे वरना मैं तेरी गर्दन अभी उड़ा दूँगा। इस पर उसकी माँ ने कहा कि तेरा पिता मुगीरह नपुंसक था मुझे अंदेशा हुआ कि वह मर जाएगा तो उसका माल दूसरे उड़ा ले जाएंगे तब मैंने एक चरवाहे को बूला लिया। तू उसी चरवाहे की औलाद है। (कंजुल ईमान फ़ी तरजमतिल कुरआन, हाशिया नईमुद्दीन मुरादाबादी तफ़सीर सूरह अल क़लम)

(iii) बाग़ वालों का वाकिआ

कुछ लोग जिन का एक बाग़ था जिसमें ख़ूब फल लगे हुए थे फिर फ़सल पक गई तो उन्होंने आपस में मशविरा किया कि वह कल सुबह फल तोड़ लेंगे। उनको इतना घमंड हो गया था कि इन शा अल्लाह भी नहीं कहा और नीयत इतनी ख़राब हो गई थी कि वह सुबह अंधेरे ही निकले तो एक दूसरे से यह कानाफूसी कर रहे थे कि आज हरगिज़ कोई मिस्कीन खेत में दाख़िल न होने पाए। इसका अंजाम यह हुआ कि अल्लाह ने रातों रात आफ़त भेज दी और वह पूरा बाग़ कटी हुई फ़सल की तरह हो गया। जब उन्होंने बाग़ की यह हालत देखी तब उन्हें ख़ुदा याद आया। ऐसे ही अज़ाब आता है और आख़िरत का अज़ाब तो और भी सख़्त होगा। (17 से 33)

(iv) रसूल को नसीहत

- ◆ सब्र करें,
- ◆ मछली वाले (यूनुस अलैहिस्सलाम) की तरह जल्दबाज़ी न करें,
- ◆ काफ़िर तुम्हारे क़दम डगमगा न दें। (48, 51)

(3) सूरह (069) अल हाक्का मुकम्मल

(i) रसूल को झुठलाने का अंजाम

क्रयामत को झुठलाने के नतीजे में क़ौमे समूद सख्त ज़लज़ले से, क़ौमे आद को सात रात और आठ दिन चलने वाली तूफ़ानी आंधी से, फिरौन को समुद्र में डुबो कर और क़ौमे नूह को तूफ़ानी बारिश से अल्लाह ने तबाह व बर्बाद कर दिया। (3 से 12)

(ii) क्रयामत का नक्शा

जब पहला सूर फूँका जायेगा तो ज़मीन और पहाड़ एक ही चोट में चूर चूर हो जाएंगे, आसमान फटेगा और उसकी पकड़ ढीली हो जाएगी, उस रोज़ आठ फ़रिश्ते रब का अर्श उठाये हुए होंगे। उस दिन किसी की कोई बात छुपी हुई न होगी। (13 से 18)

(iii) नेक लोगों का अंजाम

नेक लोगों का कर्म पत्र उनके दाहिने हाथ में दिया जाएगा, वह पसन्दीदा सुखमय जीवन में होगा। ऊँचे बाग़ में जिसके फल झुके पड़ रहे होंगे। उन से कहा जाएगा, खाओ और पियो आनन्दपूर्वक, उन कर्मों के बदले में जो तुमने बीते दिनों में किये हैं। (19 से 24)

(iv) बुरे लोगों का अंजाम

बुरे लोगों का कर्मपत्र उनके बाएं हाथ में दिया जाएगा, उनका वहां कोई ज़िगरी दोस्त नज़र नहीं आएगा। दुनिया में कमाया हुआ माल, और इक्तेदार भी कुछ काम नहीं आ सकेगा। उसे पकड़ कर जहन्नम में झोंक दिया जाएगा और सत्तर गज़ लम्बी जंजीर में जकड़ दिया जाएगा क्योंकि वह दुनिया में न तो अल्लाह पर ईमान रखता था और न मिस्कीन को खाना खिलाने पर उकसाता था। पीप और ज़ख्मों का धोवन उसका खाना होगा। (25 से 37)

(4) सूरह (070) अल मआरिज मुकम्मल

(i) क़यामत का आना

मांगने वालों ने जब अज़ाब ही मांगा है तो वह अल्लाह ज़िल मआरिज (बुलंद व बाला) की तरफ़ से आयेगा जहां पहुंचने में फ़रिश्तों और रूह यानी जिब्रील को पचास हज़ार साल लगते हैं। (1 से 4)

(ii) क़यामत का दृश्य

आसमान पिघली हुई चांदी और पहाड़ धुनी हुई रुई की तरह हो जाएगा। जिगरी दोस्त एक दुसरे को दिखाए जाएंगे लेकिन वह एक दूसरे से बात नहीं करेंगे। बल्कि मुजरिम तो अपनी बीवी, अपने भाई, अपने मोहसिन, और दुनिया के तमाम लोगों को बदले में दे कर बचना चाहेगा लेकिन वह तो आग की लिपट हो होगी जो चमड़ी तक उधेड़ देगी। (8 से 16)

(iii) इंसान तंगदिल है।

इंसान थुड़दिला (तांगदिल) पैदा किया गया है। जब मुसीबत आती है तो घबरा जाता है और जब खुशहाली आती है तो नाशुक्रा हो जाता है। (19 से 21)

(iv) जन्नत के वारिस कौन

- ◆ जो पाबन्दी से नमाज़ अदा करते हैं,
- ◆ अपने माल में मांगने वाले और न मांगने वाले ग़रीबों का हक़ समझते हैं,
- ◆ आखिरत के दिन को सच जानते हैं,
- ◆ रब के अज़ाब से डरते हैं,
- ◆ शर्मगाह की हिफ़ाज़त करते हैं,
- ◆ अमानत में ख़यानत और वादा ख़िलाफ़ी नहीं करते,
- ◆ अपनी शहादत को कायम रखते हैं
- ◆ अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं। (23 से 35)

(5) सूरह (071) नूह मुकम्मल

(i) नूह अलैहिस्सलाम की दावत

ए मेरी क्रौम! मैं तुम्हें डराने वाला हूं, अल्लाह की इबादत करो, उसी का तक्रवा इस्तिथार करो, मेरी बात मानो अल्लाह तुम्हारी गलतियों को माफ़ कर देगा। (2 से 4)

(ii) नूह अलैहिस्सलाम का अपनी क्रौम पर अफ़सोस

मैंने अपनी क्रौम को रात और दिन मुसलसल दावत दी। जब जब मैंने उनको दावत दी उन्होंने अपने कानों में उंगलियां ठूंस लीं, ज़िद पर अड़े रहे और घमंड किया, मैंने उन्हें दिन के उजाले में भी दावत दी और रात के अंधेरे में भी। और कहा अल्लाह से माफ़ी चाहो बेशक अल्लाह माफ़ करने वाला है। अगर ऐसा करोगे तो आसमान से बारिश नाज़िल होगी और तुम्हारे माल और औलाद में बढ़ोतरी होगी, वह तुम्हारे लिए बागात और नहरें बनाएगा। (5 से 12)

(iii) इंसान की तखलीक़ के मराहिल

धूल, नर्म मिट्टी, गीली, लेसदार, चिकनी, खमीरी, बदबु वाली, सुखी, गर्मी से पकी हुई, नुफ़्रा, अलका, मुज़गा एज़ाम (हड्डी) गोश्त, बचपन, जवानी, अधेड़पन, बुढ़ापा, (14)

(iv) नूह अलैहिस्सलाम की अपनी क्रौम के हक़ में बददुआ

ऐ मेरे पालनहार, मेरी क्रौम ने मेरा कहा न माना, बड़े षड़यन्त्र किए। उन्होंने अपने माबूदों को न छोड़ा और न वद्द, सुवाअ, यगूस, यऊक़ और नसर को छोड़ा। उन्होंने बहुत लोगों को भटका दिया और खुद भी भटकते चले गए। ऐ मेरे रब तू इन नाफ़रमान लोगों में से किसी को भी धरती पर जीवित न छोड़। (21 से 24, 26)

(6) सूरह (072) अल जिन्न मुकम्मल

(i) जिन्नों का ईमान लाना

तायफ़ से वापसी में नबी करीम अलैहिस्सलाम नख़ला की वादी में कुरआन मजीद की तिलावत कर रहे थे कि जिन्नों के एक समूह का गुज़र हुआ तो उन्होंने कुरआन सुना और

ईमान लाए और अहद किया कि अपने रब के साथ कभी किसी को साझी नहीं बनायेंगे। (1 से 3)

(ii) आखिरी नबी होने की निशानी

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नबी बनाये जाने से पहले जिन्नात सुन गन लेने के लिए आसमान में घात लगाया करते थे लेकिन जब से आप नबी बनाये गए अब अगर कोई जिन्न सुन गुन लेने की कोशिश करता है तो एक चमकता हुआ सितारा (शहाबे साकिब) उसका पीछा करता है। (8 से 10)

(iii) मस्जिदें अल्लाह का घर हैं

मस्जिदें अल्लाह की इबादत के लिए हैं उनमें किसी और को न पुकारा जाय। (18)

(iv) ग़ैब का जानने वाला केवल अल्लाह है

कुछ इंसान जिन्नों की पनाह मांगते थे और उन्हें आलिमुल ग़ैब समझते थे तो यह मालूम होना चाहिए कि अल्लाह ही आलिमुल ग़ैब है वह अपने ग़ैब का इल्म अपने रसूलों के इलावा किसी को नहीं देता। उन्हें भी जितना चाहता है देता है। (6, 26, 27)

(7) सूरह (073) अल मुज़्ज़म्मिल मुकम्मल

(i) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की इबादत का बयान

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कभी आधी रात, कभी आधी रात से कम और कभी आधी रात से ज़्यादा इबादत करते थे लेकिन अब अल्लाह ने आप को सहूलत दे दी कि आप इतना जागें जितना आसानी से मुमकिन हो। (1 से 4, 20)

(ii) कुरआन को तरतील से पढ़ने से क्या मुराद है

- ◆ अहिस्ता पढ़ा जाय,
- ◆ रफ़्तार ज़्यादा न हो जैसे बाल काटने के लिए कैन्ची चलती है,
- ◆ इत्मीनान से पढ़ा जाय भागम भाग न हो,

- ◆ ठहर ठहर कर पढ़ा जाय खत्म करने की जल्दी न हो,
- ◆ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर आयत को अलग अलग पढ़ते थे।
- ◆ खूबसूरत आवाज़ में पढ़ा जाय,
- ◆ आयत को बार बार दुहराया भी जा सकता है,
- ◆ जहां ज़रूरत हो रुक कर दुआ की जाय,
- ◆ जहां ज़रूरत हो तस्बीह की जाय और जहां ज़रूरत हो माफ़ी तलब की जाय। (4)

(iii) सब्र की नसीहत

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कुफ़्रार की तरफ़ से तकलीफ़ पहुँचने पर सबरे जमील की नसीहत की गई। (10)

(iv) चार बातों का आदेश

- ◆ कुरआन मजीद में से जो आसान लगे उसे पढ़ने,
- ◆ नमाज़ क़ायम करने,
- ◆ सदक़ा करने, और
- ◆ क़र्ज़ हसना (खूबसूरत क़र्ज़) देने का हुक्म दिया गया है। (20)

(8) सूरह (074) अल मुद्स्सिर मुकम्मल

(i) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आम दावत का आदेश

- ◆ ऐ चादर लपेटने वाले उठो,
- ◆ लोगों को डराओ,
- ◆ अपने रब की बड़ाई बयान करो,

- ◆ अपने कपड़े पाक साफ़ रखो,
- ◆ गंदगी को दूर करो,
- ◆ ज़्यादा की तलब में एहसान न करो,
- ◆ अपने रब की रज़ा के लिए आने वाली तकलीफ़ पर सब्र करो। (1 से 7)

(यह दूसरी वही (وَحْ) है जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुई)।

(ii) वलीद बिन मुगीरह की गुमराही और उसको को दी गई नेअमतें

- ◆ अल्लाह ने इकलौता पैदा किया,
- ◆ ख़ूब मदलदार बनाया,
- ◆ हाज़िर रहने वाले बेटे दिए,
- ◆ उसके लिए रियासत की राह बनाई।

लेकिन नाशुक्री और इस्लाम दुश्मनी में हद से गुज़र गया इसलिए अब उसका ठिकाना जहन्नम है। (11 से 30) (1)

(iii) जहन्नमियों का अपने जुर्म का इकरार

- ◆ हम नमाज़ नहीं पढ़ते थे,
- ◆ मिस्कीन को खाना नहीं खिलाते थे,
- ◆ हक़ के खिलाफ़ बातें करने वालों के साथ हम भी बातें बनाते थे,
- ◆ आखिरत के दिन को झुठलाते थे। (42 से 46)

(iv) कुछ अहम बातें

- ◆ कुफ़्र करने वाले जंगली गधे हैं जो शेर से भाग रहे हैं (50, 51)
- ◆ कुरआन एक नसीहत है जिसका दिल चाहे नसीहत हासिल करे,
- ◆ तक्रवा और मग़फ़िरत के तलबगार ही नसीहत हासिल करते हैं। (54 से 56)

बदनसीब वलीद बिन मुगीरा

वलीद बिन मुगीरह का तअल्लुक़ क़बीला ए कुरैश की एक शाख़ बनी मख़ज़ूम से था। यह कुरैश का सबसे धनवान व्यक्ति था। उसकी वार्षिक आय एक करोड़ दीनार थी। मक्के से तायफ़ तक उसकी ज़मीनें थीं। एक दिन वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास गया उस समय आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुरआन की तिलावत कर रहे थे कुरआन सुनकर उसका दिल नरम हो गया। सूचना अबु जहल को पहुंची, वह फ़ौरन उसके पास आया और कहा तुम्हारी क़ौम चाहती है कि तुम्हारे लिए माल जमा करे। उसने कहा किस लिए? उसने कहा यह माल वह तुम्हें देना चाहती है क्योंकि तुम मुहम्मद के पास गए थे और तुम पर उसका असर हो गया है। वलीद ने कहा कुरैश को मालूम है कि मैं उन तमाम में मालदार व्यक्ति हूं। अबु जहल ने सोचा कि अगर वलीद बिन मुगीरह ने इस्लाम कुबूल कर लिया तो फिर कुरैश का हर व्यक्ति मुसलमान हो जाएगा। इससे रोकने के लिए अबु जहल ने कुरैश के सरदारों की एक कॉन्फ्रेंस बुलाई जिसमें तय किया गया कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के खिलाफ़ हज्ज के मौक़ा पर एक प्रोपेगैंडा शुरू कर दिया जाय। मीटिंग में कुछ लोगों ने राय दी कि हम मुहम्मद को काहिन कहेंगे। वलीद ने कहा, नहीं! अल्लाह की क़सम वह काहिन नहीं है। हमने काहिनों को देखा है जैसी वह बातें गुनगुनाते हैं और जिस तरह के जुमले जोड़ते हैं कुरआन को उनसे दूर की निस्बत भी नहीं है। कुछ बोले उन्हें मजनून कहा जाए। वलीद ने कहा, वह मजनून भी नहीं है। हमने दीवाने और पागल देखे हैं इस हालत में आदमी जैसी बहकी बहकी बातें और उल्टी सीधी हरकत करता है वह किसी से छुपी हुई नहीं है। कौन यक़ीन करेगा कि मुहम्मद जो कलाम पेश करते हैं वह दीवानगी की बड़ है या जुनून के दौरों में आदमी ऐसी बातें कर सकता है। लोगों ने कहा, अच्छा तो फिर हम शायर कहेंगे। वलीद ने कहा, शायर भी नहीं है, हम शायरी की तमाम अक़्साम से वाकिफ़ हैं इस कलाम में शायरी की कोई क़िस्म भी नहीं पाई जाती। लोग बोले तो क्या उनको साहिर (जादुगर) कहा जाए। वलीद ने कहा वह साहिर भी नहीं है, जादूगरों को हम जानते हैं वह अपने जादू के लिए जो तरीक़े इस्तिहार करते हैं उनसे भी हम वाकिफ़ हैं, यह बात भी मुहम्मद पर चस्पां नहीं होती। फिर वलीद ने कहा इन बातों में जो बात भी तुम करोगे लोग उसको बिना वजह इल्ज़ाम समझेंगे। अल्लाह की क़सम इस कलाम में बड़ी मिठास है उसकी जड़ बड़ी गहरी है और उसकी डालियां बड़ी फलदार हैं इस पर अबु जहल वलीद के सिर हो गया कि तुम्हारी क़ौम तुमसे ख़ुश न होगी जब तक कि तुम मुहम्मद के बारे में कोई बात न करो, उसने कहा अच्छा, फिर सोच विचार में गुम हो गया और कुछ बात बनाने की कोशिश की, फिर नज़र उठाई, तेवरी चढ़ाई और मुंह बनाया, पलटा और घमंड सवार हो ही गया आखिर बोल पड़ा, कि इसे इंसान की वाणी और जादू ही मशहूर कर दो जो बहुत जल्द असर कर जाता है।

(9) सूरह (075) अल क़यामह मुकम्मल

(i) जब क़यामत क़ायम होगी

जब क़यामत क़ायम होगी तो निगाहें चकाचौंध हो जाएंगी, चांद गहना जायेगा, सूरज और चांद एक जगह इकट्ठे कर दिए जाएंगे, उस समय इंसान हैरान होकर कहेगा कि अब भागने की जगह ही कहाँ है? अब तो रब की पकड़ से कोई बचा ही नहीं सकता। उस दिन बहुत से चेहरे तर्रो ताज़ा (Fresh) होंगे और बहुत से चेहरों पर हवाईयां उड़ रही होंगी। (1 से 11 और 22 से 24)

(ii) नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नसीहत

जब वही (ﷺ) आती तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जल्दी जल्दी पढ़ने लगते कि कहीं भूल न जाएं उस पर अल्लाह ने फ़रमाया ऐ नबी आप जल्दी न करें बल्कि ग़ौर से सुनें इसको पढ़ाना और समझाना हमारी ज़िम्मेदारी है। (16 से 19)

(iii) इंसान इस संसार में बे नकेल का ऊंट नहीं है

इंसान को एहसास दिलाया गया है कि उसे पैदा करके बे नकेल का ऊंट बनाकर नहीं छोड़ दिया गया है बल्कि आखिरत का मरहला रखा गया है ताकि दुनिया में किये हुए कर्मों का हिसाब दे सके। (36)

(iv) इंसान के फिंगर प्रिंट्स

हम इस बात पर क़ादिर हैं कि पोर पोर को ठीक कर दें (بَلَىٰ قَدِيرِينَ عَلَىٰ أَنْ تُسَوِّيَ بَنَانَهُ) (finger prints के हवाले से इस आयत पर ग़ौर किया जा सकता है।

काफ़िर और नास्तिक यह आपत्ति जताते हैं कि कोई व्यक्ति मर जाने के बाद जब मिट्टी में मिल जाता है और उसकी हड्डियां तक सड़ गल जाती है तो यह कैसे संभव है कि क़यामत के दिन उसके शरीर का एक एक कण पुनः जोड़ कर पहले वाली (जीवित) हालत में वापस आ जाय और अगर ऐसा हो भी गया तो क़यामत के दिन उस व्यक्ति की पहचान कैसे हो सकेगी? अल्लाह ने उक्त आयात में इस आपत्ति का स्पष्ट जवाब देते हुए कहा है कि वह (अल्लाह) केवल इसी पर शक्ति नहीं रखता कि बिखरी हुई छोटी छोटी हड्डियों को एकत्रित कर वापस जोड़ दे। बल्कि इस पर भी समर्थ है कि हमारी उँगलियों की पोरों (finger tips) तक पुनः पहले वाली स्थिति में ठीक ठीक ले आए।

सवाल यह है कि जब कुरआन मनुष्य की व्यक्तिगत पहचान की बात कर रहा है तो उँगलियों की पोरों की विशेष रूप से चर्चा क्यों कर रहा है? इस का पता उस समय लगा जब सर फ्रानसिस गोल्ड (sir Frances Gold) के अनुसंधान (research) के बाद 1880 में उँगलियों के निशान (finger prints) को पहचान के वैज्ञानिक तरीके का दर्जा प्राप्त हुआ। आज हम यह जानते हैं कि इस दुनिया में कोई भी दो लोगों की उँगलियों के निशान का नमूना बिल्कुल एक जैसा नहीं हो सकता यहां तक कि एक जैसे जुड़वां (Twins) लोगों का भी नहीं, यही कारण है कि आज दुनिया भर में अपराधियों की पहचान के लिए उनकी उँगलियों के निशान ही इस्तेमाल किए जाते हैं क्या कोई बता सकता है कि आज से 1440 साल पहले किसे उँगली के निशान की विशिष्टता के बारे में पता था? निश्चित रूप से यह ज्ञान अल्लाह के सिवा किसी को नहीं हो सकता था। (आयत 4 के हवाले से)

(10) सूरह (076) अद दहर (अल इंसान) मुकम्मल

(i) एक समय में इंसान कुछ भी न था

इंसान पर एक ऐसा दौर भी गुज़रा है जब वह कुछ भी न था फिर अल्लाह ने उसे मिश्रित बूंद से पैदा किया और हिदायत का रास्ता सामने रख दिया। अब जो चाहे शुक्र गुज़ार बने और जो चाहे कुफ़्र करे। अलबत्ता यह जान ले कि काफ़िरों के लिए बेड़ी, तौक़, और भड़कती हुई आग है और नेक लोगों के लिए तरह तरह की नेअमते हैं। (01 से 04)

(ii) अल्लाह के नेक बंदों की विशेषताएं

- ◆ नज़रों (अल्लाह से मानी हुई मिन्नत) को पूरी करते हैं,
- ◆ आखिरत के दिन से डरते हैं,
- ◆ मिस्कीन, यतीम और कैदियों को हंसी खुशी खाना खिलाते हैं,
- ◆ हर काम का मक़सूद सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह की रज़ा होती है क्योंकि वह अपनी नेकियों के बदले किसी शुक्रिया और बदले के तलबगार नहीं होते। (7 से 10)

(iii) जन्नतियों को दी जाने वाली नेअमते

काफूर और सोंठ के शर्बत, चमक (freshness) और खुशी, बागात , ऊंची मसनदे, गाऊ तकिया, न गर्मी की तकलीफ़ और न धूप की फ़िक्र, जन्नत की छाया, फलदार दरख्तों का

झुकना, चांदी के बर्तन और शीशे के खूबसूरत गिलास, सलसबील का चश्मा, बिखरे मोती की तरह हमेशा एक ही उम्र के रहने वाले खिदमतगार, बारीक रेशम के हरे लिबास, अतलस व दीबा के लिबास, चांदी के कंगन, स्वागत आदि। (05 से 22)

(iv) नबी को सब्र की तलक्कीन

- ◆ ऐ नबी! सब्र करें,
- ◆ काफ़िरों की न सुनें,
- ◆ सुबह शाम अपने रब का ज़िक्र करें,
- ◆ तहज्जुद व तस्बीह का एहतेमाम करें। (24 से 26)

(11) सूरह (077) अल मुरसिलात मकम्मल

(i) जब क़यामत आएगी

लगातार चलने वाली और तूफ़ानी हवा जो बादलों को उठा कर फिर जुदा करके बारिश और इंसान के डर का कारण बनती हैं उनकी क़सम खा कर यक्कीन दिलाया गया कि क़यामत तो आकर रहेगी और उसकी निशानी यह होगी कि सितारे प्रकाश विहीन हो जायेंगे, आसमान फट जायेगा, पहाड़ चूर चूर कर दिये जायेंगे, पैग़म्बर निर्धारित समय पर एकत्र किये जायेंगे। (01 से 15)

(ii) तबाही है आज झुठलाने वालों के लिए

इस आयत को पूरी सूरह में दस बार दुहराया गया है। पिछले जुमलों में कही गई बात पर ज़ोर देने के लिए ऐसा किया गया है।

- 1, क़यामत के ज़िक्र के बाद,
- 2, पिछली क़ौमों की हिलाकत,
- 3, इंसान की पैदाइश,

- 4, दुनिया मे अता की गई नेअमतें,
- 5, लोग क़यामत की तरफ़ बढ़ते जा रहे हैं,
- 6, क़यामत के दिन लोगों की हालत,
- 7, आज कोई मक्कारी करनी है तो कर लें,
- 8, परहेज़गार साये और चश्मों में होंगे, उनकी ख़्वाहिश के मुताबिक़ मेवे होंगे,
- 9, खाओ पियो और कुछ दिन ऐश कर लो तुम मुजरिम हो,
- 10, जब रुकूअ करने के लिए कहा जाएगा तो काफ़िर रुकूअ नहीं कर सकेंगे। (16 से 50)

(iii) क़यामत का इंकार करने वालों का अंजाम

तीन शाख़ों वाला साया जो न तो ठंडक पहुंचाएगा और न आग की लिपट से बचा सकेगा, वह तो महलों इतनी ऊंची चिंगारी फेंकेगा, जहन्नमी पीले ऊंटों की तरह होंगे, न यह बोलेंगे और न कोई बहाना (excuses) पेश कर सकेंगे। (35 से 38)

पारा (30) अम्मा

इस पारे में सैंतीस हिस्से है-

- (1) सूरह (078) अन नबा
- (2) सूरह (079) अन नाज़िआत
- (3) सूरह (080) अबस
- (4) सूरह (081) अत तकवीर
- (5) सूरह (082) अल इनफ़ेतार
- (6) सूरह (083) अल मुतफ़ेफ़ीन
- (7) सूरह (084) अल इनशेक्काक़
- (8) सूरह (085) अल बुरुज
- (9) सूरह (086) अत तारिक़
- (10) सूरह (087) अल आला
- (11) सूरह (088) अल गाशिया
- (12) सूरह (089) अल फ़ज्र
- (13) सूरह (090) अल बलद
- (14) सूरह (091) अश शम्स
- (15) सूरह (092) अल लैल
- (16) सूरह (093) अज़ जुहा
- (17) सूरह (094) अल इंशेराह
- (18) सूरह (095) अत तीन

- (19) सूरह (096) अल अलक़
- (20) सूरह (097) अल क़द्र
- (21) सूरह (098) अल बय्येना
- (22) सूरह (099) अज़ ज़िलज़ाल
- (23) सूरह (100) अल आदियात
- (24) सूरह (101) अल क़ारेआ
- (25) सूरह (102) अत तकासुर
- (26) सूरह (103) अल अस्र
- (27) सूरह (104) अल हुमज़ा
- (28) सूरह (105) अल फ़ील
- (29) सूरह (106) अल कुरैश
- (30) सूरह (107) अल माऊन
- (31) सूरह (108) अल कौसर
- (32) सूरह (109) अल काफ़िरून
- (33) सूरह (110) अन नसर
- (34) सूरह (111) अल लहब
- (35) सूरह (112) अल इख़लास
- (36) सूरह (113) अल फ़लक़
- (37) सूरह (114) अन नास

(1) सूरह (078) अन नबा

(i) क़यामत

क़यामत से सम्बंधित काफ़िरों के शक का खंडन किया गया और बताया गया है कि क़यामत का आना यक़ीनी है, क़यामत का नक्श़ा खींचा गया है। सरकशों के लिए अज़ाब है जिसमें इज़ाफ़ा होता रहेगा। नेक लोगों के लिए पुरस्कार और सम्मान है। उस दिन फ़रिश्ते मैदान ह हशर में सफ़ बांधे खड़े होंगे। बेग़ैर इजाज़त कोई बोल नहीं सकेगा और कुफ़्रार अपना अंजाम देख कर अफ़सोस करते हुए कहेंगे "काश कि मैं मिट्टी होता" तो मेरा हिसाब किताब न होता। (01 से 05, और 37 से 40)

(ii) अल्लाह के एहसानात

ज़मीन को फ़र्श, पहाड़ों को खूंटियों की तरह गाड़ना, लोगों को जोड़े जोड़े, नींद को सुकून, रात को लिबास, दिन को रोज़ी की तलाश, ऊपर सात मज़बूत आसमान, एक रौशन और चमकता सूरज, बादलों से मूसलाधार बारिश, बारिश के ज़रिए ग़ल्ला, सब्ज़ी और घने बाग़ उगाना, वगैरह (06 से 16)

(iii) बुरे लोगों का अंजाम

जहन्नम घात लगाए हुए है, वही जहन्नम जहां पीने के लिए न तो ठंडा पानी होगा और न कोई स्वाद, उसमें मुद्तों पड़े रहेंगे, उबला हुआ पानी और ज़ख्मों की गंदगी उनके पीने लिए होगी। (21 से 25)

(iv) नेक लोगों को दी जाने वाली नेअमतें

- ◆ अंगूर और भिन्न भिन्न बाग़,
- ◆ नवयुवतियां समान आयु वाली
- ◆ भरे हुए जाम
- ◆ निराधार (बकवास) और असत्य बात न सुनेंगे। (31 से 35)

(2) सूरह (079) अन नाज़िआत

(i) क़यामत

कुफ़्रारे मक्का क़यामत को असंभव (impossible) समझते थे। इसलिये मुख्तलिफ़ चीज़ों की क़सम खा कर यह यक़ीन दिलाया गया है कि क़यामत भी ज़रूर आ कर रहेगी और दूसरी ज़िंदगी भी होगी। यह अल्लाह तआला के लिए सिरे से कुछ मुश्किल काम ही नहीं है जिसके लिए बड़ी तैयारी की ज़रूरत हो, केवल एक झटका ही दुनिया के सिस्टम को छिन्न भिन्न कर देने के लिए पर्याप्त होगा। (01 से 14 और 34 से 46)

(ii) झुठलाने वालों का अंजाम

क़यामत के दिन कुफ़्रार के दिल धड़क रहे होंगे, दहशत, ज़िल्लत और नदामत उनपर छा रही होगी, नज़रें झुकी हुई होंगी। फिरऔन का उदाहरण देकर यह बताया गया है कि वह भी क़यामत का मुनकिर था। उसका अंजाम याद रखो और जिस दिन यह क़यामत को देखेंगे तो उनको ऐसा मालूम होगा कि सिर्फ़ दिन का आखिरी हिस्सा या एक पहर दुनिया में रहे। (15 से 26)

(iii) संसार की बनावट और मृत्यु पश्चात जीवन

इंसान की तख़लीक़ ज़्यादा मुश्किल है या आसमान की तख़लीक़, उसकी छत ऊंची उठाई, फिर बैलेंस बनाया, उसकी रात अंधेरी बनाई और दिन को चमकाया, ज़मीन को बिछाया, पहाड़ गाड़ दिए और इंसान और तमाम मख़लूक़ के लिए दाना, चारा, और पानी पैदा किया। (27 से 33)

(iv) ज़मीन का आकार (Shape)

विज्ञान कहता है कि ज़मीन चिपटी नहीं बल्कि गोल है कुरआन में यह सूचना पहले से ही मौजूद है

وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذَلِكَ دَحَاهَا

दुहया دحية शुतुरमुर्ग़ के अंडे को कहते हैं यानी अल्लाह ने ज़मीन को ऐसे फैलाया है कि वह न तो चिपटी है और न पूरी तरह गोल है बल्कि उसका आकार शुतुरमुर्ग़ के अंडे की तरह गोल है।

(30)

(3) सूरह (080) अबस

(i) अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम का वाकिआ

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक दिन कुरैश के सरदारों को दावत देने में मसरूफ़ थे कि एक अंधे सहाबी अब्दुल्लाह बिन मकतूम रज़ियल्लाहु अन्हु आ गए और उन्होंने आप की तवज्जुह अपनी तरफ़ फेरनी चाही जिसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नापसंद फ़रमाया, इसी मौक़ा पर सूरह अबस नाज़िल हुई जिसमें उन अंधे सहाबी की दिलजूर्ई की गई और नबी से तवज्जुह देने के लिए कहा गया। (01 से 09)

(ii) कुरआन एक नसीहत है

कुरआन नसीहत है, जिस का जी चाहे कुबूल करे और जो चाहे इंकार करे। (11, 12, 17)

(iii) जीवन के विभिन्न चरण

नुत्फ़ा से जन्म, जीने की राह आसान की, तकदीर, मौत, क़ब्र, फिर जब चाहेगा रब दोबारा उठा खड़ा करेगा। हक़ तो यह है कि हक़ अदा न हुआ। बारिश बरसाई, ज़मीन को फाड़ा, गल्ले, अंगूर, तरकारी, ज़ैतून, खुजूर, घने बाग़, अनेक प्रकार के फल और चारा उगाए। (19 से 32)

(iv) कोई किसी के काम नहीं आएगा

भाई भाई से, बेटा मां बाप से, शौहर बीवी से और माता पिता अपनी औलाद से भागेगें, सब को तो बस अपनी ही पड़ी होगी कि किसी तरह बच जाएं। ईमान वालों के चेहरे उस दिन रौशन और मुस्कुराते हुए होंगे जबकि कुफ़्र करने वालों के चेहरे काले पड़ रहे होंगे। (33 से 42)

(4) सूरह (081) अत तकवीर

(i) क़यामत कब आएगी?

जब सूरज लपेट दिया जाएगा, सितारों से रौशनी खत्म हो जाएगी, पहाड़ चलाए जाएंगे, दस माह की गाभिन ऊंटनियाँ अपने हाल पर छोड़ दी जाएंगी, जंगली जानवर समेट कर इकट्ठे कर दिए जाएंगे, और समुद्र भड़का दिए जाएंगे। (1 से 6)

(ii) आखिरत

जब जान जिस्म से जोड़ दी जाएगी, जिंदा दफ़न की हुई लड़कियों से पूछा जाएगा कि तुझे किस गुनाह में मारा गया, कर्मपत्र खोले जाएंगे, आसमान का पर्दा हटा दिया जाएगा, जहन्नम भड़काई जाएगी, जन्नत को करीब लाया जाएगा और प्रत्येक व्यक्ति जान लेगा कि वह क्या कुछ लाया है। (7 से 14)

(iii) रिसालत की गवाही

चार क़समें खा कर कुरआन और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि के रसूल होने की गवाही दी गई है कि कुरआन लोगों के लिए नसीहत है, यह अल्लाह का कलाम है शैतान मरदूद का नहीं और आप अल्लाह के रसूल हैं पैगाम लाने वाले (जिब्रील) को आप ने अपनी आंखों से देखा है। (15 से 29)

(5) सूरह (082) अल इनफ़ेतार

(i) क़यामत में कायेनात की हालत

आसमान फट जाएगा, सितारे बिखर जाएंगे, समुंदर फाड़ दिए जाएंगे। (1 से 3)

(ii) आखिरत के दिन

क़ब्रें खोल दी जाएंगी, हर इंसान को मालूम हो जायेगा कि उसने आगे क्या भेजा था और पीछे क्या छोड़ा है। उस दिन फ़ैसला अल्लाह के हाथ में होगा और बुरे लोगों से पूछा जाएगा कि तुम्हें किस चीज़ ने धोके में डाले रखा। उस दिन नेक लोग नेअमत वाली जन्नत में होंगे और नाफ़रमान लोगो का ठिकाना जहन्नम होगा। (3 से 5, 19)

(iii) रब कौन है?

जिसने पैदा किया, सिर से पांव तक दुरुस्त किया, अंगों को संतुलित किया, जिस सूरत में चाहा उसको जोड़ दिया। (6 से 8)

(iv) किरामन कातेबीन

हर इंसान के साथ दो प्रिय फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं जो उसके हर अमल को महफूज़ कर लेते हैं। (13 से 16)

(6) सूरह (083) अल मुतफ़्फ़ेफ़ीन

(i) तबाही व बर्बादी है

जो लोगों से तो पूरा पूरा लेते हैं लेकिन जब खुद किसी को वज़न करके या नाप कर देते हैं तो डंडी मार देते हैं, वह हक़ीक़त में इंसानों के हुकूक़ ग़सब करते हैं। (1 से 4)

तबाही व बर्बादी उनके लिए भी है जो आख़िरत के दिन को झुठलाते हैं, हद से गुज़रे हुए और बद अमल लोग हैं, जब आयात सुनाई जाती हैं तो पिछलों की कहानी कह कर रद्द कर देते हैं। (10 से 16)

(ii) इल्लीईन और सिज्जीईन

वह किताब जिसमें नेक लोगों के कारगुज़ारियां लिखी हुई हैं इल्लीईन कहलाती है और वह किताब जिसमें बुरे लोगों के कारगुज़ारियां लिखी हुई हैं सिज्जीईन कहलाती है। (7 से 9 और 18 से 20)

(iii) नेक लोगों का सम्मान

जन्नत में गाऊ तकिये लगाए नज़ारे कर रहे होंगे, उनके चेहरों से खुशी ज़ाहिर हो रही होगी, उन्हें मुश्क की मुहर लगा हुआ सील बंद शर्बत पिलाया जाएगा जिसमें तसनीम मिली हुई होगी (तसनीम मुक़र्रब लोगों के लिए एक ख़ास चश्मा है) दुनिया में जो उनका मज़ाक़ उड़ाते और फ़ब्ती कसते थे उनपर वह नेक लोग हंस रहे होंगे। (22 से 36)

(7) सूरह (084) अल इनशेक्काक़

(i) क़यामत की हौलनाकी

आसमान फट जाएगा, ज़मीन फैलाई जायेगी वह अपना बोझ निकाल कर बाहर फेंक देगी, यह सब रब के आदेश से होगा। (1 से 5)

(ii) नेक और बुरे लोगों का अंजाम

जिनके दाहिने हाथ में आमाल नामा दिया जाएगा उनका हिसाब आसान होगा और वह अपने घर वालों में बहुत खुश होंगे। जिनके पीठ के पीछे से आमाल नामा दिया जाएगा वह मौत को पुकारेंगे, दुनिया में उन्होंने बड़े मज़े किये थे अब जहन्नम में जाएंगे। (7 से 15)

(iii) अल्लाह के यहां सब महफूज़ है

इंसान अपने पालनहार की ओर खिंचता चला जा रहा है, एक हालत से दूसरी हालत में तब्दीली होती है फिर भी यह ईमान नहीं लाते और जब कुरआन की तिलावत हो तो सज्दा नहीं करते हालांकि इंसान के तमाम काम महफूज़ (record) किये जा रहे हैं। (06, 16 से 24)

(8) सूरह (085) अल बुरुज

(i) असहाबुल उखदूद (खाई वाले)

नजरान में एक लड़का एक जादुगर के पास जादू सीखने जाया करता था। एक दिन उसकी मुलाक़ात एक राहिब से हो गई धीरे धीरे वह उसका शिष्य बन गया और जादू सीखना छोड़ दिया। राहिब के साथ रहने और अल्लाह से लगाव रखने की वजह से वह साहिबे करामत हो गया। राजा के वज़ीर की आंख उसकी दुआ से अच्छी हो गई, राजा को पता चला कि यह लोग अल्लाह पर ईमान रखते हैं तो उसने राहिब को फिर वज़ीर को आरे से दो टुकड़े करा दिए। फिर उस लड़के को भी मार डालने के मुख्तलिफ़ हथकंडे अपनाए लेकिन लड़का हर बार महफूज़ रहा। आखिर लड़के ने खुद राजा से कहा, "अगर तमाम लोगों को एक मैदान में जमा करके मुझे एक लकड़ी पर सूली दे, मेरे तरकश से एक तीर लेकर कमान के अंदर रख, फिर यह कहकर तीर मार कि अल्लाह के नाम से मारता हूँ जो इस लड़के का मालिक है, तो मुझे क़त्ल कर लोगे" राजा ने ऐसा ही किया। वह तीर लड़के कनपटी पर लगा और

उसने अपना हाथ तीर लगाने की जगह पर रखा और शहीद हो गया। यह हाल देखकर लोग मुसलमान हो गए और कहा कि हमें तो उस लड़के के मालिक पर पूरा विश्वास है। अब राजा ने उन्हें अपने धर्म से फिरने को कहा। सभी ने इंकार कर दिया तो उन्हें खंदकों वाली दहकती आग में डाल दिया गया।

(सहीह मुस्लिम, हदीस 5996. किताबुज्जुहद वर रक्काएक)

जिन लोगों ने दहकती हुई खाई में ईमान वालों को डाल कर मारा वास्तव में वह खुद बर्बाद हो गए क्योंकि अल्लाह की पकड़ बहुत सख्त है उससे कोई बच नहीं सकता। (4 से 8, 12)

(ii) कुछ अहम बातें

- ◆ ईमान लाने और झुठलाने वालों पर अल्लाह नज़र रखे हुए है। (7)
- ◆ जिन्होंने मोमिन मर्दों या औरतों को आजमाया और बग़ैर तौबा किये मर गए तो उनके लिए भड़कता हुआ अज़ाब है। (10)
- ◆ कुरआन लौहे महफूज़ में है उसे कोई बदल नहीं सकता। (20 से 22)

(9) सूरह (086) अत तारिक़

(i) हर जान की हिफ़ाज़त की जाती है

अल्लाह ने आसमान और रात को चमकने वाले सितारे (तारिक़) की क़सम खा कर बताया है कि इस धरती पर कोई ऐसा इंसान नहीं है जिसपर कोई न कोई पहरदार मुकर्रर न हो। अब अगर इंसान कोई चाल चलता है तो चले दरअसल उसको दुनिया में ढील दी जा रही है। (1 से 4, 15 से 17)

(ii) इंसान को अपनी तख़लीक़ पर ग़ौर करने की दावत

इंसान उछलते हुए पानी से पैदा किया गया है जो सीने और रीढ़ की हड्डियों के दरमियान से निकलता है तो यह बात भी बिल्कुल तय है और यह कोई मज़ाक़ नहीं है कि उसे अल्लाह दोबारा लौटाने पर भी क़ादिर है। (5 से 14)

(10) सूरह (087) अल आला

(i) रब की तस्बीह करें

जिसने पैदा किया और उसे आकर्षक बनाया, तक्रदीर बनाई, रास्ता दिखाया, पेड़ पौदे उगाए, फिर उनको कूड़ा करकट बना दिया, जो खुले छुपे सबको जनता है। (1 से 10)

(ii) बदबख्त लोग

जो कुरआन की नसीहत को कुबूल नहीं करते, दुनिया की ज़िंदगी को ही सब कुछ समझते हैं। उनका ठिकाना आग है जिसमें न तो उन्हें मौत आएगी और न ज़िंदा रहने के काबिल ही रहेंगे। (9 से 13)

(iii) कामयाबी के तीन उसूल

- ◆ तज़किया,
- ◆ अल्लाह का ज़िक्र,
- ◆ नमाज़, पहले आसमानी सहीफ़ों में भी यही है जो इब्राहीम और मूसा पर नाज़िल हुए। (14 से 19)

(11) सूरह (088) अल गाशिया

(i) क़यामत के दिन दो गिरोह

गाशिया (ढांप लेने वाली) क़यामत का एक नाम है। उसकी सारी हौलनकियां मख़लूक को ढांप लेंगी उस दिन कुफ़्रार के चेहरे झुलसे हुए होंगे और खौलते हुए पानी और सूखी घास से उनका स्वागत होगा। जबकि मोमिनों के चेहरे तर व ताज़ा होंगे, उनके लिए चश्मे, ऊंची मसनदें गाऊ तकिये, सागर और उमदह फर्श होंगे। (1 से 16)

(ii) इंसान को गौर व फ़िक्र की दावत

क्या इंसान नहीं देखता की ऊंट को, कैसे उसकी तखलीक़ की गई है, आसमान की तरफ़ कैसे बुलंद है, पहाड़ की तरफ़ कैसे नसब किया गया है, और ज़मीन को कैसे फैलाई गई है। (17 से 20)

(iii) नबी दारोगा नहीं होते

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से फ़रमाया गया कि आप दारोगा बना कर नहीं भेजे गए हैं, आप का काम सिर्फ़ नसीहत करना है और हिसाब लेना हमारी ज़िम्मेदारी है। (21 से 26)

(12) सूरह (089) अल फ़ज़्र

(i) सरकशी का अंजाम तबाही है

फ़ज़्र के वक़्त, सम और विषम (even and odd) और दस रातों की क़सम खा कर बताया गया है कि आद, समूद और फिरऔन अपनी सरकशी के कारण तबाह व बर्बाद हुए। (1 से 13)

(ii) इंसान के फ़सादी होने का कारण

नाशुक़्री, यतीमों के साथ जुल्म व ज़्यादती, मिस्कीनो को न खुद खिलाना न दूसरों को तरगीब देना, वरासत का माल हड़प कर जाना, माल की मुहब्बत में अंधा होना। (15 से 20)

(iii) बे वक़्त पछतावा

आख़िरत के दिन इंसान अफ़सोस करेगा "काश मैंने अपनी ज़िंदगी में कुछ कर लिया होता। लेकिन अब कोई फ़ायदा नहीं होगा। दूसरी तरफ़ जो अल्लाह के तमाम आदेश को दिल से मान कर पालन करता रहा वह जन्नत में होगा। (21 से 30)

(13) सूरह (090) अल बलद

(i) इंसान पूर्णतः आज़ाद नहीं है

इंसान के दिल में यह बात है कि वह जो कुछ करना चाहे कर ले, अपना माल जैसे चाहे रखे, अम्र की जगह का सुकून बर्बाद कर दे हालांकि मां के पेट से मौत तक क़दम क़दम पर उसे कितनी तकलीफ़ से गुज़रना पड़ता है फिर अल्लाह ने दो आंखें, एक ज़बान, और दो होंठ दिए और दो रास्ते भी उसके सामने रख दिया। अब उसके बाद भी जो आयात का इंकार करें वही भड़कती हुई आग में होंगे। (1 से 10, 19, 20)

(ii) असहाबुल मैमना (दुशवार घाटी)

गुलाम आज़ाद करना, क़रीबी, यतीमों और मिट्टी में पड़े हुए मिस्कीनो को खाना खिलाना, ईमान, आपस में हक़ की वसीयत और मुश्किलात में सब्र की वसीयत। (11 से 18)

(14) सूरह (091) अश शम्स

(i) इंसान को तक्रवा इस्तिथार करना चाहिए

सूरज, चांद, धूप, दिन, रात, आसमान, ज़मीन और इंसानी नफ़्स की क़सम खा कर फ़रमाया गया है कि इंसान अपने रब से डरे, तक्रवा इस्तिथार करे और अपना तज़किया करे तो वह कामयाब होगा (1 से 9)

(ii) सरकशी का अंजाम तबाही है

जिसने अपने ज़मीर की आवाज़ को दबा कर सरकशी की वह नाकाम हुआ। क्रौमे समुद के एक व्यक्ति ने अपनी सरकशी की वजह से अल्लाह की ऊंटनी की कूचें काट दी और पूरी क्रौम मौन रहने के कारण अज़ाब का शिकार हो गई। (10 से 15)

(15) सूरह (092) अल लैल

(i) इंसान की कोशिशें मुख्तलिफ़ हैं

जो लोगों की मदद करे, तक्रवा इख्तियार करे और भलाई की तस्दीक़ करे, उसके लिए सीधे रास्ते पर चलना आसान हो जाएगा और अल्लाह की रज़ा की तलब हो तो अल्लाह ज़रूर राज़ी होगा। (1 से 7 और 17 से 21)

(ii) जहन्नम का ईंधन कौन बनेंगे

जो कंजूसी करें, लापरवाही करें, हक़ को झुठलाएं, आखिरत का इंकार करें तो ऐसे लोगों के लिए सीधे रास्ते पर चलना मुश्किल हो जाएगा। रब की नाराज़गी की वजह से ऐसे लोग जहन्नम का ईंधन बनेंगे। (8 से 16)

(16) सूरह (093) अज़ जुहा

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर अल्लाह का खास एहसान और नसीहत

कुछ समय के लिए वही (ﷺ) का सिलसिला बंद हो गया था जिस से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सख्त परेशान हो गए थे और बार बार यह अंदेशा लग रहा था कि कहीं मुझ से कोई ऐसा कुसूर तो नहीं हो गया जिसकी वजह से मेरा रब मुझ से नाराज़ हो गया है, इसपर आप को इत्मीनान दिलाया गया है कि " तुम्हारे रब ने तुमको नहीं छोड़ा, और न वह तुमसे नाराज़ हुआ। आखिरत निश्चित रूप से तुम्हारे लिए इस संसार से बेहतर है। जल्द ही अल्लाह तुझको इतना देगा की तू सन्तुष्ट हो जायेगा। क्या अल्लाह ने तुमको अनाथ नहीं पाया, फिर तुमको ठिकाना दिया, तुमको रास्ते की तलाश में भटकता पाया और हिदायत दी, तुमको निर्धन पाया और मालदार कर दिया। इसलिए अनाथ पर कठोरता न दिखाओ, मांगने वालों को न झिड़को और अपने रब की नेअमतों का बखान करो। (1 से 11)

(17) सूरह (094) अल इंशेराह

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पर अल्लाह का खास एहसान और नसीहत

इस सूरह का पिछली सूरह अज़ जुहा से गहरा संबंध है। यहां भी अल्लाह ने एहसानात याद दिला कर नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को तसल्ली दी है: क्या हमने तुम्हारा सीना तुम्हारे लिए नहीं खोल दिया और वह बोझ उतार दिया जिसने तुम्हारी पीठ झुका दी थी। और तुम्हारे ज़िक्र को बुलन्द कर दिया। तो जान लो कि कठिनाई के साथ आसानी है। निस्संदेह कठिनाई के साथ आसानी है। इसलिए दावत के काम से फ़ारिग होने के बाद पूरी तवज्जुह के साथ अपने रब की इबादत करें। (1 से 8)

(18) सूरह (095) अत तीन

(i) इंसान दुनिया की सर्वश्रेष्ठ मखलूक है

तीन, ज़ैतून, तूरे सीना और शहरे मक्का की क़सम खा कर इंसान को यह बताया गया है कि इंसान को बेहतरीन साख़्त (structure) पर पैदा किया गया है। (1 से 4)

(ii) इंसान दुनिया की बदतर मखलूक भी है

मनुष्य की वह सुंदरता उसी समय तक रहती है जब तक अपने ईमान और नेक अमल के ज़रिए सौन्दर्यकरण किए रखता है। वरना वह अल्लाह का इंकार, आखिरत का इंकार और अपने बुरे आमल की बदौलत अपनी मानवता खो कर बदतरीन मखलूक बन जाता है। (5 से 8)

(19) सूरह (096) अल अलक़

(i) पहली वही

शुरू की पांच आयात "इकरा से मालम यालम" तक पहली वही है जो "गारे हिरा" में नाज़िल हुई कि "पढ़ अपने रब के नाम से जिसने इंसान को लोथड़े से पैदा किया, क़लम के ज़रिए सिखाया और वह सिखाया जो वह न जानता था। (1 से 5)

(ii) अबु जहल के बारे में

जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह के निर्देशानुसार इबादत करते थे, अबु जहल को बहुत नागवार गुज़रता था। एक दिन उसने कहा, इस क्षेत्र में मेरे हिमायती सबसे ज़्यादा हैं और इरादा किया अगर मुहम्मद ने ख़ाना काबा में अपने तरीके पर इबादत की तो उसकी गर्दन पर पांव रखकर उसका मुंह ज़मीन पर रगड़ दूंगा चुनांचे मुक़ाम ए इब्राहीम में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नमाज़ पढ़ते देखकर आगे बढ़ा लेकिन अचानक पीछे हट गया। लोगों ने पूछा तो बताया कि मेरे और उनके दरमियान आग की एक ख़न्दक़ और एक हौलनाक चीज़ थी और कुछ पर थे अगर वह क़रीब फटकता तो रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ब क़ौल फ़रिश्ते उसके चीथड़े उड़ा देते। (6 से 19, जामे तिर्मिज़ी 3348, 3349)

(20) सूरह (097) अल क़द्र

(i) लैलतुल क़द्र

कुरआन रमज़ान की एक रात में नाज़िल किया गया उस रात को अल्लाह ने लैलतुल क़द्र का नाम दिया है। (1, 2)

(ii) लैलतुल क़द्र की फ़ज़ीलत

लैलतुल क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर है। फ़रिश्ते और रुह (जिब्रील) इसमें रब की अनुमति से हर तरह का आदेश लेकर उतरते हैं। क़द्र की रात यक़ीनन सलामती है भोर होने तक। (3 से 5)

(21) सूरह (098) अल बय्येना

(i) किताब के साथ रसूल क्यों ज़रूरी है?

- ◆ अहले किताब हों या मुशरेकीन रसूल के बगैर कुफ़्र से निकलना संभव नहीं था,
- ◆ अल्लाह की किताब को असली और सही सूरत में पेश करे,
- ◆ खुद अपनी रिसालत पर दलील हो। (1 से 4)

(ii) बदतरीन मखलूक

जो अल्लाह की इबादत मुख़्लिस होकर न करे, नमाज़ क़ायम न करे, ज़कात न दे, स्पष्ट दलील के बावजूद सच्चाई कुबूल न करे। ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम है। (5, 6)

(iii) बेहतरीन मखलूक

जो अल्लाह की इबादत इखलास के साथ करें, नमाज़ क़ायम करें, ज़कात अदा करें और सच्चाई को कुबूल करें। ऐसे लोग अल्लाह से राज़ी हुए और अल्लाह उनसे राज़ी हुआ। (5, 7, 8)

(22) सूरह (099) अज़ ज़िलज़ाल

जब ज़मीन अपने रब के हुक्म से पूरी शिद्दत के साथ हिला मारी जायेगी। वह अपना बोझ निकाल कर बाहर डाल देगी। इंसान हैरत से बोल पड़ेगा कि आखिर इसे हो क्या गया है? उस दिन ज़मीन गुज़रे हुए हालात बयान करेगी। लोग अलग अलग निकलेंगे ताकि उनके आमाल उन्हें दिखाये जाएं। जिस ने कण बराबर भलाई की होगी वह उसको देख लेगा। और जिस ने कण मात्र बुराई की होगी वह भी उसको देख लेगा। (1 से 8)

(23) सूरह (100) अल आदियात

(i) घोड़ा अपने मालिक का कितना वफ़ादार होता है

घोड़ा फुंकारे मारते हुए दौड़ पड़ता है, टापों से चिंगारियां झाड़ता है, सुबह सवेरे छापा मारता है, धूल और गुबार उड़ाता है फिर दुश्मनों के लश्कर में जा घुसता है। (1 से 5)

(ii) लेकिन इंसान अपने रब का कितना नाफ़रमान है

इंसान माल व दौलत की मुहब्बत में अंधा होकर अपने रब का नाशुक्रा बन जाता है। क्या उसे नहीं पता कि एक दिन क़ब्रें उधेड़ कर जो कुछ है सब बाहर निकाल लिया जाएगा, उसे अपनी नाफ़र्मानीयों की सख़्त सज़ा मिलकर रहेगी। (6 से 11)

(24) सूरह (101) अल क़ारेआ

(i) आख़िरत

जिस दिन लोग बिखरे हुए पतिंगों, और पहाड़ धुनके हुए रंगीन ऊन की तरह हो जाएंगे। उस दिन यह महान घटना (incident) घटित होगी। (1 से 5)

(ii) उस दिन आमा़ल तौले जाएंगे

जिन की नेकियों का पलड़ा भारी होगा वह मन पसन्द ऐश में और जिनका पलड़ा हल्का होगा वह हाविया (भड़कती हुई आग) में होंगे। (6 से 11)

(25) सूरह (102) अत तकासुर

माल व दौलत की ज़्यादती इंसान को ऐसा अंधा कर देती है कि क़ब्र में जाने का समय कब आ जाता है एहसास ही नहीं होता। दूसरी बात यह है कि कुछ लोग आख़िरत का इंकार करते हैं जबकि कुछ ऐसे लोग भी हैं जो आख़िरत के क़ायल तो हैं लेकिन जब कोई काम करते हैं तो आख़िरत का तसव्वुर उनके दिल से ग़ायब हो जाता है और यह एहसास नहीं

रहता कि जो नेअमतें उन्हें दी गई हैं उनके बारे में भी सवाल होगा। उस दिन आखिरत और जहन्नम दोनों को वह अपने सामने देख लेंगे (1 से 8)

(26) सूरह (103) अल अस्र

जिसके अंदर यह चार विशेषताएं पाई जाएं केवल वही नुक़सान में नहीं रहेंगे।

- ◆ ईमान
- ◆ नेक अमल
- ◆ एक दूसरे को हक़ की वसीयत और दावत
- ◆ और दावत के सिलसिले में पेश आने वाली मुसीबतों पर एक दूसरे को सब्र की नसीहत।

(1 से 3)

(27) सूरह (104) अल हुमज़ा

तबाही व बर्बादी है

बुरा भला कहने, ग़ीबत करने, माल व दौलत को समेट समेट कर और गिन गिन कर रखने और दुनिया को हमेशा का जीवन समझने वालों के लिए तबाही है और अल्लाह की जलाई हुई आग (हुतमा) भी जो दिलों तक पहुंचेगी और उन्हें उसमें बंद कर दिया जाएगा। (1 से 9)

(28) सूरह (105) अल फ़ील

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जन्म से 60 दिन पहले हाथी वालों का वाक्फ़िआ पेश आया। अबरहा यमन का राजा था, वह चाहता था कि अल्लाह के घर ख़ाना ए काबा को ढाकर यमन में एक कलीसा तामीर करे और उसे इबादत का केंद्र (Centre) बनाए। चुनांचे

वह साठ हज़ार फ़ौज और 13 हाथियों के साथ ख़ाना ए काबा को ढाने के इरादे से चल पड़ा और मक्का से तीन कोस (9 किलोमीटर) दूर "मग़मस" की वादी में ठहरा, वहीं पर अल्लाह ने परिंदों के झुंड भेज कर ख़ाना ए काबा की हिफ़ाज़त की और अबरहा के पूरे लश्कर को खाये हुए भूसे की तरह बना दिया। उस वाकिआ को इब्रत के तौर पर बयान किया गया है। (1 से 5 हवाला अर रहीकुल मख़्तूम सफ़ीयुर्रहमान मुबारकपुरी पेज 77, 78)

(29) सूरह (106) अल कुरैश

हाशिम, अब्दे शम्स, मुत्तलिब और नौफ़ल ने आस पास के क़बीलों और राजाओं से व्यापारिक संबंध बनाए उस संबंध को "ईलाफ़" और उन्हें "असहाबुल ईलाफ़" कहते हैं।

कुरैश साल में दो व्यापारिक सफ़र करते थे, गर्मी में सीरिया व फ़लिस्तीन और सर्दी में यमन व इथोपिया की ओर जाते थे, उन्हें ख़ाना ए काबा के खादिम होने की वजह से बड़ा सम्मान हासिल था। इसीलिए उन्हें इस घर के रब यानी अल्लाह की इबादत करने को कहा गया जिसने उनको इज़्ज़त बख़्शी, भूख में खाना खिलाया और ख़ौफ़ में शांति अता की। (1 से 4)

(30) सूरह (107) अल माऊन

जो बदले के दिन को झुठलाते हैं वही यतीमों को धक्के मारते हैं, और मिस्कीन को खाना नहीं खिलाते,

उन नमाज़ियों के लिए बर्बादी है जो नमाज़ में डंडी मारते हैं, दिखावा करते हैं, और लोगों को आम (general) इस्तेमाल की चीज़ मांगने पर नहीं देते। (1 से 7)

(31) सूरह (108) अल कौसर

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बेटे क़ासिम का पहले इंतेक़ाल हो चुका था फिर दूसरे बेटे अब्दुल्लाह का भी इंतेक़ाल हो गया तो आस बिन वायेल, उक़बा बिन मुईत, अबु लहब,

और अबु जहल ने खुशी मनाते हुए यह प्रचार शुरू कर दिया कि मुहम्मद की तो जड़ ही कट गई यानी जब उनकी नस्ल ही नहीं चलेगी तो कोई उनका नामलेवा नहीं होगा। उसपर यह सूरह नाज़िल हुई। (तफ़सीर इब्ने कसीर)

यह कुरआन की सबसे छोटी सूरह है।

"हमने आप को कौसर अता किया। आप अपने रब की रज़ा के लिए नमाज़ पढ़िए और कुरबानी कीजिए। आप के दुश्मन ही जड़ कटे (अबतर) हैं" (1 से 3)

नोट:- कौसर एक नहर है जो आखिरत में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अता की जाएगी, जिसके दोनों किनारों पर खोलदार मोतियों के डेरे लगे हुए हैं और पीने के बर्तन सितारों की तरह अनगिनत हैं। (सही बुखारी 4965)

(32) सूरह (109) अल काफ़िरून

नबी (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) को आदेश दिया गया कि आप यह ऐलान कर दें कि मैं अल्लाह के इलावा किसी और की इबादत कदापि नहीं कर सकता जैसा कि तुम करते हो, ईमान और कुफ़्र दोनों अलग अलग हैं। तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन है और मेरे लिए मेरा दीन। (1 से 6)

(33) सूरह (110) अन नसर

यह आखिरी मुकम्मल नाज़िल होने वाली सूरह है। इस सूरह के नाज़िल होने के फ़ौरन बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वह ऐतिहासिक ख़ुत्बा दिया जिसे "ख़ुत्बा ए हज्जतुल वदाअ" कहते हैं। (सही मुस्लिम 7546)

सूरह में अल्लाह की मदद और फ़तह मक्का की खुशख़बरी सुनाई गई है, जब अल्लाह की मदद से फ़तह हासिल होगी तो अधिकतर लोग इस्लाम में दाख़िल होंगे। लेकिन इस मौक़ा पर मोमिनों को जश्न मनाने के बजाय अल्लाह की हम्द व तस्बीह और इस्तेग़फ़ार करने का आदेश दिया गया है। (1 से 3)

(34) सूरह (111) अल लहब

इस सूरह में अबु लहब की निंदा की गई है। अबु लहब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का हक़ीक़ी चचा था लेकिन आप का पक्का दुश्मन था और उसकी बीवी भी दुश्मनी में पेश पेश रहती थी। वह बहुत धनी था लेकिन उसकी दौलत उसको कोई लाभ न पहुंचा सकी, वह दोनों जहन्नम में जलेंगे और उसकी बीवी उम्मे जमील का हाल तो यह होगा कि वह खुद उस आग में ईंधन डाल रही होगी जिसमें वह जल रही होगी और उसके गले में बटी हुई रस्सी होगी। (1 से 5)

(35) सूरह (112) अल इख़लास

कुफ़्रारे मक्का ने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से अल्लाह के नसब के बारे में सवाल पूछा था चुनांचे यह सूरह नाज़िल हुई। (सुनन तिर्मिज़ी 3364)

पूरे कुरआन में तीन बुनियादी बात पर ज़ोर दिया गया है, तौहीद, रिसालत, आखिरत, चूंकि यह सूरह मुकम्मल तौहीद पर निर्धारित है इसलिए इसे एक तिहाई (1/3) कुरआन कहा गया है। (सही बुखारी 5013)

अब अगर कोई खुदा होने का दावा करता है तो इस सूरह में अल्लाह की पांच विशेषतायें बयान की गई हैं, उसी कसौटी (Litmus test) पर परख कर पता लगाया जाय कि वह अपने दावे में सच्चा है या झूठा। वह कसौटी यह है,

- 1, अल्लाह एक है,
- 2, अल्लाह बेनियाज़ है,
- 3, उसकी कोई औलाद नहीं,
- 4, वह भी किसी की औलाद नहीं,
- 5, उसका कोई साझी नहीं है।

(1 से 4)

(36) सूरह (113) अल फ़लक़

जिन परिवारों के कुछ लोगों ने इस्लाम कुबूल कर लिया था उनके दिलों में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के खिलाफ़ हर वक्त नफ़रत की भट्टियां सुलगती रहती थीं, घर घर में आप को कोसा जा रहा था, छुप छुप कर क़त्ल के मशविरे हो रहे थे, जादू टोने किये जा रहे थे कि आप को मौत आ जाए, सख़्त बीमार पड़ जाए या पागल हो जाएं, इंसानी और जिन्नाती शैतान चारों तरफ़ फैल गए थे कि अवाम के दिलों में आप और आप के दीन के खिलाफ़ कोई न कोई वसवसा डाल दें जिस से बदगुमान होकर लोग आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से दूर भागने लगे, बहुत से लोगों के दिलों में हसद की आग भी जल रही थी क्योंकि वह अपने या अपने क़बीले के इलावा किसी और का चिराग़ जलते न देख सकते थे। जैसे कि अबु जहल खुद कहता था "हमारा और बनी अब्दे मुनाफ़ का आपस के मुक़ाबला था, उन्होंने खाना खिलाया हमने भी खिलाया, उन्होंने ने सवारियां दीं हमने भी सवारियां दीं, उन्होंने दान (donation) दिए तो हमने भी दान दिया। जब इज़्ज़त और सम्मान में दोनों बराबर हो गए तो अब वह कहते हैं कि हम में एक नबी है जिस पर आसमान से वही उतरती है भला इस मैदान के हम कैसे उनका मुक़ाबला कर सकते हैं? अल्लाह की क़सम हम हरगिज़ उसकी बात नहीं मानेंगे और उसकी तस्दीक़ नहीं करेंगे" (सीरत इब्ने हिशाम जिल्द 1) ऐसे माहौल में रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) से फ़रमाया गया कि

"उन लोगों से कह दो कि मैं पनाह मांगता हूं सुबह के रब की मख़लूक़ के शर से, रात के अंधेरे से, गिरहों में फूंकने वाले जादूगरों और जदुगार्नियों के शर से और हासिदों के शर से। (1 से 5)

(37) सूरह (114) अन नास

सूरह अल फ़लक़ और अन नास में बहुत गहरा संबंध है बल्कि यूं कहा जाए कि सूरह अन नास सूरह अल फ़लक़ की पूरक है। इसीलिए दोनों सूरतों को मिलाकर एक नाम मुअव्वेज़तैन रखा गया है।

"कह दो मैं पनाह मांगता हूं लोगों के पालनहार की, संसार के स्वामी की, इंसानों के माबूद की उस वसवसा डालने वाले शैतान इंसान और शैतान जिन्नात के शर से जो पलट पलट कर आता है और लोगों के दिलों में वसवसे डालता है"। (1 से 6)

"जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लेटते तो अपने हाथों पर फूंकते, मुअव्वेज़ात (सूरह 112 अल इख़लास, सूरह 113, अल फ़लक़, सूरह 114 अन नास) पढ़ते और दोनों हाथ अपने बदन पर फेरते"। (सही बुख़ारी 6319)